मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी

मजलिस तहक़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम
नदवा, लखनऊ (उ०प्र०)

मन्सब पैग़म्बरी का

लेखक

मौलाना सैय्यद अबुल ह्सन अ़ली नदवी

अनुवादक

मो0 ह्सन अंसारी

प्रकाशक—

मजलिस तहक़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम

नदवा, लखनऊ (उ०प्र०)

द्वितीय संस्करण
2012 ई0 – 1433 हि0

किताब का नाम : मन्सब पैग़म्बरी

लेखक का नाम : मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी

पृष्ठ : 156

मुद्रक : आज़ाद प्रिन्टिंग प्रेस, लखनऊ
9415100085 -

संख्या : 1000

मूल्य : 100/

सीरीज़ नं0 : 291

प्रकाशक

मजलिस तहक़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम
पोस्ट बॉक्स नं0 119, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2741539, फैक्स : 0522–2740806
ई–मेल : airpnadwa@gmail.com

विषय सूची

तीसरा व्याख्यान

85-105

चौथा व्याख्यान 106-124

पांचवा व्याख्यान 125-145

छठा व्याख्यान 148-167

दो शब्द

समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने, लोगों को अच्छाई का हुक्म देने तथा बुराई से रोकने के लिए इस धरती पर हर क़ौम और हर युग में नबी (ईश–दूत) आते रहे हैं । इनकी एक श्रृंखला है, जिसकी अन्तिम किन्तु सबसे महत्वपूर्ण कड़ी हज़रत मोहम्मद(सल्ल के अभ्युदय की है । नबी की शिक्षा–दीक्षा से लाभ उठाने तथा अपनी बिगड़ी बनाने के लिए आवश्यक है कि नबी की मान मर्यादा, गरिमा व प्रतिष्ठा, श्रद्धा व सम्मान को दिल में बिठाया जाये उनके स्टेटस को जाना और पहचाना जाये कि श्रद्धा और विनय सीख के प्रारम्भिक चरण हैं। बिना इनके ज्ञान की प्राप्ति सम्भव नहीं।

वर्तमान पुस्तक श्रद्धेय मौलाना अबुल हसन अ़ली नदवी (अ़ली मियाँ) की उर्दू पुस्तक "मँसबे नबूवत और उसके आली मुक़ाम हामलीन" का हिन्दी अनुवाद है। वस्तुतः यह छः व्याख्यानों की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व्याख्यानमाला है।

आशा है समाज में व्याप्त अनेक बुराइयों को दूर करने में इस पुस्तक के अध्ययन से, विशेषकर उदार दृष्टिकोण के बुद्धिजीवी वर्ग को, सहायता मिलेगी, और उनका मार्ग प्रशस्त होगा।

अगस्त १०, १९९० ई०
मुहर्रम १८, १४११ हि०
(जुमा)

मोहम्मद हसन अंसारी
"हसन मंजिल"
सरकौंडा, सुल्तानपुर

आमुख

दिसम्बर १९६२ ई० की कोई तारीख़ थी कि मुझे मदीना यूनिवर्सिटी के वाइस चाँसलर श्रद्धेय अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ का तार मिला जिसमें उन्होंने मुझे अतिथि वक्ता (विज़िटिंग प्रोफेसर) की हैसियत से आमन्त्रित किया था कि वहाँ दुनिया के विभिन्न इस्लामी देशों से चुनकर आये हुए छात्रों के समक्ष अपने व्याख्यान दूँ। मैंने इस आमन्त्रण को सधन्यवाद स्वीकार कर लिया। मैंने दुनिया के चुने हुए मुस्लिम नवजवानों को सम्बोधित करने के इस अवसर को ग़नीमत बल्कि वरदान स्वरूप जाना मेरा लक्ष्य था कि इस पवित्र नगरी में नई पीढ़ी के साफ़ मन मस्तिष्क में अच्छे मूल्यों का बीजारोपण किया जाये। मन तथा आचरण को ढालने का यह एक तुच्छ प्रयास था जो एहसान से दबा हुआ एक गुनहगार अपने सबसे बड़े हितैषी और प्रियतम की नगरी में करने जा रहा था। और यह वह तुच्छ भेंट थी जो वह इस अवसर पर प्रस्तुत कर सकता था।

मैंने अपनी व्याख्यानमाला के लिए "पैग़म्बरी और पैग़म्बर – क़ुरआन की रौशनी में" का विषय चुना। यह विषय मेरे हृदय में बहुत दिनों से करवटें ले रहा था। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यह उन महत्वपूर्ण विषयों में से है जिनकी नई पीढ़ी को विशेष रूप से आवश्यकता है। मेरा विश्वास है कि मुसलमानों के विद्वत वर्ग का वर्तमान में अपने रास्ते से भटक जाना, वास्तविक इस्लाम से दूरी, आसमानी धर्मों के विरूद्ध भौतिक मान्यताओं की दासता, बनावटी तरीक़ों तथा पश्चिमी विचारधारा से लगाव और उसके प्रभाव से इस्लाम की एक नई व्याख्या तथा धर्म की एक नई विवेचना को संसार के सामने प्रस्तुत करना, पैग़म्बरी की मर्यादा

मनोवृत्ति से अनभिज्ञता का प्रतिफल है। यह वर्ग नहीं जानता कि जीवन, सभ्यता व संस्कृति तथा मानव–बुद्धि पर पैग़म्बरी के क्या एहसानात व उपकार हैं? उसने संसार को क्या दिया ? और इस से नई पीढ़ी तथा नई सभ्यता का सम्बन्ध टूट जाने से मानव जीवन किस ग़लत रास्ते पर पड़ गया है। और वह तबाही के किस गर्त की ओर अग्रसर है।

यह शुभ आमन्त्रण एक पवित्र धरती से आया था, अतः उसने दबी हुई भावनाओं को उभार दिया। मन में जो एक भारीपन और ठहराव आ गया था, काफ़ूर हो गया। विषय की महत्ता, स्थान का मधुरपन व्यस्तता के तमाम हीलों बहानों पर छाकर रह गया। यदि यह मधुर सम्बन्ध न होता तो यह कार्य किसी दूसरे समय के लिए टल जाता जैसा कि अनेक आवश्यक कार्य समय की माँग और ज़रूरतों के कारण स्थगित होते रहते हैं। मुझे विश्वास था कि इस महत्वपूर्ण विषय पर कुछ कहने की बेहतरीन जगह मदीना ही हो सकती है जहाँ मानवता के मार्ग दर्शन के लिए 'वही' व 'नबूवत' (ईशवाणी तथा पैग़म्बरी) के द्वारा आकाश का धरती से अन्तिम बार सम्पर्क स्थापित हुआ।

मैंने इन व्याख्यानों का अधिकाँश भाग जनवरी १६६३ ई० (रमज़ान १३८२ हि०) में अपने छोटे से गांव दायरा शाह अलम उल्लाह, रायबरेली (जो आम तौर पर तकिया कलाँ के नाम से मशहूर है) में लिखा जहाँ कोई पुस्तकालय मौजूद नहीं। अतएव मैंने इन व्याख्यानों की तैयारी में कुरआन मजीद को बुनियाद बनाया। कुरआन मजीद से मुसलमानों का कोई घर और उनकी कोई बस्ती खाली नहीं। और रमज़ान का महीना जिसमें यह काम शुरू किया गया, कुरआन मजीद के अवतरण और

उसकी बहार का महीना है। कभी कभी कुछ उद्धहरणों से काम लेने के लिए अथवा किसी विचार क़ी विवेचना तथा किसी कथन की पुष्टि हेतु नदवतुल उल्मा, लखनऊ के विशाल पुस्तकालय से किताबें मँगा लिया करता था। इस प्रकार छः व्याख्यान तैयार हो गये जो अलग अलग शीर्षक के अन्तर्गत लिखे गये।

मैं फरवरी १९६३ ई० में मदीना पहुँचा और मार्च १९६३ ई० में व्याख्यानमाला का शुभारम्भ हुआ। व्याख्यान सप्ताह में दो बार मदीना यूनीवर्सिटी के लेक्चर हाल में इशा की नमाज़ के बाद होते थे प्रारम्भ में शेख़ अतिया मुहम्मद सालिम भूमिका के रूप में कुछ कहते और व्याख्यान की समाप्ति पर शेख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ व्याख्यान पर अपनी टिप्पणी प्रस्तुत करते। श्रोताओं में छात्रों के अतिरिक्त मदीना मुनव्वरा के प्रतिष्ठित लोग, विद्वान तथा यूनीवर्सिटी के शिक्षकों की ख़ासी संख्या होती थी।

अब यही व्याख्यानमाला एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो रही है, जिसे हम कोई नया शोध अथवा ज्ञान की कोई नई खोज नहीं कहते, किन्तु इसमें चिन्तन और चेतना के जागरण हेतु विषय सामग्री अवश्य है ऐसा मेरा विश्वास है। इस प्रकार इसे एक विस्तृत एवं विशाल शोधकार्य की प्रारम्भिक रूपरेखा कहना अधिक सही होगा।

व्याख्यानों की भाषा साहित्यिक और हल्की फुल्की रखी गई है। गूढ़ तथा अलंकरित भाषा शैली से बचने का प्रयास किया गया है।

इस पुस्तक के १९७८ तक अ़रबी में (जिस में मूल पुस्तक लिखी है)

छः संस्करण क्रमशः लखनऊ, क़ाहिरा, जद्दा और दमिश्क से प्रकाशित हो चुके थे। पुस्तक का हिन्दी अनुवाद जो उर्दू अनुवाद पर आधारित है, पहली बार प्रस्तुत किया जा रहा है। लेखक अपने प्रिय मित्र श्री मुहम्मद ह़सन अंसारी के प्रति आभारी है कि उन्होंने इस व्याख्यानमाला को हिन्दी में अनुदित किया।

आशा है हिन्दी भाषा भाषी भाई बहनों के लिए यह पुस्तक चिन्तन व चेतना के नये कपाट खोलेगी और वे इसे पढ़कर अपने चिन्तन तथा अ़पने प्रयासों का जायज़ा लेंगे।

अगस्त १५, १६६० ई०
मुह़र्रम २३, १४११ हि०

अबुल ह़सन अ़ली नदवी
दायराशाह अ़लम उल्लाह
रायबरेली
(उ०प्र०)

कुछ विशेष शब्दों के अर्थ

हिज्रत	(स्वदेश त्याग, या धर्म पर पूर्ण रूप से अमल न **कर पाने** की बिना पर अपने मात्र भूमि को त्यागना
वह़ी	ईशवाणी
रिसालत	दूतत्व
इमाम	नमाज़ियों का अगुवा
शिर्क	अनेकेश्वर वाद अर्थात अल्लाह के साथ किसी और को भी शरीक बनाना।
मोमिन	ईमान वाला अर्थात सच्चा मुसलमान
सादिक़	सच्चा
ग़ैब	परोक्ष
बशर	इन्सान
वसीला	माध्यम
माबूद	उपास्य
सहाबा	सहचर्य
तौह़ीद	एकेश्वरवाद
ग़ालिब	विजई

प्रथम व्याख्यान

पैग़म्बरी– मानवता को इसकी ज़रूरत तथा मानव सभ्यता पर इसका एहसान :

स्थान की उपयुक्तता :–

सज्जनों ! इस जगह जहाँ इस समय हम आप एकत्र हैं, सबसे उपयुक्त बातचीत, मानवता को पैग़म्बरी (नबूवत) की ज़रूरत और सभ्यता पर उसके एहसान से सम्बन्धित हो सकती है, जिसमें उन उत्कृष्ट नबियों का उल्लेख हो जिन्हें अल्लाह ने पैग़म्बरी दी, और अल्लाह की ओर से उनकी स्वीकारोक्ति उनकी मर्यादा, प्राणी जगत पर उनकी महान अनुकम्पा और जीवन पर उनके गहरे प्रभाव का वर्णन हो, और फिर नबियों के सरदार तथा नबियों की श्रृंखला में अन्तिम नबी का सुमिरन किया गया हो जिनको अल्लाह ने आख़िरी रसूल बनाया और जिन्हें हमेशा हमेशा की सरदारी, एक चिरस्थायी शरीअ़त और मह़फ़ूज़ किताब प्रदान की। और सारी मानवता की नजात (मोक्ष) उन पर ईमान तथा उनके अनुसरण पर निर्भर की गई और जिनकी हिज्रत और आखिरी कयामगाह के लिये इस पाकीज़ा व पवित्र नगरी को चुना गया। जहाँ "वही" और "रिसालत" (पैग़म्बरी) के माध्यम से आकाश का धरती के साथ अन्तिम बार सम्पर्क हुआ।

अतएव जिस व्यक्ति को यहाँ कुछ बात करने की फुरसत मिले और जिसे यह सुअवसर प्राप्त हो उसे अपनी इस महान ज़िम्मेंदारी का एहसास होना चाहिये कि वह किस स्थल से सम्बोधन कर रहा है। क्या उसके लिए यह उचित है कि वह इस "पावन भूमि" के तक़ाज़ों की अनदेखी कर अपने अभिभाषण के लिए किसी और विषय का चयन करे?

यूनीवर्सिटी की पहली ज़िम्मेदारी :–

इस्लामी दुनिया में किसी भी शिक्षण संस्था, भले ही वह मदीना ही में क्यों न स्थित हो, यह पहली ज़िम्मेंदारी है कि सबसे पहले वह पैग़म्बरी के वरदान को समझने का प्रयास करे। क्योंकि मानव के लिए पैग़म्बरी अल्लाह का सबसे बड़ा वरदान है। वह इस वरदान की क़दर करे और इसकी सक्रिय समर्थक बने। और वह जीवन के इस संग्राम स्थल में जहाँ अज्ञानता, नास्तिकता और क्रान्ति का बोलबाला है, इस्लाम के ख़ेमे में आ जाये और इस्लाम की सरबुलन्दी के लिए अपने को समर्पित कर दे। किसी भी इस्लामी शिक्षण संस्था से पढ़कर निकलने वालों की अमिट छाप और उनका सबसे बहुमूल्य उद्देश्य मानव जीवन के हर पक्ष पर पैग़म्बरी तथा उसकी कार्य प्रणाली को प्राथमिकता देना होना चाहिये। यह बुनियादी ज़िम्मेंदारी सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्योंकि यदि कोई न समाप्त होने वाली लड़ाई है तो वह पैग़म्बरी और अज्ञानता की लड़ाई है, वह अज्ञानता जिसका प्रतिनिधित्व पच्छिम कर रहा है और वह इस्लाम जिसका अलमबरदार अकेले मुसलमान रह गया है। इसके अतिरिक्त सारी लड़ाइयाँ मात्र खिलवाड़ हैं। विचारधारा की वास्तविक तथा चिरस्थायी

लड़ाई अज्ञानता और पैग़म्बरी (नबूवत) के बीच ही है।

आज प्रत्येक संस्था, यहाँ तक कि संयुक्त राष्ट्रसंघ और यूनेस्को को भी इस विषय की ज़रूरत है। क्योंकि सुख और समृद्धि की तमाम सहूलतों के बावजूद, मानवता का दुर्भाग्य यह है कि उसके शीर्षस्थ नबूवत और नबियों की शिक्षा के बाग़ी हैं। वह इस ऐश्वरीय वरदान की नाक़द्री कर रहे हैं। और वह प्राचीन काल की जाहिल क़ौमों के इस कथन को दोहराते दिखाई पड़ते हैं जिसे क़ुरआन मजीद ने इस तरह बयान किया है :–

अनुवाद : "क्या हमारे ही जैसे इन्सान हमको हिदायत देने चले हैं"?

मानो वह कह रहे हैं : एक उम्मी (अनपढ़) हमें इल्म सिखायेगा? एक कंगाल हमें खुशहाल करेगा ? एक मरूस्थलवासी हमें सभ्य बनायेगा?

दुर्भाग्य से या विषम परिस्थितियों के कारण अगर हम यह बातें यूरोप, अमरीका और एशिया की बड़ी बड़ी यूनीवर्सिटियों में नहीं कर सकते तो यह किसी तरह जायज़ नहीं कि हम मदीना की इस्लामी यूनीवर्सिटी में इसे वार्ता का विषय न बनायें। और क्यों न हो। यह मदीना ही तो है जिसके लिए क़ुरआन में कहा गया है :–

अनुवादः "और (देखो) अच्छी ज़मीन अपने रब के हुक्म से

अच्छी पैदावार ही निकालती है।"

(सूरः आराफ़–५८)

यहाँ जो बात कही गयी है उसकी गूँज पूरी दुनिया में सुनी गई है।

नबूवत और नबी कुरआन की रौशनी में :–

भाषाविदों की आत्मा से क्षमा चाहते हुए मैं कहूँगा कि भाषा विज्ञान और धार्मिक विश्वासों पर लिखी गई किताबों की नज़र नबूवत और नबियों के बारे में कोताह और सीमित थी। उसने नबूवत को ऐसा समझा जो धार्मिक विश्वासों के सीमित दायरे से बाहर गतिशील जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं रखती। इसलिए हमें नबूवत (पैग़म्बरी) और नबियों (ईशदूत) को कुरआन की रौशनी में और कुरआन की नज़र से देखना चाहिए। और इसके माध्यम से पैग़म्बरी की क्षमताओं उसकी निहित शक्तियों, उसके विशाल क्षितिज, उसकी गहराइयों और जीवन में उसकी उतरी हुई जड़ों, मन मस्तिष्क पर उसकी छाप, आचार–व्यवहार पर उसका प्रभाव, समाज व सभ्यता के निर्माण में उसका नेतृत्व और अज्ञानता के समानान्तर एक विशिष्ट सभ्यता की बुनियाद रखने में उसके बुनियादी रोल व भूमिका पर मनन करना चाहिये।

हम जब इस मक़सद से कुरआन की तिलावत (पाठ) करते हैं, तो हमारे सामने साहित्य और कौशल तथा व्यक्तित्व की ऐसी तस्वीरें और ऐसे नमूने आते हैं जिनसे अधिक मनमोहक रचना शायद इस सृष्टि में कोई नहीं।

नबियों के उल्लेख में क़ुरआन की शैली सजीव, शुभसूचक और अनुराग से भरपूर नज़र आती है। मानो वह एक प्रियतम की दास्तान है जिसे जितना भी विस्तार दें कम मालूम होती है। मेरा विश्वास है कि जिसे भी सुरूचि, सौन्दर्य तथा अनुराग की भावना का कोई अंश प्राप्त है वह इस उल्लेख से आनन्द उठायेगा और इस शैली का मज़ा महसूस करेगा। सुनिये हज़रत इब्राहीम(अलै०)का उल्लेख किस प्रेम व अनुराग के साथ किया जा रहा है :–

अनुवादः "बेशक इब्राहीम (लोगों के) इमाम और अल्लाह के आज्ञाकारी थे और शिर्क करने वालों में से न थे। उसकी नेमतों के शुक्रगुज़ार थे। खुदा ने उनको चुना था और उनको सीधी राह पर चलाया था। और हमने उनको दुनिया में भी ख़ूबी दी थी और वह आख़िरत में भी नेक लोगों में ही होंगे फिर हमने तुम्हारी तरफ "वही" भेजी कि इब्राहीम के दीन की पैरवी करो जो एक (अल्लाह) के होकर रहे थे और शिर्क करने वालों मे से न थे।"

(सूरःनहल १२०–१२३)

इसी प्रकार अल्लाह का यह कलाम सुनियेः–

"और यह हमारी दलील थी, जो हमने इब्राहीम को उनकी क़ौम के मुक़ाबले में दी थी। हम जिस को चाहते हैं दर्जे बुलन्द कर देते हैं। बेशक तुम्हारा पालनहार हिकमत वाला और ख़बरदार है। और हमने उनको इस्हाक़ और याक़ूब दिये और सबको हिदायत दी। और पहले नूह को भी हिदायत दी थी। और उनकी औलाद में से दाऊद और सुलेमान

और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को भी। और हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। और ज़करिया और यहिया और ईसा और इलयास को भी। यह सब नेक थे। और इस्माईल और अलयसा और यूनुस और लूत को भी। और इन सबको जहाँ के लोगों पर फज़ीलत दी थी। और बाज़ बाज़ को इनके बाप, दादा, औलाद और भाईयों में से भी। और इनको चुना भी था। और सीधा रास्ता भी दिखाया था, यह ख़ुदा की हिदायत है इस पर अपने बन्दों (भक्तों) में से जिसे चाहे चलाये और अगर वह लोग शिर्क करते तो जो कुछ उन्होंने किया यह सब अकारत हो जाता यह वह लोग थे जिनको हमने किताब, और शरीअत और पैग़म्बरी दी थी। अगर यह कुफ़्फ़ार इन बातों से इनकार करें तो हम इन पर ईमान लाने के लिए ऐसे लोग मुक़र्रर कर दिये हैं कि वह इनसे कभी इनकार करने वाले नहीं।"

(सूरः अनआम –८३–८६)

चुने हुए लोग और मानवता के परिपूर्ण नमूनेः–

नबियों का उल्लेख करते समय कुरआन में जो जो विशेषण आये हैं और उनके लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया गया है वह सब ज़ाहिर करते है कि नबी तमाम मख़लूक़ का निचोड़ और चुने हुए लोग तथा मानवता के परिपूर्ण नमूने होते हैं और ईश्वर के सन्देशवाहक के रूप में सबसे अधिक क्षमता वाले तथा साहसी लोग होते हैं। सूरः अनआम की आयत सं. १२५ में अल्लाह का इरशाद है :–

अनुवादः "इसको ख़ुदा ही ख़ूब जानता है कि पैग़म्बरी का कौन सा

महल है और वह अपनी पैग़म्बरी किसे दे।"

इब्राहीम(अलै०) के बारे में सूरःअँबिया की आयत सं. ५१ में इरशाद होता है:–

अनुवादः "और हमने इब्राहीम को पहले ही से हिदायत दी थी। और हम उन के हाल से वाक़िफ़ थे।"

और इरशाद होता है :–

अनुवादः "और ख़ुदा ने इब्राहीम को अपना दोस्त बनाया था"

(सूरः निसा–१२५)

और इरशाद होता है :–

अनुवादः "और पीछे आने वालों में इब्राहीम का ज़िक्र बाक़ी रखा कि इब्राहीम पर सलाम हो। हम नेक बन्दों को ऐसे ही बदला दिया करते हैं। वह (इब्राहीम) हमारे मोमिन बन्दों में से थे।"

(सूरःसाफ़्फ़ाति–१०६–१११)

और हज़रत इब्राहीम के बारे में फ़रमाया गया :–

अनुवादः "बेशक इब्राहीम बड़े सहनशील, नरम–दिल और रुजू (अल्लाह का ध्यान) करने वाले थे।"

(सूरः हूद–७५)

और हज़रत इस्माईल के लिए इरशाद हुआ :–

अनुवादः "अपने रब (पालनहार) के नज़दीक पसन्दीदा और प्रिय थे।"

(सूरः मर्यम–५५)

हज़रत मूसा(अलै० के लिये फ़रमाया गया :–

अनुवादः "और मैंने तुमको अपने काम के लिए बनाया है।"

(सूरः ताहा–४१)

और कहा गया :–

अनुवादः "और मूसा मैंने तुम पर अपनी तरफ़ से मुहब्बत डाल दी (इसलिए कि तुम पर मेहरबानी की जाये) और इसलिए कि तुम मेरे सामने परवरिश पाओ।"

(सूरः ताहा–३६)

और इरशाद हुआ :–

अनुवादः "मैने तुमको अपने पैग़ाम और अपने कलाम से लोगों पर बड़ाई दी।"

(सूरः आराफ़ि–१४४)

हज़रत दाऊद(अलै०)के बारे में कहा गया :–

अनुवादः "और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो जो ताक़त रखने वाले थे। और बेशक वह रुजू करने वाले थे।"

(सूरः स्राद्–१७)

और उनके बेटे हज़रत सुलेमान के लिए इरशाद हुआ :–

अनुवादः "बहुत खूब बन्दे थे और रुजू करने वाले थे।"

(सूरः साद्–३०)

इसी प्रकार अय्यूब (अलै०) और नबियों की प्रतिष्ठित टोली का सद्‌गुणों के साथ उल्लेख करते हुए फ़रमाया गयाः–

अनुवादः "और हमारे बन्दों इब्राहीम व इस्हाक़ व याकूब को याद करो जो ताक़त और बसीरत (दृष्टि) वाले थे। हमने उनको एक खास सिफ़त–आख़िरत के घर की याद से मुमताज़ (विशिष्ट) किया था। और वह हमारे नज़दीक चुने हुए और नेक लोगों में से थे।"

(सूरःस्वाद ४५–४७)

मैने इस आनन्द दायक वार्ता को विस्तार इस लिये दे दिया कि आपके मन मस्तिष्क में, अल्लाह के नज़दीक नबियों की मर्यादा तथा इस सम्बन्ध में .कुरआन की प्रशंसा व गुणगान को प्रस्तुत कर के बिठा दूँ।

स्वाभाविक प्रश्नः– इस सांसारिक जीवन में, जहाँ ज्ञानार्जन तथा ज़रूरतों को पूरा करने का दारोमदार मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियों और बौद्धिक क्षमताओं पर है, पैग़म्बरी और पैग़म्बरों की क्या मर्यादा है ? और दूसरे विद्वानों से नबी किस आधार पर विशिष्ट होते हैं और क्यों सिर्फ़ उन्हीं को हक़ पहुँचता है कि ऐसी वास्तविकतायें बयान करें और ऐसी ख़बरें सुनाये जिन तक न द्रुतगामी अनुभूति पहुँच सकती न संवेदनशील बुद्धि। यद्यपि सब एक ही वातावरण में पले बढ़े हैं और एक ही धरती पर जीवन

व्यतीत करते हैं। क्या कारण है कि नबी ऐसी चीज़े देख लेते हैं जो उनके समय के दक्ष और असाधारण क्षमताओं वाले भी नहीं देख सकते। और उनके लिए अनदेखी चीज़े सुबह के उजाले की तरह रौशन हो जाती हैं और उनकी भविष्यवाणी पूरी उतरती है ?

यह एक स्वाभाविक प्रश्न है जो हर नबी के अभ्युदय पर लोगों के मन में उठा। पैग़म्बर मोहम्मद(सल्ल० को जब नबूवत हासिल हुई और सुधार व प्रचार की ज़िम्मेंदारी आपको सौंपी गई तो आपको भी इस प्रश्न का सामना करना ज़रूरी था। और आपने इस अवसर पर जो दृष्टिकोण अपनाया और जिस हकीमाना अन्दाज़ से इस समस्या को हल किया वह आपके अमिट मोज्ज़ात (चमत्कार) में से एक है।

अरब और विशेषकर मक्का की घाटी में बसने वाले वर्षो से गूढ़ व जटिल समस्याओं, भारी भरकम शब्दावलियों और शास्त्रार्थ से अलग थलग जीवन व्यतीत कर रहे थे, किन्तु बुद्धि की कुशाग्रता और सच्चाई की स्वीकारोक्ति में विशिष्ट थे। नबी अपनी नबूवत के पक्ष में बनावट औपचारिकता और सांकेतिक भाषा का रास्ता नहीं अपनाते बल्कि छोटी और मामूली चीज़ों से महत्वपूर्ण निष्कर्ष पैदा करते हैं।

अल्लाह के रसूल (ईशदूत) मोहम्मद सल्ल० के समय में न तो पत्रकारिता ने जन्म लिया था न वायरलेस ईजाद हुआ था और न ही लाउडस्पीकर का अविष्कार हुआ था। ऐसे समय में मक्का की घाटी में बसने वालों को एक स्थान पर निश्चित समय एकत्र करने का क्या साधन हो सकता था ? किस प्रकार उनके मन मस्तिष्क पर इतना

प्रभाव डाला जा सकता था कि वह अपनी दिलचस्पियों से हाथ खींच लेते और भागते हुए सबके सब आपकी तरफ चले आते ?

अल्लाह के रसूल मोहम्मद(सल्ल॰)अरब क़ौम ही के एक व्यक्ति थे। आप अरबों की आदतों तथा उनकी रीति–रिवाज से भली प्रकार परिचित थे। आप यह भी जानते थे कि इन रीतियों का उनके मन और सोसाइटी में कितना गहरा प्रभाव है। अरबों की आदत थी कि जब उनका कोई आदमी कोई ख़तरा महसूस करता, अचानक किसी दुश्मन के हमले का डर होता अथवा कोई शत्रु घात में लगा होता और नगरवासी उससे ग़ाफ़िल होते तो वह किसी पहाड़ी की चोटी या किसी टीला पर चढ़ जाता और ज़ोर से पुकारता "या सबाहा" (ख़तरा, ख़तरा) "या सबाहा" (दुश्मन, दुश्मन)। पूरी कौम यह आवाज़ सुनते ही घबरा जाती। हथियार संभालती और ख़तरे का मुक़ाबला करने दौड़ पड़ती। लेकिन वह कौन सा ख़तरा था जो उनको परेशान कर देता और उनके आराम को ह़राम कर देता ? वह सिर्फ एक था–दुश्मन–जिसकी सेना उनमें से कितनों को मौत के घाट उतार देती, उनको लूट लेती, उनके पशुओं को हंका ले जाती और उनको तहस नहस कर देती क़बीलों की रेगिस्तानी ज़िन्दगी में वह इसी एक खतरे से परिचित थे। और जब यह शब्द बोला जाता तो इसका वही एक अर्थ समझते थे।

यह ख़तरा और नुक़सान अपनी महत्ता के बावजूद नबियों की नज़र में हेय और तुच्छ है, जो इस ससार के बनाने वाले और इसको चलाने वाले की सत्ता और उसके अधिकारों से और अज्ञानता के ख़तरे की महत्ता से आगाह होते हैं। मक्का में उस ज़माने के "लोग बुत पूजते, मुर्दा

खाते, अश्लील कर्म करते, निर्दयी होते, पड़ोसियों को परेशान करते और ताक़त वाले कमज़ोरों को कुचल देते।"

अल्लाह के रसूलसल्ल०ने देखा कि दुश्मन कहीं बाहर नहीं वह उनके **मन मस्तिष्क**, उनके आचार व्यवहार में पल रहा है। वह बाहर के तमाम दुश्मनों से ज़्यादा ख़तरनाक है। ख़तरे का यह स्रोत जो उनके अन्तःकरण से निकला है बाहर के तमाम ख़तरों से अधिक भयावह है, उनकी काम–वासना हर दुश्मन से अधिक कठोर है। उनके जीने का ढंग ईश्वर के अभिषाप को भड़काने वाला था, वह ईश्वर जो अपने भक्तों के लिए न कुफ्र को पसन्द करता है और न भूतल पर फ़साद चाहता है।

'सफ़ा' की पहाड़ी पर :– अल्लाह के रसूल सल्ल एक दिन प्रातः 'सफ़ा' की पहाड़ी पर गये। 'सफ़ा' मक्का के निकट एक पहाड़ी थी। आपने उस पहाड़ी पर चढ़कर ज़ोर से पुकारा, "या सबाहा, या सबाहा"। इस घाटी के वासियों के दिलों में यह बात बैठी हुई थी कि अत्याधिक गम्भीर और ख़तरनाक अवसर ही पर यह शब्द ज़ोर से कहे जाते हैं। और आमतौर से इसमें ग़लत बयानी या मज़ाक़ से काम नहीं लियाजाता। मक्कावासियों ने यह चिरपरिचित आवाज़ सुनी जो उनके शहर के सबसे सच्चे आदमी के मुंह से निकल रही थी, जिसे वह "सादिक़" और "अमीन" के नाम से जानते थे। मक्कावासी इस पुकार का मतलब ख़ूब समझते थे। वह इसका खूब अनुभव रखते थे। वह आवाज़ सुनते ही उधर दौड़ पड़े और पहाड़ी के नीचे एकत्र हो गये। कुछ स्वयं आये कुछ ने अपने प्रतिनिधि भेजे।

जब लोग जमा हो गये तो अल्लाह के रसूल(सल्ल0)ने उन्हें सम्बोधन किया, "ऐ बनी अ़ब्दुल मुत्तलिब, ऐ बनी काब ! तुम्हारा क्या ख़्याल है अगर मैं तुमको ख़बर दूँ कि इस पहाड़ी के नीचे सवारों की एक सेना छिपी है और तुम पर बेख़बरी में हमला करना चाहती है, तो क्या तुम मेरी इस बात पर विश्वास करोगे ?

अल्लाह के रसूल(सल्ल0)ने जिन लोगों को सम्बोधित किया था और जिन से यह सवाल किया था वह "अनपढ़" और "अविकसित" थे, उन्होंने दर्शनशास्त्र और तर्कशास्त्र नहीं पढ़ा था, न बाल की खाल निकालने के आदी थे बल्कि व्यावहारिक लोग थे और सच्चाई को पसन्द करते थे। वह अच्छी सूझ बूझ और कामन सेन्स (सामान्य बुद्धि) रखते थे। उन्होंने परिस्थिति का जायज़ा लिया।

उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति जिसकी सच्चाई अमानतदारी और निष्ठा को बार बार परख चुके थे, एक पहाड़ी पर खड़ा है, वह सामने भी देख रहा है जिधर लोग खड़े हैं और पीछे की तरफ भी देख रहा है जहाँ नीचे खड़े लोगों की नज़र नहीं पहुँचती। लोग तुरन्त समझ गये कि जो व्यक्ति इस पोज़ीशन में है उसको हक़ हासिल है कि पहाड़ी के दूसरी तरफ छिपे हुये दुश्मन या ख़तरे की ख़बर दे और जो लोग पहाड़ की ओट में हैं उनको यह हक़ नहीं कि उसे झुठला दें।

अरब न्याय प्रिय थे। बहादुर और सच्चे थे। उन्होंने कह दिया, "हाँ, हम ऐसी ख़बर को झुठला नहीं सकते, हमें इस पर विश्वास करना होगा।"

पैग़म्बरी की हिकमत भरी मिसाल :–

नुबूवत की इस बेमिसाल हिक्मत के ज़रिये अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने लोगों के सामने पैग़म्बरी और पैग़म्बर की मर्यादा और उनकी विशिष्ट हैसियत को सुस्पष्ट कर दिया, जिसके कारण वह ऐसी दुनिया का अवलोकन करते हैं, जिसका अवलोकन उनके ज़माने के उन ही जैसे दूसरे इन्सान नहीं कर सकते। और वह ऐसी बातों की ख़बर देते हैं जिसे दूसरे सुधारक नहीं दे सकते। क्योंकि नबी नुबूवत के पहाड़ की चोटी पर खड़े होते हैं। इन्सान होने की हैसियत से और अनुभूति की पवित्रता तथा स्वभाव की सरलता के कारण वह महसूस दुनिया को इसी तरह देखते हैं, जैसे सब दूसरे इन्सान जो स्वस्थ इन्द्रियों व मस्तिष्क वाले होते हैं, किन्तु इससे एक क़दम आगे बढ़कर नबी ग़ैब की बातों का भी अवलोकन करते हैं। अल्लाह का इरशाद है:–

अनुवादः "कह दो कि मैं तुम्हारी तरह का एक बशर हूँ, अलबत्ता मेरी तरफ़ 'वही' आती है।"

(सूरःकहफ़ ११०)

किसी बुद्धिमान, किसी बड़े से बड़े विद्वान के लिए यह सम्भव ही नहीं कि नबी को झुठला दे और उनके अवलोकन का इन्कार कर दे, क्योंकि वह नबियों के साथ उनके इस अवलोकन में शामिल नहीं। जिन चीज़ों को नबी देखते हैं वह नहीं देखता जिस तरह पहाड़ी के नीचे खड़े हुए व्यक्ति के लिए किसी स्थिति में यह उचित नहीं कि वह पहाड़ी की चोटी पर खड़े हुए व्यक्ति को झुठला दे और पहाड़ी के औट की ख़बर

का इन्कार कर दे।

यही कारण है कि जब कोई तान्त्रिक उनसे विवाद करता है तो वह आश्चर्य व्यक्त करते हैं और पूरे बल व विश्वास के साथ कहते हैं:–

अनुवाद : "तुम मुझसे खुदा के बारे में क्या बहस करते हो। उसने तो मुझे सीधा रास्ता दिखाया है।"

(सूरः अनआम् ८१)

अ़रब के यह जाहिल इस प्रारम्भिक स्टेज में उन फिलास्फरों और हकीमों से अधिक समझदार साबित हुए जिन्होंने मात्र इसलिए नबियों की ख़बरों को झुठला दिया और सच्चाई का इन्कार कर दिया कि स्वयं उन्होंने उन बातों को देखा नहीं था, और उसको यह बातें मालूम नहीं थीं।

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है :–

अनुवादः "वास्तविकता यह है कि जिस चीज़ के इल्म पर यह क़ाबू नहीं पा सके उसको नादानी से झुठला दिया। और अभी इसकी हक़ीक़त उन पर खुली नहीं।"

(सूरः यूनुस ३९)

और जब यह स्वाभाविक स्टेज तय हो गया तो अल्लाह के रसूल स० ने पूरे संकल्प के साथ क़दम आगे बढ़ाया और दूसरे तथा अन्तिम चरण में पदार्पण किया। आपने फ़रमाया, "मैं तुमको एक आने वाले

सख़्त अज़ाब से डरा रहा हूँ।" आप ने उनको उस वास्तविक ख़तरे से डराया जो उनके दैनिक जीवन, मूर्ति पूजा के धार्मिक विश्वास, जाहिली रस्मों, जिनको वह दांतों से पकड़े हुए था, में रचा बसा था और जिसमें न ईमान था न इन्साफ़ और न अपने पालन हार का कोई डर।

अल्लाह का इरशाद है :–

अनुवाद : "जल और थल में लोगों के कर्म के कारण फसाद फैल गया है ताकि खुदा उनको उनके बाज़ कर्मों का मज़ा चखाये सम्भव है वह बाज़ आ जायें।"

(सूरः अलरूम ४१)

अनुवादः "और हम उनको कयामत के बड़े अज़ाब (अभिषाप) के अलावा दुनिया के अज़ाब का भी मज़ा चखायेंगे, शायद हमारी तरफ़ लौट आयें।"

(सूरः सज्दः २१)

अनुवादः "और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत ही सख़्त है।"
(सूरः राद ३२)

अनुवादः और आख़िरत का अज़ाब बहुत सख़्त और बहुत देर रहने वाला है।"

(सूरः ताहा १२७)

अनुवादः "और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत ही अपमानित करने

वाला है।"

(सूरः .फुस्सिलत १६)

विद्वानों ने दवाओं के गुण खोज निकाले हैं और प्रत्येक वस्तु की निहित शक्ति को मालूम कर के ज्ञान का बहुमूल्य ख़ज़ाना जमा करदिया है। लोगों ने इससे लाभ उठाया और खोजकर्ताओं की प्रशंसा की। अल्लाह ने नबियों को इसलिए भेजा कि वह अल्लाह (ईश्वर) के अस्तित्व उसके गुणों उसके आदेशों, सही और ग़लत, अच्छे और बुरे आचरण के नतीजों की जानकारी, आख़िरत में नेकी व बदी के अनुसार सवाब (पुण्य) व अज़ाब (अभिषाप) तथा जन्नत (स्वर्ग) व दोज़ख़ (नर्क) की जानकारी दें।

क़ुरआन मजीद में उल्लेख है :-

अनुवादः "वही ग़ैब की बात जानने वाला है और किसी पर अपने ग़ैब को ज़ाहिर नहीं करता, हां, जिस पैग़म्बर को पसन्द फ़रमाये।"

(सूरः जिन्न २६)

नबी नबूवत के पहाड़ पर खड़े होते हैं और इस दुनिया को भी देखते हैं और गैब (अदृश्य) की दुनिया को भी और मानवता पर निकट भविष्य में डाका डालने वालों की ख़बर देते हैं। छिपे हुए ख़तरों से आगाह व सचेत करते हैं। और ममता व प्रेम, दया और निष्ठा के साथ लोगों को डराते हैं। और जब कोई उनको झुठलाता है अथवा उन पर सन्देह करता है या उनके उच्च पद को चुनौती देता है तो वह नसीहत

और निष्ठा पूर्वक दुख भरे दिल से कहते हैं :–

अनुवादः "कह दो कि मैं तुम्हें सिर्फ़ एक बात की नसीहत करता हूँ कि तुम ख़ुदा के लिए दो दो और अकेले अकेले खड़े हो जाओ, फिर मनन करो, तुम्हारे साथी को जुनून नहीं, वह तुमको सख़्त अज़ाब के आने से पहले सिर्फ डराने वाले हैं।"

(सूरः सबा ४६)

ईशदूत मार्ग दर्शन के एकमात्र साधन होते हैं :–

कुरआन बार बार ज़ोर देता है कि ईश्वर के अस्तित्व तथा उसके वास्तविक गुणों की परख करने वाले सिर्फ ईशदूत ही हैं और अल्लाह व (ईश्वर) का सानिध्य नबियों के वसीले से ही प्राप्त हो सकता है। न अकेले बुद्धि मार्ग दर्शन कर सकती है न प्रखर सूझ बूझ काफ़ी हो सकती है। न स्वभाव की सरलता उसका साधन बन सकती है, न अनुभव का ख़ज़ाना ही मददगार साबित हो सकता है।

.कुरआन मजीद में है :– अनुवाद : ".ख़ुदा का शुक्र है जिसने हमको यहां का रास्ता दिखाया और अगर .ख़ुदा हम को रास्ता न दिखाता तो हम रास्ता न पा सकते"।

(सूरः आराफ़ ४३)

और इस इक़रार के साथ ही वह नबियों का उल्लेख करते हैं कि वही अल्लाह तक पहुँचाने का सही वसीला हैं :–

अनुवादः "बेशक हमारे परवरदिगार के रसूल हक़ बात लेकर आये थे"।

(सूरः आराफ़ि)

ज्ञानेन्द्रियों से परे वास्तविक्ताओं की खोज के सम्बन्ध में मानव की बौद्धिक व आध्याम्मिक शक्तियाँ कितनी बेबस और कमज़ोर हैं, इस के लिए उचित होगा कि हम ईश्वर के उन परमभक्तों के कुछ अनुभव सुनते चलें जो तन की दुनिया और मन की दुनिया, दोनों के भेद जानते थे।

शैख़ अहमद सरहिन्दी, शेख अह़मद सरहिन्दी सानी (मृत्यु १०३४ हि०) के नाम से मशहूर हैं, ने अपने शोधपूर्ण पत्रों में इस विषय को बार–बार दुहराया है कि मानव बुद्धि नबियों की सहायता के बिना सृष्टी की स्वीकारोक्ति तो कर सकती है किन्तु उसके अस्तित्व व गुणों की सही मारफ़त और रास्ता नहीं पा सकती। वह अपने एक पत्र में लिखते हैं:–

"साराँश यह है कि बुद्धि इस महानिधि के सिद्ध करने में असमर्थ और नबियों की हिदायत (मार्गदर्शन) के बिना इस अपार खज़ाने का रास्ता पाने से आजिज़ है।"

दर्शनशास्त्र तथा धर्मों का इतिहास भी इसका पूरा समर्थन करता है कि मात्र बुद्धि और तर्क भरोसा करने वालों ने खुदा की मारफ़त और उसके सही गुणों को सिद्ध करने में कैसी कैसी ठोकरें खाई हैं। और किन किन गुमराहियों (भटकाव) में फंसे हैं। मुजद्दिद साहब अपने पत्रों में सिद्ध करते हैं कि जिस प्रकार बुद्धि का मर्तबा ज्ञानेन्द्रियों से परे है

उसी प्रकार नबूवत का मर्तबा बुद्धि से परे है। और किसी चीज़ के बुद्धि के प्रतिकूल तथा बुद्धि के अनुकूल होने में बड़ा अन्तर है। ख़ुदा की पाकी (पवित्रता) का तरीक़ा मालूम करना नबूवत और नबियों की सूचना व शिक्षा पर निर्भर है। उन्होंने ख़ुदा की मारफ़त में यूनान के समझदारों (पंडितों) की नासमझी के ऐसे नमूने प्रस्तुत किये हैं, जिन पर अक़्ल हैरान रह जाती है।

मुजद्दिद साहब ने अपने पत्रांक २६६/१, जो ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह के लड़कों ख़्वाजा अ़ब्दुल्लाह और ख़्वाजा उबैदउल्लाह के नाम लिखे हैं, में बड़े विस्तार के साथ सिद्ध किया है कि पैग़म्बरों का अभ्युदय अल्लाह की ज़ात और उसके गुणों तथा आदेशों को समझने का एकमात्र साधन है।

.क़ुरआन मजीद में अल्लाह का इरशाद है :–

अनुवादः "(ऐ पैग़म्बर !) जैसी जैसी बातें (यह लोग अल्लाह की बाबत) बनाते हैं उनसे तेरा रब पाक है कि वह बड़ी इज्ज़त वाला (है) और पैग़म्बरों पर सलाम है। और सारी तारीफ़ अल्लाह को है जो सारे संसार का पालनहार है।"

(सूरः साफ़्फ़ाति १७६–१८२)

.क़ुरआन की जिन तीन आयतों का ऊपर अनुवाद प्रस्तुत किया गया, यह एक सुनहरी जंज़ीर की कड़ियाँ हैं जो एक दूसरे से जुड़ी हैं। अल्लाह ने जब अपनी ज़ात को मुश्रिकीन की बेहूदा (अनर्गल) बातों से

पाक बताया तो नबियों का भी उल्लेख किया जिन्होंने खुदा की पूरी पवित्रता और पाकी को उजागर किया, और अल्लाह के सही गुण बयान किये। अल्लाह ने उन पर सलाम भेजा और उनकी तारीफ़ की क्योंकि प्राणी जगत से सृष्टा के सही परिचय और उसके वास्तविक गुणों से अवगत कराने का सेहरा उन्हीं के सर है। और नबियों का अभ्युदय प्राणी जगत पर एहसान, मानव के लिए वरदान है इसलिए तीसरी आयत में फरमायाः—

अनुवादः "और सारी तारीफ़ अल्लाह को है जो सारे संसार का पालनहार है।" हज़रत मुजहिद अलिफ़ सानी इस वास्तविकता को बयान करते हुए अपने एक पत्र में लिखते हैः—

हजरत मुजद्दिद अल्फि सानी इस वास्तविकता को बयान करते हुये अपने एक पत्र में लिखते हैं:—

अनुवादः "नबी बेहतरीन (उत्कृष्ट) प्राणी होते हैं। और बेहतरीन दौलत उन के सुपुर्द की गई। औलिया की चरम सीमा नबियों का प्रारम्भिक बिन्दु है न कि प्रतिबिम्ब। नबूवत की पैरवी में कर्तव्यों का सानिध्य प्राप्त होता है। विलायत के कमालात (उत्कृष्ठता) नबूवत के कमालात के मुक़ाबले में कोई हैसियत नहीं रखते, वह सम्बन्ध भी नहीं जो बूंद को समुद्र से होता है।"

(पत्रांक ८७—८८)

एक और पत्र में लिखते हैं:—

"विलायत में सीना की तंगी की वजह से मख़लूक़ (प्राणी

जगत) की तरफ पूरी तवज्जुह (एकाग्रचित) नहीं हो सकती, और नबूवत में सीना की अति विशालता के कारण ईश्वर का ध्यान न प्राणिजगत के ध्यान की राह में बाधक होता है, और न प्राणिजगत का ध्यान ईश्वर के ध्यान में अवरोधक बनता है।"

एक और सिद्ध पुरूष शेख़ शरफुद्दीन यहिया मुनेरी अपने एक पत्र में लिखते हैं:–

"नबियों की एक साँस तमाम औलिया की पूरी ज़िन्दगी से अफ़ज़ल है।"

यूनानी दर्शनशास्त्र की असफलता का कारण:–

यही कारण है कि नबियों के बताये हुए तरीक़ों के अलावा जो भी अल्लाह के अस्तित्व और उसके गुणों की मारफ़त हासिल करना चाहता है उसे असफलता का सामना करना पड़ता है। भले ही वह कैसा ही ज्ञानी, दक्ष और सूझ बूझ वाला हो। ऐसे लोगों के लिए .कुरआन का इरशाद है :–

अनुवादः "तुम लोग झगड़ चुके जिस में तुमको कुछ ख़बर (जानकारी) थी। अब क्यों झगड़ते हो जिस बात में तुमको कुछ ख़बर नहीं। अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते हो।"

(सूरः आलेइमरान–६६)

यूनान के प्राचीन अध्यात्मवाद (मेटाफ़िज़िक्स) और उसके विचारकों

व विशेषज्ञों की असफलता का यही भेद है। उनके अद्वितीय ज्ञान, उनकी साहित्यिक कृतियों, उनकी जादू जगाने वाली शायरी, और गणित, ज्यामिती, ज्योतिष में उनकी महारत (दक्षता) ने उनको धोखे में डाल दिया और उन्होंने समझा कि अध्यात्मवाद में भी वह इसी प्रकार सफल रहेंगे। अतएव उन्होंने अध्यात्मवाद के क्षेत्र में भी प्रयास किये, किन्तु उन्होंने इस माथापाची के फलस्वरूप जो कुछ दुनिया को दिया है उसे समझदारों की नासमझी का एक ढेर कहना अधिक उचित होगा। इमाम ग़ज़ाली ने इस पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि :–

अनुवादः "तह ब तह तारीकियाँ (अन्धकार) ही तारीकियाँ। अगर कोई इन्सान इस तरह का अपना ख्वाब बयान करे तो उसे दिमाग़ की ख़राबी का नतीजा कहा जायेगा।"

दूसरी जगह लिखते हैं :–

"मेरी समझ में नहीं आता कि इस तरह की चीज़ों से एक दीवाना भी कैसे सन्तुष्ट हो सकता है, और कहां यह अक़्ल वाले जो बड़े गर्व के साथ बाल की खाल निकालते हैं।"

इसी प्रकार शेखुल इस्लाम इब्ने तैमिया दार्शनिकों और हकीमों के कथनों पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं :–

"समझदार लोग इन लोगों की बातों पर ग़ौर करें जिनको अपनी बुद्धि पर इतना घमंड है कि नबियों की बताई हुई बातों को ठुकरा देते हैं। अपनी हिकमत की चरम सीमा और दर्शनशास्त्र के उच्च

स्तर पर भी दीवानों जैसी बातें करते हैं। और सिद्ध तथा सुनिश्चित सत्य को अपनी भ्रमात्मक बातों से रद्द कर देते हैं। और साफ झूठ को स्वीकार कर लेते हैं।"

एक दूसरी जगह लिखते हैं :–

"अध्यात्म के बारे में जब पहले गुरू (अरस्तू) की बातों पर नज़र डाली जाती है और एक पढ़ा लिखा आदमी इसको ध्यान से देखता है तो वह बेचैन होकर इस नतीजे पर पहुंचता है कि यूनान के इन दार्शनिकों से बढ़कर संसार के पालनहार की मारफ़त से कोई बेबहरा और अनभिज्ञ न था। वह आश्चर्यचकित रह जाता है जब देखता है कि कुछ लोग यूनान के अध्यात्म का मुक़ाबला पैग़म्बरों के ज्ञान व शिक्षाओं से करने लगते हैं। उसको यह बात ऐसी ही नज़र आती है जैसे कोई लोहारों की तुलना फ़रिश्तों से अथवा गाँव के ज़मीदारों की तुलना दुनिया के बादशाहों से करने लगे।"

मुजद्दिद अल्फ़ि सानी एक पत्र में लिखते हैं :–

"अक्ल अगर इस मुद्दे में काफी होती तो यूनान के दार्शनिक जिन्होंने अक़्ल (बुद्धि) को अपना लीडर बनाया था, गुमराही के जंगल में न अटकते, और हक़ को दूसरों के मुक़ाबले में ज्यादा पहिचानते।"

फिर उनके विचित्र कथनों का उल्लेख करते हुए लिखते हैं :–

"अजीब बात यह है कि एक गिरोह इन अहमक़ों (यूनानी दार्शनिकों) को दार्शनिक की पदवी से याद करता है और दर्शनशास्त्र से इनका नाता जोड़ता है। यूनानी दार्शनिकों की अधिकांश बातें विशेषकर अध्यात्म की ग़लत हैं। इनको दार्शनिक कहना ऐसा ही है जैसे किसी अन्धे को आँख वाला कहा जाये।"

इन्हीं लोगों पर .कुरआन की यह बात खरी उतरती है :-

अनुवादः "क्या यह उनकी पैदाइश के समय हाज़िर थे, तो इनका यह कहना लिख लिया जायेगा और इनसे (इस मनगढ़न्त की बाबत) पूछा जायेगा"।

(सूरः जुखरूफ़ १६)

अनुवादः "मैंने आसमानों और ज़मीन के पैदा करते समय बल्कि खुद उस (शैतान) के पैदा करते समय भी उन (शैतानों) को नहीं बुलाया, और मैं ऐसा नहीं कि (राह से) भटकने वालों को (अपना) मददगार बनाऊँ।

(सूरः कहफ़ ५१)

इस्लामी युग के दर्शनशास्त्र की चूक :-

खेद की बात है कि इस्लामी दर्शनशास्त्र भी जो यूनान के नास्तिक दर्शनशास्त्र का मुक़ाबला करने के लिए सामने आया था, इसी दृष्टिकोण से प्रभावित हो

गया। और ऐसे मुद्दों की विस्तृत विवेचना की गई जिनका न तो सिद्धान्त लोगों को मालूम था न वह उसकी भूमिका की सही जानकारी रखते थे, इसमें भी वही बेक़ाबू दार्शनिकता रच बस गई जो अपना मूल्य नहीं पहिचानती और सीमा से परे निकल जाती है। यहाँ भी ईश्वर के अस्तित्व और उसके गुणों की विवेचना में वही बारीकियाँ और बाल की खाल निकालने की कोशिश नज़र आती है। लोगों ने इसका ऐसा विश्लेषण किया जैसे वह विज्ञान की किसी प्रयोग शाला में खड़े हों और सारे तत्वों को अपनी आँख से देख रहे हों।

नबियों की विशिष्टताः—

इस जीवन दायक ज्ञान में नबियों का कोई शरीक (साझेदार) नहीं। वह ज्ञान जिसके बिना मुनष्यों को मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती है। यह वह ज्ञान है जिसकी रौशनी में इन्सान अपने पैदा करने वाले, सृष्टा उसके अस्तित्व व गुणों तथा उसके और भक्तों के बीच के सम्बन्धों की जानकारी करता है। इसी की रौशनी में मनुष्य के आदि व अन्त का ज्ञान होता है और दुनिया के मानव की गरिमा का बोध होता है। ईश्वर को राज़ी व प्रसन्न करने, उसका कोप भाजन बनने, पारलौकिक जीवन की सफलता व असफलता दिलाने वाली बातों और कर्मों, मनुष्य के आचरण कर्म का फल आदि की जानकारी इसी ज्ञान की बदौलत होती है। और यही वह ज्ञान है जिसे "मोक्ष—ज्ञान" कहा जा सकता है।

नबी उत्कृष्ट क्षमताओं, की अनुभूति की सरसता, स्वाभाविक बुद्धिमत्ता के मालिक होने के बावजूद अपने समय के प्रचलित ज्ञान की सामान्य

शाखाओं में हस्तक्षेप नहीं करते और न ज्ञान व कला कौशल के क्षेत्र में अपनी महारत (निपुणता) का दावा करते हैं। बल्कि वह तमाम चीज़ों से बिल्कुल अलग केवल उस कर्तव्य के निर्वाह में लीन रहते हैं, जिसके लिये वह भेजे गये हैं। और उस ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाने की धुन में लगे रहते हैं जिस पर मनुष्य के दुर्भाग्य व सौभाग्य का दारोमदार है।

नबियों की शिक्षा की अनदेखी का परिणामः—

सभ्य और विकसित राष्ट्र जो अपने अपने समय में सभ्यता व संस्कृति, ज्ञान—विज्ञान, की चरम सीमा पर पहुँचे थे वह भी नबियों की लाई हुई शिक्षा और उनके विशिष्ट ज्ञान के इतने ही ज़रूरतमन्द थे जितना कि दरिया में डूबने वाला सहारे के लिए नाव का का मुहताज होता है अथवा जीवन से निराश रोगी को जितनी ज़रूरत अचूक दवा की होती है। इन विकसित राष्ट्रों के लोग विशिष्ट ज्ञान के क्षेत्र में दूध पीते बच्चे, कोरे अज्ञान और खाली हाथ थे। और उन्होंने अपने ज्ञान व सभ्यता की उन्नति के बावजूद जब नबियों के विशिष्ट ज्ञान की अनदेखी कर दी और उसकी खिल्ली उड़ाई तो यह उस राष्ट्र व समाज की तबाही का कारण बना। अनेक विकसित राष्ट्र ज्ञान व गरिमा के लिए जिनकी मिसाल दी जाती थी, जब अपने समय के नबी की लाई हुई शिक्षाओं को तिरस्कार की दृष्टि से देखा और उसका इन्कार कर दिया, उसकी अनदेखी कर दी, उसे बेकार समझा तो वह इसी अहंकार का शिकार हो गये। और वह संकुचित दृष्टिकोण जिसे वह दूर दृष्टि कहते थे, उनको ले डूबी और उन्होंने अपने किये का मज़ा चख लिया।

नबियों के ज्ञान और दूसरे ज्ञान–विज्ञान की तुलनाः–

नबियों के ज्ञान और दूसरे विद्वानों के ज्ञान व कला कौशल का सुस्पष्ट अन्तर एक कहानी से भली प्रकार समझ में आ जायेगा। आप लोगों ने यह कहानी सुनी तो ज़रूर होगी लेकिन इससे यह निष्कर्ष न निकाला होगा। यह कहानी आप ही लोगों अर्थात् छात्र वर्ग से ही सम्बन्धित है। एक बार कुछ छात्र तफ़रीह (विहार) के लिए एक नाव पर सवार हुए। सुहाना समय था। तबीयत मौज पर थी। हवा आनन्द दायक थी। और काम कुछ न था यह युवा छात्र खामोश कैसे बैठ सकते थे। अनपढ़ मल्लाह उनकी दिलचस्पी का अच्छा साधन और हंसी मज़ाक का समुचित स्रोत था। अतएव एक नटखट बालक ने उसे सम्बोधित करते हुये कहा, "चाचा! आपने कौन कौन सी विद्या पढ़ी है ?"

मल्लाह ने उत्तर दिया, "बेटा ! मैं कुछ पढ़ा लिखा नहीं" लड़के ने ठंडी सांस भरकर कहा, "अरे ! आपने साइँस नहीं पढ़ी ?

मल्लाह ने कहा, "मैने तो इसका नाम भी नहीं सुना।"

दूसरा छात्र बोला, "ज्यामिती तथा बीजगणित तो आप ज़रूर जानते होंगे।"

मल्लह ने कहा, हुजूर यह नाम मेरे लिए बिल्कुल नये है ।

अब तीसरे लड़के ने व्यंग्य किया मगर आपने भूगोल और इतिहास

तो पढ़ा ही होगा मल्लाह ने उत्तर दिया सरकार यह शहर के नाम हैं या आदमी के मल्लाह का यह जवाब सुनकर लड़के ठहाका मारकर हँस पड़े । फिर उन्होंने पूछा चचा मियाँ तुम्हारी उम्र क्या होगी मल्लाह ने बताया यही कोई चालीस साल लड़कों ने कहा आपने अपनी आधी उम्र बरबाद की और कुछ पढ़ा लिखा नहीं। मल्लाह (केवट) बेचारा कुछ न कह सका और चुप साध ली विधि का विधान देखिये कि नाव कुछ ही दूर गयी थी कि नदी में तूफान आ गया। लहरें मुँह फैलाये बढ रही थी। नाव हिचकोले लेने लगी। ऐसा लगता था कि अब डूबी तब डूबी। नवकावाहन का छात्रों को यह पहला अनुभव था। उनके औसान ख़ता हो गये, चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगीं। अब अनपढ़ मल्लाह की बारी आयी उसने बड़ी गम्भीरता से मुँह बना कर पूछा, "भइया तुमने कौन कौन सी विद्या पढ़ी है" ?

लड़के उस भोले भाले अनपढ़ का उद्देश्य नहीं समझ सके और स्कूल में पढ़े हुए सारे विषयों की सूची गिनानी शुरू कर दी और जब बड़े बड़े भारी भरकम नाम गिना चुके तो केवट्ट ने मुस्कराते हुए पूछा, "ठीक है, यह सब तो पढ़ा लेकिन क्या तैराकी भी सीखी है ?" अगर ईश्वर न करे, नाव उलट जाये तो किनारे कैसे पहुँचोगे ?"

लड़कों में कोई भी तैरना नहीं जानता था। उन्होंने बड़े दुःख के साथ कहा, "चचा मियाँ। यही एक विद्या सीखने से रह गयी, हम इसे नहीं सीख सके।"

लड़कों का उत्तर सुनकर केवट ज़ोर से हंसा और कहा, "मियाँ !"

मैने तो अपनी आधी उम्र खोई मगर तुमने तो पूरी उम्र डिबोई। क्योंकि इस तूफान में तुम्हारा पढ़ा लिखा कुछ काम न आयेगा। आज तैराकी ही तुम्हारी जान बचा सकती है और वह तुम जानते ही नहीं।"

उन्नति के शिखर और सभ्यता व संस्कृति की चरमसीमा पर पहुँचने वाली तमाम क़ौमों की यही हालत है। भले ही वह ज्ञान व साहित्य की इन्साइकलोपीडिया (विश्वकोष) ही क्यों न रही हों और भले ही वह समस्त मानव ज्ञान के भंडार और खोज तथा आविष्कार के क्षेत्र में पूरी दुनिया के लीडर और अगुवा ही क्यों न रही हों, किन्तु वह उस ज्ञान से अपरिचित थीं जिससे ईश्वर का सानिध्य प्राप्त होता है। और जिसकी सहायता से सृष्टा तक पहुँचा जा सकता है, जिसके सहारे लक्ष्य की प्राप्ति होती है और जो विचार तथा कर्म को सही दिशा प्रदान करता है, काम वासना पर नियत्रण रखता है, मन को पवित्र और आचरण को शुद्ध करता है। बुराईयों से रोकता है, भलाईयों पर उभारता है, हृदय में ईश्वर का डर और सत्ता का भय पैदा करता है और जिसके बिना न समाज का सुधार हो सकता है न सभ्यता व संस्कृति की सुरक्षा हो सकती है।

कुरआन में उन क़ौमों का क़िस्सा बयान करते हुए कहा गया है, जो अहंकार के नशे में मस्त थीं और उन्होंने अपने समकालीन नबियों (ईश दूतों) को निकृष्ट समझा क्योंकि वह उस समय के प्रचलित ज्ञान व कला कौशल में विशिष्ट ख्याति नहीं रखते थे :–

अनुवादः "और जब उनके ईशदूत उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आये तो जो ज्ञान उनके विचार में उनके पास था उस पर इतराने

लगे। और जिस चीज़ का मज़ाक़ उड़ाया करते थे उस ने उनको आ घेरा।"

(सूरः मोमिन ८३)

ईश–दूत के अभ्युदय के बाद इन्कार की गुंजाइश नहीं :–

आख़िरी नबी हज़रत मोहम्मद सल्ल०के अभ्युदय के बाद भी हर उस क़ौम की यही हालत है जो ज्ञान, विवेक, कला कौशल और सभ्यता की चरम सीमा पर पहुँच चुकी है और उसके अहंकार तथा अपने ज्ञान विज्ञान, अपने विशेषज्ञों पर आवश्यकता से अधिक भरोसे ने उसे हज़रत मोहम्मद (स०) के लाये हुए बेहतरीन ज्ञान से रोक रखा और आप के पद चिन्हों पर चलने की इजाज़त न दी।

हमारे समय के विकसित राष्ट्रों की मिसाल भी यही है जो इस ज्ञान से लाभ उठा सकते हैं और इस ज्योति पुष्प से प्रकाशित हो सकते हैं। शीघ्र ही इन क़ौमों (राष्ट्रों) के इन्कार, अहंकार और आत्मसन्तुष्टि का प्रतिफल ज़ाहिर हो जायेगा।

इस्लामी देशों के लिए महान ख़तरा :–

मुस्लिम तथा अरब देशों का रवैया और भी आश्चर्य जनक है कि वह इस जीवन दायक ज्ञान से दूर होते जा रहे हैं और इससे लाभान्वित होने के बजाय परिश्चमी सभ्यता, भौतिक मान्यताओं की चमकदमक पर टूटे पड़ रहे हैं। यह उनके लिए बड़े खतरे की बात है। इसी दूरी के कारण वह फूट और मतभेद के शिकार हो रहे हैं। दिन प्रतिदिन की अस्थिरता और क्रान्ति

उनको तबाह कर रही है। उनमें ईर्ष्या और द्वेष की भावना घर कर गयी है। उनकी हवा उखड़ गयी है और वह अपमानित हो रहे हैं।

विद्वानों तथा नबियों में अन्तरः—

नबियों के मुक़ाबले में दूसरे विद्वानों और विशेषज्ञों की मिसाल ऐसी है जैसे किसी बड़ी आबाद, विकसित और सुव्यवस्थित महानगरी में विभिन्न अभिरूचि रखने वाले विद्वान प्रवेश करें।

एक टोली आती है जिसकी अभिरूचि इतिहास में है तो वह उस पुराने शहर का इतिहास ज्ञान करेगी कि किसने यह शहर आबाद किया, कब इसकी बुनियाद पड़ी, यहां की प्रमुख घटनायें क्या क्या हैं और यहाँ कब से कब तक किसका शासन रहा।

एक दूसरी टोली वहां आती है जिसकी रूचि पुरातत्व में है तो वह प्राचीन अवशेष तलाश करेगी, महानगरी के ऐतिहासिक भागों की खुदाई करेगी और उससे निकली हुई चीज़ों का अध्ययन कर के उनके कालों को सुनिश्चित करेगी, पुराने बादशाहों, सभ्यता और संस्कृति का पता लगायेगी।

कुछ अन्य लोग उसी शहर में आते हैं जो भूगोल वेत्ता हैं। वह लोग देखते हैं कि इस शहर की सीमायें क्या हैं, इसका क्या क्षेत्रफल है? इसकी भौगोलिक स्थिति क्या है ? इसके आस पास कौन पहाड़ी अथवा

नदी है ? एक और टोली आती है जो साहित्य में रूचि रखती है तो वह इस नगरी के सौन्दर्य, उसके मन मोहक दृश्य, उसकी प्रभात, उसकी सन्ध्या उसकी समृद्धि उसके उपवन से प्रभावित होती है और रचना की धारा फूट पड़ती है।

कुछ दूसरे लोग वहां पहुंचते हैं वह भाषा विशेषज्ञ हैं तो वह वहां की स्थानीय भाषा की खोजबीन करते हैं नये नये शब्दों को एकत्र करते हैं। उस पर शोध कार्य करते हैं।

विद्वानों तथा मर्मज्ञों की इन टोलियों के महत्व को कम नहीं किया जा सकता किन्तु इसके होते हुये यह सब उस समय तक ख़तरे से ख़ाली नहीं जब तक यह न मालूम कर लें कि इस शहर का हाकिम कौन है, यहाँ की प्रशासन व्यवस्था कैसी है और वह कौन से नियम व क़ानून हैं जिनका पालन यहां हर एक को करना पड़ता है। इस नगर की नागरिकता कैसे प्राप्त की जा सकती है। यहाँ के वासियों को कितने टैक्स देने पड़ते हैं, यहाँ बसने की क्या क्या शर्तें हैं ? यह किन चीज़ों पर प्रतिबन्ध है ? आदि।

नबियों का विशिष्ट कर्तव्यः—

इसी मिसाली शहर में एक और गिरोह प्रवेश करता है — क्षमताओं से परिपूर्ण, शक्ति पीठ के मालिक, सुरूचिपूर्ण और सरस। मानवीय गुणों में से किसी चीज़ की कमी नहीं।

किन्तु इसके लक्ष्य बिल्कुल अलग हैं। इसकी कार्य प्रणाली पूर्णतया भिन्न है। यह टोली सीधे इस शहर के वास्तविक मूलस्रोत तक पहुंचती है। बल्कि इस नगरी का स्वामी स्वयं इस टोली की उँगली पकड़ कर उसे केन्द्र बिन्दु तक ले जाता है। और यह पवित्र टोली सीधे उस से आदेश प्राप्त करती है और उसे शहर के तमाम लोगों तक पहुंचाती है। वह इस शहर की सुरक्षा व्यवस्था तथा उसके नागरिकों के बीच महत्वपूर्ण कड़ी बन जाती है।

निःसन्देह शहर के तमाम लोग इस आख़िरी टोली के प्रति आभारी हैं क्योंकि सारे ज्ञान और कला कौशल उनके विशिष्ट ज्ञान क़े साये में पलते और बढ़ते हैं। यह टोली अगर न हो तो दूसरी सारी टोलियां अज्ञानता का शिकार हो जायेंगी उनसे नियमों का उल्लंघन होगा और उन्हें जेल क़ी हवा खानी पड़ेगी और उनके तमाम ज्ञान और विज्ञान धरे के धरे रह जायेंगे और उनके कुछ काम न आयेंगे। सत्ता की मारफ़त का काम विशेष रूप से नबियों का काम है। .क़ुरआन कहता है :–

अनुवादः "और हम इसी तरह इब्राहीम को आसमानों और ज़मीन के अजूबे दिखाने लगे ताकि वह ख़ूब यक़ीन करने वालों में हो जायें।

(सूरः अनआम– ७६)

पवित्रतम कार्य :– इस मारफ़त (सानिध्य) का महत्व कहीं अधिक हो जाता है अगर यह ध्यान रहे कि मेरी बयान की हुई मिसाल में मामला सिर्फ सत्ता और व्यवस्था कर्ता ही का नहीं बल्कि इस शहर

का हाकिम और व्यवस्थाकर्ता इसका सृष्टा भी है जिसने उसे पैदा किया है, उस पर जीवन की लहरें दौड़ाई हैं, उसकी ज़रूरत की तमाम चीज़े और आसानियाँ पैदा की हैं। वह अन्नदाता है, उदार है, रहमत और दया वाला है, क्षमा करने वाला है। अपनी सृष्टि से उससे अधिक प्यार रखता है जो माँ को अपने बच्चे से होता है। कुरआन में इसका बयान इस प्रकार किया गया है :–

अनुवादः "वह अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला वह बड़ा मेहरबान बेहद रहमवाला है। वही ख़ुदा है, जिसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। वह बादशाह (सर्व सत्ता सम्पन्न), पाक ज़ात, हर ऐब से सालिम, अमन देने वाला, निगहबान (रखवाला), ग़ालिब (प्रबल), ज़बरदस्त, बड़ाई वाला है। (और) यह लोग जैसे जैसे शिर्क करते हैं अल्लाह उससे पाक है। वही खुदा पैदा करने वाला, बनाने वाला, सूरतें बनाने वाला उसके सब अच्छे नाम हैं जो कुछ ज़मीन आसमानों में है वह उसी की तस्बीह (स्तुति) में लगे हैं। और वह प्रबल (ग़ालिब) हिक्मतवाला है।" (सूरः हशर २२–२४)

अतएव मनुष्य को प्रदत्त सारी बौद्धिक क्षमतायें ख़र्च कर के उस सत्ता की मारफ़त (सानिध्य) की प्राप्ति, अन्तःकरण में उसका प्रेम, अंग अंग से उसकी बन्दगी और उसकी रज़ामन्दी के लिये भरसक प्रयास व परिश्रम करना ही सबसे महत्वपूर्ण तथा पवित्रतम कार्य है।

नबियों का पवित्र गिरोह मानवता के लिए उतना ही ज़रूरी है जिनती शरीर के लिए आत्मा काम के लिए बुद्धि और इन्सान के लिए रौशन आँखें। और दुनिया इनके बग़ैर पूरी तरह अन्धेरी है। कुरआन में

इसे यूँ बयान किया गया है :–

अनुवादः "अन्धेरे ही अन्धेरे हों एक पर एक छाया हुआ जब अपना हाथ निकाले तो कुछ न देख सकें। और जिसको खुदा रौशनी न दे उसको कहीं भी रौशनी नहीं मिल सकती"। (सूरः नूर –४०)

मानव कल्याण और सभ्यता के विकास का प्रमुख कारण :– नबी केवल सही मारफ़त के केन्द्र ही नहीं हैं, बल्कि इसके साथ ही वह मानव समाज को एक और अपार निधि देते हैं जिस पर मानवता के कल्याण और सभ्यता व संस्कृति के विकास का पूरा पूरा दारोमदार है। वह अपार निधि है भलाई से प्रेम और बुराई से नफ़रत की पवित्र भावना, शिर्क को मिटाने और भलाई को बढ़ावा देने के लिये त्याग व बलिदान का संकल्प। विकास के सारे संसाधन संकल्प के अधीन हैं। तमाम कारनामों की बुनियाद यह है कि इन्सान इरादा करे। और इस भलाई के मूल स्त्रोत नबियों (ईशदूतों) की शिक्षायें रही हैं। नबियों ने अपने अपने समय में अपनी क़ौम और अपने समाज में भलाई से प्रेम और बुराई से नफ़रत की भावना को बढ़ावा दिया है। सत्य की हिमायत और असत्य के विरोध करने की भावना उनमें भरने का प्रयास किया है। मानव विकास के इतिहास में जब जब यह भावना कमज़ोर पड़ी है, तब तब दानवता ने अपना मुँह फैलाया है। नब्रियों ने सदैव इसका इलाज किया है और दानवता को मानवता में बदल दिया है। उन्होंने अपनी शिक्षा का प्रचार व प्रसार किया उसके लिए निरन्तर संघर्ष किया, अपने आराम की परवाह नहीं की, आदर और सम्मान का ख्याल नहीं किया, यहाँ तक कि अपनी जान की बाज़ी लगा दी। इस निरन्तर प्रयास व परिश्रम के

फलस्वरूप इन्सानियत से आजिज़ हैवानों (दानव) और फाड़ खाने वाले लोगों के बीच ऐसे नेक और सज्जन पुरूष पैदा हुए जिनकी साँस से दुनिया महक उठी, जिनके सद्कर्मों ने मानव इतिहास को मनमोहक बनाया, जो उठान में फ़रिश्तों (देवदूतों) से भी आगे निकल गये और इन्हीं अनुकरणीय आत्माओं की बदौलत तबाह व बरबाद होने वाली इन्सानियत को नई ज़िन्दगी मिल गयी। न्याय और इन्साफ़ का दौर दौरा हो गया। कमज़ोरों में बलवानों से अपना अधिकार प्राप्त करने का साहस पैदा हुआ, भेड़ियों ने बकरियों की रखवाली की। वातावरण में दया और करूणा व्याप्त हो गयी, प्रेम और भाईचारे की सुगन्ध फैल गयी, सद्भावना का बाज़ार गरम हो गया, दुनिया में जन्नत की दुकानें सज गयीं, आत्मायें लालच की जकड़न से आज़ाद हो गयीं। हृदय भाईयों की तरफ ऐसे खिंचने लगे जैसे चुम्बक की तरफ लोहे के टुकड़े।

मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास पर जितना एहसान ईशदूतों के समुदाय का है उतना किसी अन्य समुदाय का नहीं। उनकी कृपा दृष्टि, मानवता के प्रति उनका आदर, उनकी शालीनता, उनकी समता और उनका सन्तुलन उन के पूरे जीवन पर छाया हुआ है। और इन्हीं की छाया में मानव–जीवन सम्भव है। अगर नबियों का अस्तित्व न होता तो मानवता का बेड़ा अपने ज्ञान–विज्ञान, कला–कौशल और अपनी सभ्यता व संस्कृति सहित तूफान का शिकार हो जाता और भूतल पर मनुष्यों के बजाय जंगली जानवरों के रेवड़ कुलेलें करते नज़र आते जो न अपनें पैदा करने वाले को पहचानते न अपने पालनहार को, न आचार–व्यवहार जानते, न प्रेम की भावना रखते और घास चारे से परे कोई बात उनकी बुद्धि में न आती।

वास्तविकता यह है कि आज दुनिया में जो भी अच्छाइयां हैं, जीवन में जो भी सरसता है अथवा बुराईयों को मिटाने के जो भी संकल्प पाये जाते हैं, यह सब ईश–दूतों के समुदाय की लगाई हुई पौध है जो फल दे रही है। उन्हीं की फैलाई हुई रौशनी में दुनिया आगे क़दम बढ़ाती रही है और उन्हीं के बनाये हुए भव्य–भवन की छाया में जीवन यापन करती रही है और करती रहेगी। इन पवित्र आत्माओं को शत शत प्रणाम, उन पर हज़ारों दुरूद व सलाम।

बहार अब जो दुनिया में आयी हुई है।

यह सब पौध उन्हीं की लगाई हुई है।
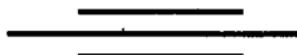
दूसरा व्याख्यान

नबियों की विशिष्टतायें

सज्जनों ! मेरे पहले व्याख्यान का विषय था 'नबूवत की ज़रूरत और उसकी क़दर व क़ीमत। अर्थात मानव जाति को इसकी कितनी अधिक ज़रूरत है, सभ्यता व संस्कृति पर पैग़म्बरी के क्या एहसानात हैं, और नबियों का क्या सन्देश हैं। आज इस शुभ अवसर पर मैं नबियों की विशिष्टताओं तथा उनकी बुनियादी विशेषताओं पर प्रकाश डालना चाहता हूँ कि नबियों (ईशदूतों) का समुदाय किन बातों में विचारकों व विद्वानों के अन्य समुदायों से विशिष्ट होता है।

कृत्रिम व स्व–रचित शैली, राजनीतिक तौर–तरीकों, नेतृत्व व संगठन, नई राहों और शिक्षा–दीक्षा के आधुनिक सिद्धान्तों ने नबूवत की मर्यादा को समझने में बड़ी भूल की है। यह विचार–शैली तथा कार्य विधि अपने आप में सराहनीय है, इसने अज्ञानों में शिक्षा के प्रसार, जीवन स्तर को ऊँचा उठाने में, बिगाड़ का मुक़ाबिला करने तथा .ग़ुलाम मुल्कों को आज़ादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है, किन्तु यह विचारशैली लोगों के मन मस्तिष्क पर इस प्रकार छा गई है कि वह लोग इस पहलू के अलावा नबूवत एवं नबियों की मर्यादा की कल्पना ही नहीं करते, और न इस ऐनक के बिना उनकी तरफ देखते हैं। इस युग में कुछ एक इस्लाम पसन्द लेखक और मुसलमानों के पुर्नोत्थान के समर्थक भी इन्हीं

विचारों से प्रभावित दिखाई पड़ते हैं और उन्होंने नबियों के आह्वान तथा उनकी जीवनी की विवेचना आधुनिक राजनीतिक एवं सामाजिक शब्दावली में प्रारम्भ कर दी है, जो लोगों के लिए नबूवत के मन्सब, नबियों की मनःस्थिति, उनके सन्देशों की हक़ीक़त और उनके क्रिया–कलाप की वास्तविकता को समझने में बाधा बन रही है। और यह बात बुद्धि को ऐसे रास्ते की ओर मोड़ रही है जो नबूवत के मन्सब से कोई जोड़ नहीं रखता।

राजनीतिक–चिन्तन शैली, आधुनिक राजनीतिक शब्दावली, और वर्तमान युग में राजनीति तथा राज्य के महत्व का मन–मस्तिष्क एवं भाषण व लेखनी पर ऐसी गहरी छाप पड़ी है कि इस्लामी आह्वान के कुछ एक लीडर और प्रतिष्ठित लेखक भी अपने लेखों में निःसंकोच वह राजनीतिक शब्दावली प्रयोग करने लगे हैं जिनकी एक विशिष्ट पृष्ठभूमि और जिनका एक विशेष भावार्थ है और वह अपना एक विशेष और सीमित अर्थ रखती हैं और यह शब्दावलियाँ नबियों की शिक्षा के सार के वास्तविक चित्रण में न केवल असमर्थ हैं बल्कि इन से भ्रम और शंका की स्थिति भी उत्पन्न होती है जैसे, 'इन्क़लाब', 'बग़ावत', 'जनतंत्र', 'समाजवाद' और 'व्यवस्था' के शब्द। इनमें से प्रत्येक का एक विशिष्ट भावार्थ है जिसका विकास विशेष परिस्थिति, वातावरण और घटनाचक्र में हुआ है। और यह मन मस्तिष्क पर एक विशेष प्रकार का प्रभाव डालते हैं। वास्तव में इस्लाम और नबियों के वर्णन के लिए वही शैली अपनाना उचित है जो शैली .क़ुरआन मजीद की है क्योंकि वह हर प्रकार की ग़लतफ़हमी और अन्देशा से पाक है।

कुरआन के गहन अध्ययन की ज़रूरत :–

इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि इस विषय पर .कुरआन का गहन अध्ययन किया जाय। ऐसा अध्ययन जो बाह्य प्रभावों तथा "ग़ैरों" की संकल्पना से पाक हो और उस पर हमारी व्यक्तिगत प्रवृत्ति की छाया न हो। सम्भव है हमारी प्रवृत्ति खराब न हो, यह भी सम्भव है कि वह स्वाभाविक हो किन्तु यह बिल्कुल आवश्यक नहीं है कि कुरआन से हर अच्छी चीज़ के लिए दलील (तर्क) का काम लिया जाये अथवा नबियों की जीवनी हर अच्छी दावत (आह्वान) और प्रयास का साथ दें। .कुरआन के अध्ययन और चिन्तन को युग के सीमित मापदण्डों का पाबन्द नहीं बनाना चाहिए, क्योंकि कालचक्र और चिन्तनशैली परिवर्तनशील है, वस्तुओं का मूल्य भी स्थिर नहीं रहता इसमें चढ़ाव–उतार होता रहता है। एक युग में जो दृष्टिकोण पैदा हो, जो शब्दावली गढ़ी जाये आवश्यक नहीं कि आने वाले युग अथवा वातावरण में उसे ज्यों का त्यों थोप दिया जाये .कुरआन एक आसमानी किताब है, और अपना एक अद्वितीय अस्तित्व रखती है। मानव–ज्ञान का समस्त भण्डार उसकी सारी विचारधारायें रेत के फिसलते हुए टीले के समान है जो बिखरता भी है और सिमटता भी है और बढ़ता भी है, इस पर किसी चीज़ की आधार शिला रखना उचित नहीं। फिर यह कैसे हो सकता है कि .कुरआन अपने उच्च स्थान तथा अपनी चिरस्थायी बुनियादों से गिर कर रेत के इस अस्थायी टीले पर आ रहे।

नबियों और दूसरे लीडरों में बुनियादी अन्तर :–

पहली और अत्यन्त महत्वपूर्ण विशेषता जो नबियों को दूसरों से विशिष्ट बनाती है यह है कि नबी जिस ज्ञान को दूसरों तक पहुंचाता है, जिस विश्वास की ओर लोगों को बुलाता है जिस सन्देश के प्रचार का उत्तरदायित्व उसे सौंपा जाता है, वह न तो उनकी बुद्धि की पैदावार होती है न उनके अनुभवों का नतीजा, बल्कि इसका मूल स्रोत आकाशवाणी (आसमानी पैग़ामात) है जिसे लोगों तक पहुंचाने के लिए वह चुने गये हैं। अतः कभी भी दूसरे नेताओं, समाज सुधारकों और विद्वानों पर उनको क़यास नहीं किया जा सकता। यह विद्वान अथवा सुधारक या तो समाज की पैदावार होते हैं अथवा अपनी बुद्धि और सूझ--बूझ के बलबूते अथवा वातावरण में व्याप्त बिगाड़ की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप उत्पन्न एक आवाज़।

इस प्रतिक्रिया का प्रभाव उन बहुत से इस्लाम पसन्द लेखकों की रचनाओं में दिखाई पड़ता है जिनकी चिन्तन शैली पर आधुनिक भौतिकवाद, पश्चिम की राजनीति की गहरी छाप है और जिन्होंने इन विचारधाराओं के समानान्तर इस्लामी विचारधारा और जीवन–व्यवस्था को प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

इन आधुनिक रचनाओं तथा इस्लाम और मुसलमानों के आधुनिक पुर्नोत्थान के प्रयासों में एक स्पष्ट अन्तर कर्म के कारकों तथा उद्देश्यों का है पहले वर्ग के प्रयास व चिन्तन का प्रमुख कारण सत्ता की प्राप्ति और इस्लामी राज्य की स्थापना और मानव जीवन की सुख समृद्धि है जब कि दूसरे वर्ग अर्थात–नबियों के प्रयासों का प्रमुख कारण अल्लाह

की रज़ा हासिल करना, ईश्वर की वाणी को ऊँचा उठाना, आख़िरत की कामयाबी, ईमान और जवाबदही की भावना को बढ़ावा देना है। क़ुरआन उन्हीं जैसे लोगों के लिए कहता है :–

अनुवादः " वह (जो) आख़िरत का घर (है), हमने उसे उन लोगों के लिए (तैयार) कर रखा है, जो मुल्क में फ़साद का इरादा नहीं करते और (अच्छा) फल तो परहेज़गारों ही का है।" (सूरः अल–क़सस–८३)

इस सिलसिले में अन्तिम बात क़ुरआन की है :–

अनुवादः "यह भी कह दो कि अगर ख़ुदा चाहता तो न तो मैं ही यह किताब तुमको पढ़कर सुनाता और न तुम्हें इससे वाक़िफ करता। मैं इस से पहले तुम में एक उमर रहा हूँ भला तुम समझते नहीं।"

(सूरः यूनुस –१६)

इसी प्रकार एक और जगह अल्लाह का फ़रमान है :–

अनुवादः "और इसी तरह हमने अपने हुक्म से तुम्हारी तरफ फ़रिश्ते के ज़रिये क़ुरआन भेजा है, तुम न तो किताब को जानते थे और न ईमान को, लेकिन हमने इसको नूर बनाया है कि इससे हम अपने बन्दों में से जिसको चाहते हैं हिदायत (पथ प्रदर्शन) करते हैं, और बेशक ऐ मोहम्मद (स०) तुम सीधा रास्ता दिखाते हो।"

(सूरः शूरा – ५२)

और इसी तरह इरशाद है :–

अनुवाद: "और तुम्हें उम्मीद न थी कि तुम पर यह किताब नाज़िल की जायेगी। मगर तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी से नाज़िल हुई तो तुम हरगिज़ काफ़िरों के मददगार न होना।"

(सूरः अल–क़सस–८६)

एक और आयत में इरशाद है :–

अनुवाद: "और न तुम उस समय जब कि हमने मूसा को आवाज़ दी तूर के किनारे थे, बल्कि तुम्हारा भेजा जाना तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है ताकि तुम उन लोगों को जिन के पास तुमसे पहले कोई हिदायत करने वाला नहीं आया हिदायत करो ताकि वह सीख लें।"

(सूरः अल्–क़सस–४६)

कुरआन नबूवत के मिज़ाज का उल्लेख इस प्रकार करता है :–

"वही फ़रिश्तों को पैग़ाम देकर अपने हुक्म से बन्दों में से जिसके पास चाहता है भेजता है कि लोगों को बता दो कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं तो मुझी से डरो।" (सूरः अल्–नहल–२)

यही कारण है कि रसूल न तो आन्तरिक मनोवैज्ञानिक कारकों के सामने झुकता है न बाह्य क्षणिक घटनाओं के सामने, और न अपनी रिसालत (नबूवत) को उस रुख़ पर मोड़ता है जिधर माहौल या हालात

मुड़ते हैं। .कुरआन कहता है :–

अनुवादः "और न मन की इच्छा से मुख से बात निकालते हैं, यह कुरआन तो खुदा का हुक्म है जो इनकी तरफ़ भेजा जाता है।"

(सूरः अल–नज़्म–३,४)

इसी प्रकार रसूल इसकी भी सामर्थ नहीं रखता कि अल्लाह के अहकाम में परिवर्तन कर सके अथवा कुछ कमी बेशी कर सके। अल्लाह अपने रसूल की तरफ से कहता है :–

अनुवादः "कह दो कि मुझको अधिकार नहीं है कि इसे अपनी तरफ से बदल दूँ। मैं तो उसी आदेश के अधीन हूँ जो मेरी तरफ आता है। अगर मैं अपने परवरदिगार की नाफरमानी (अवहेलना) करूँ तो मुझे बड़ा कठोर दिन के अज़ाब से डर लगता है।" (सूरः यूनुस –१५)

अल्लाह ने रसूल को झूठ बोलने से भी सुरक्षित रखा :–

अनुवादः "यह लोग चाहते हैं कि तुम नर्मी अख़्तेयार करो तो यह भी नरम हो जायें।" (सूरः अल–कलम–६)

और अल्लाह से किसी ग़लत बात को सम्बद्ध करने, ऐसी बाते बयान करने जिनको अल्लाह ने न कहा हो अथवा उसकी 'वही' व फ़रमान में कतर–बयोंत पर रसूल को दर्दनाक अज़ाब की धमकी दी है :–

अनुवादः "और यह तो परवरदिगार आलम का उतारा हुआ है, अगर यह पैग़म्बर हमारी निस्बत कोई झूठी बात बना लाते तो हम इनका दाहिना हाथ पकड़ लेते फिर इनकी गर्दन की रग काट डालते, फिर तुममें से कोई हमें इससे रोकने वाला न होता।"

(सूरः अल्–हाक्क़ा–४३–४७)

अनुवादः "ऐ पैग़म्बर जो इरशादात (आदेश) ख़ुदा की तरफ से तुम पर नाज़िल हुए हैं, सब लोगों को पहुँचा दो, और अगर ऐसा न किया तो तुम ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाने में असमर्थ रहे। और ख़ुदा तुमको लोगों से बचाये रखेगा। बेशक ख़ुदा नकारने वालों को हिदायत नहीं देता।"

(सूरः अल्–मायदा–६७)

नबियों तथा दूसरे समाज सुधारकों और नेताओं के बीच यही अन्तर है। वह लीडर जिन के पैग़ाम व प्रयास उनके माहौल, सभ्यता व संस्कृति तथा उनकी अनुभूति की देन होती है, और पूरे वातावरण पर छाई हुई बेचैनी की प्रतिक्रिया होती है। यह लीडर हमेशा समय की माँग और मसलहत का लेहाज़ रखते हैं, और प्रायः हालात के सामने झुक भी जाते हैं जिसके फलस्वरूप कुछ सिद्धान्तों को छोड़ना पड़ता है। और कभी दूसरे वर्गों से "लेन–देन" का तरीक़ा भी अपनाते हैं और इनमें से अक्सर यह मानते है कि :–

"चलो तुम उधर को हवा हो जिधर की"

नबियों का जतनपूर्ण आह्वानः—

इसका यह मतलब नहीं कि नबियों ने लोगों को सत्य और धर्म की तरफ बुलाने में हिकमत से काम नहीं लिया। ऐसा नहीं है। .कुरआन कहता है :—

अनुवादः "और हमने .कुरआन को थोड़ा थोड़ा कर के उतारा है ताकि तुम लोगों को ठहर ठहर कर पढ़ कर सुनाओं और हमने इसको धीरे—धीरे उतारा है।" (सूरः बनी इस्राईल—१०६)

अनुवादः "इरादा करता है अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी का और नहीं इरादा करता है सख़्ती का"।

(सूरः अल्—बक़रः १८५)

अनुवादः "और काफ़िर कहते हैं कि इस .कुरआन को एक ही बार में क्यों न उतारा गया ? इस प्रकार धीरे—धीरे इसलिए उतारा गया कि इससे तुम्हारे दिल को क़ायम रखें और इसीलिए हम इसको ठहर ठहर कर पढ़ते हैं।"

(सूरः अल्—फुरक़ान – ३२)

अल्लाह के रसूल (सल्ल) सहाबा को आसानी बरतने और खुशखबरी सुनाने का हुक्म दिया करते थे। अतएव हज़रत मआज़ बिन जबल और अबूमूसा अशअरी से उन्हें यमन भेजते समय कहाः—

"दीन को आसान बना कर पेश करना, सख्त बना कर नहीं। और लोगों को ख़ुशख़बरी सुनाना, नफरत न दिलाना।"

(बुख़ारी–खण्ड, पृष्ठ ६२२)

एक अन्य अवसर पर कहा :–

"तुम आसानी बरतने वाले बना कर भेजे गये हो, सख़्ती करने वाले नहीं।"

(बुख़ारी पृष्ठ ३५)

एक बार आपने हज़रत आयशा (रज़ी०) से कहा :–

"अगर तुम्हारी क़ौम नई नई कुफ़्र से न निकली होती तो मैं बैतुल्लाह को तोड़ कर फिर से इब्राहिम (अ॰लै०) की बुनियाद के अनुसार बना देता।"

(बुख़ारी– २१५)

इब्न मसऊद (रज़ी०) कहते हैं कि "हम लोगों के उकता जाने का ख्याल कर के अल्लाह के रसूल सल्ल० कभी कभी प्रवचन में नाग़ा कर देते थे।" हज़रत जाबिर रज़ी० बयान करते हैं कि "मआज़ बिन जबल अल्लाह के नबी (सल्ल०) के साथ नमाज़ पढ़ते थे और वहाँ से लौट कर जाते तो अपने मुहल्ले वालों की इमामत करते। एक दिन इशा की नमाज़ पढ़ाई और इसमें सूरः बक़्रः पढ़ी जिससे एक आदमी नमाज़ से अलग हो गया। हज़रत मआज़ उस से खिंचे खिंचे रहते थे। अल्लाह के

रसूल को ख़बर हुई तो फ़रमाया – "फ़ितना अँग्रेज़, फ़ितना अँग्रेज़, फ़ितना अँग्रेज़।" इब्न मसऊद बयान करते हैं, "एक व्यक्ति ने अल्लाह क़े रसूल (स०) से बयान किया, "मैं फ़ज्र की नमाज़ में इसलिए पीछे रह जाता हूँ कि अमुक व्यक्ति इसको बहुत लम्बी कर देते हैं। इस पर अल्लाह के रसूल बहुत ग़ज़बनाक हो गये और फ़रमायाः–

" लोगों ! तुम में से कुछ लोग, लोगों को दीन से वहशत दिला कर दूर कर देते हैं। तुम में जो व्यक्ति लोगों की इमामत करे उसको चाहिये कि संक्षिप्त करे क्योंकि उसके पीछे कमज़ोर, बूढ़े और ज़रूरतमन्द भी हैं।" (बुख़ारी)

अल्लाह के रसूल(सल्ल०)से पहले के नबियों के बारे में भी .क़ुरआन में इस प्रकार का उल्लेख आया है :–

अनुवादः "और दी हमने उसको (दाऊद) हिकमत और फ़ैसलाकुन बात।" (सूरः साद–२०)

अनुवादः "यही लोग हैं जिनको हमने दी किताब और हिकमत और नबूवत।" (सूरः अनआ़म–८६)

किन्तु इस आसानी का लेहाज़ सिर्फ तालीम व तरबियत में है जिनका दीन के बुनियादी सिद्धान्तों से कोई सम्बन्ध न हो, मगर जिन बातों का सम्बन्ध दीन के बुनियादी सिद्धान्तों से हो उनमें हर नबी फौलाद से ज्यादा कठोर और पहाड़ से ज्यादा मज़बूत होता है।

नबियों के आह्वान का सबसे महत्वपूर्ण स्तम्भः—

नबियों की दूसरी विशेषता तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत है। प्रत्येक युग में नबियों का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण उद्देश्य अल्लाह के बारे में सही अक़ीदा और ईश्वर तथा भक्त के बीच के सही सम्बन्ध को बढ़ावा देना रहा है। उन्होंने सदैव यही शिक्षा दी है कि अल्लाह ही नफ़ा—नुक़सान पहुँचाने की ताक़त रखता है और सिर्फ वही इबादत के लायक़ है। उन्होंने मूर्ति पूजा तथा जीवित व मृत ऋषि मुनियों की पूजा का सदैव विरोध किया है। इनके बारे में अज्ञान लोगों का विश्वास था कि अल्लाह ने उनको अपना अख़्तियार भी बांट रखा है और इन्सानों के बारे में उनकी सिफ़ारिशें सुनता है। जैसे कोई सम्राट हर इलाक़े के लिए एक हाकिम भेज देता है और उस इलाक़े के प्रबन्ध की सारी ज़िम्मेंदारी उन्हीं के सर डाल देता है।

जिसने .क़ुरआन का अध्ययन किया है वह जानता है कि मूर्ति पूजा को समूल नष्ट करने का प्रयास, नबूवत का बुनियादी लक्ष्य था। नबियों को दुनिया में भेजने का प्रमुख उद्देश्य शिर्क व बुतपरस्ती को समाप्त करना रहा है। .क़ुरआन कहता है :—

अनुवादः "और जो पैग़म्बर हमने तुमसे पहले भेजे उनकी तरफ यही 'वह़ी' भेजी कि मेरे सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं तो मेरी ही इबादत करो।" (सूरः अम्बिया—२५)

अनुवादः "और हमने नूह को उनकी कौम की तरफ भेजा (तो

उन्होंने उनसे कहा) कि मैं तुमको खोल-खोल कर डर सुनाने और यह पैग़ाम पहुंचाने आया हूं कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करो। मुझे तुम्हारे बारे में बड़े अज़ाब का डर है।" (सूरः हूद–२५–२६)

अनुवादः "और हमने आद की तरफ उनके भाई हूद को भेजा, उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम ! ख़ुदा ही की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं। तुम शिर्क कर के ख़ुदा पर महज़ बुहतान (मिथ्यारोपण) बान्धते हो।" (सूरः हूद–५०)

अनुवादः "और समूद की तरफ़ उनके भाई स्वालेह को भेजा तो उन्होंने कहा कि क़ौम ! ख़ुदा ही की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। उसी ने तुम को ज़मीन से पैदा किया और उसमें आबाद किया तो उससे क्षमा माँगो और उसके आगे तौबा करो। बेशक मेरा परवरदिगार नज़दीक भी है और दुआ का क़बूल करने वाला भी।"

(सूरः हूद–६१)

अनुवादः "और मदयन की तरफ़ उनके भाई शोऐब को भेजा तो उन्होंने कहा कि ऐ ! क़ौम ख़ुदा ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। और नाप तौल में कमी न किया करो। मैं तो तुमको ख़ुशहाल देखता हूँ और मुझे तुम्हारे बारे में एक ऐसे दिन के अज़ाब का डर है जो तुमको घेर कर रहेगा।" (सूरः हूद– ८४)

और इब्राहीम अ० की मूर्ति पूजा से मना करने की बात तो बड़े स्पष्ट रूप से .क़ुरआन में कही गयी है :–

अनुवादः "और हमने इब्राहीम को पहले ही से हिदायत दी थी और हम उनके हाल से वाक़िफ़ थे जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा कि यह क्या मूर्तियाँ हैं जिनकी पूजा पर तुम डटे हो। वह कहने लगे कि हमने अपने बाप–दादा को इनकी पूजा करते देखा है। इब्राहीम ने कहा कि तुम भी गुमराह (पथभ्रष्ट) हो और तुम्हारे बाप दादा भी खुली गुमराही में पड़े रहे।" (सूरः अँबिया–५१–५४)

अनुवादः "और उनको इब्राहीम का हाल पढ़कर सुना दो जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि तुम किस चीज़ को पूजते हो। वह कहने लगे हम बुतों को पूजते हैं और उनकी पूजा पर डटे हैं। इब्राहीम ने कहा कि जब तुम उनको पुकारते हो तो क्या वह तुम्हारी आवाज़ को सुनते हैं ? तुम्हें कुछ फ़ायदा दे सकते या नुक़सान पहुँचा सकते हैं ? उन्होंने कहा, नहीं, बल्कि हमने अपने बाप–दादा को इसी तरह करते देखा है। इब्राहीम ने कहा कि तुमने देखा कि जिन को तुम पूजते रहे हो तुम भी और तुम्हारे अगले बाप–दादा भी मेरे दुश्मन हैं। लेकिन दुनिया जहान का पालनहार मेरा दोस्त है जिस ने मुझे पैदा किया और वही मुझे रास्ता दिखाता है और वह मुझे खिलाता और पिलाता है और जब मैं बीमार पड़ता हूँ तो मुझे अच्छा करता है और जो मुझे मारेगा और फिर ज़िन्दा करेगा और वह जिससे मैं उम्मीद रखता हूँ कि क़यामत के दिन मेरे गुनाह बख़्शेगा।"

(सूरः शोरा ६९–८२)

अनुवादः "और किताब में इब्राहीम को याद करो। बेशक वह बड़े सच्चे पैग़म्बर थे जब उन्होंने अपने बाप से कहा कि अब्बा ! आप ऐसी

चीज़ों को क्यों पूजते हैं जो न सुनें और न देखें और न आपके कुछ काम आ सके।"   (सूरः मरयम–४१–४२)

अनुवादः " और इब्राहीम को याद करो जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा की इबादत करो। उससे डरो अगर तुम समझ रखते हो तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है, तो तुम ख़ुदा को छोड़कर बुतों को पूजते और तूफ़ान बाँधते हो। तो जिन लोगों को तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो वह तुमको खाना देने का अख़्तेयार नहीं रखते। बस ख़ुदा ही के यहाँ से रोज़ी माँगो और उसी की इबादत करो और उसी का शुक्र करो, उसी की तरफ तुम लौट कर जाओगे।"

(सूरः अन्कबूत–१६–१७)

अनुवादः "और इब्राहीम ने कहा कि तुम जो ख़ुदा को छोड़कर बुतों को ले बैठे हो, तो दुनिया की ज़िन्दगी में आपस में दोस्ती के लिए। मगर फिर क़यामत के दिन तुम एक दूसरे की दोस्ती से इन्कार करोगे और एक दूसरे पर लानत भेजोगे और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ होगा और कोई तुम्हारा मददगार न होगा।"

(सूरः अन्कबूत २५)

और इसी प्रकार हज़रत यूसुफ़ (अलै० के आह्वान में भी तौहीद (एकेश्वरवाद) को विशिष्ट स्थान प्राप्त है।

अनुवादः "यूसुफ़ ने कहा जो खाना तुमको मिलने वाला है वह आने नहीं पायेगा कि मैं उससे पहले तुमको उनकी ताबीर (अर्थ) बता दूँगा।

यह उन बातों में से है जो मेरे परवरदिगार ने मुझे सिखाई है। जो लोग खुदा पर ईमान नहीं लाते और प्रलय के दिन का इन्कार करते हैं उनका मज़हब छोड़े हुए हूँ और अपने बाप दादा इब्राहीम और इस्हाक़ और याकूब के मज़हब पर चलता हूँ। हमारे लिए उचित नहीं है कि किसी चीज़ को खुदा के साथ शरीक बनायें यह ईश्वर की कृपा है हम पर भी और लोगों पर भी। लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। मेरे जेल खाने के साथियों ! भला कई अलग अलग आक़ा (स्वामी) अच्छे या एक अल्लाह जो एक है और ग़ालिब है। जिन चीज़ों की तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो वह सिर्फ नाम ही नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप–दादा ने रख लिए हैं। ख़ुदा ने इन की कोई सनद नाज़िल नहीं की। सुन रखो कि ख़ुदा के सिवा किसी की हुकूमत नहीं है। उसने कहा है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो। यही सीधा दीन (धर्म) है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते"।

(सूरः यूसुफ ३७–४०)

और फ़िरऔन के लिए हज़रत मूसा अ० की दावत भी यही थी। फिरऔन का दावा था कि वह सबसे बड़े माबूद (पूज्य) सूरज का प्रतीक है, वह कहता था, "मैं हूँ तुम्हारा सबसे बड़ा रब" और जब उसने मूसा की दावत सुनी तो कहाः–

अनुवादः "ऐ दरबारियों ! मैं तुम्हारा अपने सिवा किसी को ख़ुदा नहीं जानता"। (सूरः अल्–क़सस ३८)

और साथ ही धमकी भी दीः–

अनुवादः "अगर तुमने मेरे सिवा किसा और को माबूद बनाया तो मैं तुम्हें क़ैद कर दूँगा।" (सूरः शोरा २६)

कुरआन ने मूर्तिपूजा को "शिर्क अकबर" (महान शिर्क) "गन्दगी" और "झूठी बात" का नाम दिया है। सूरः ह़ज में हैः–

अनुवादः "यह हमारा हुक्म है और जो व्यक्ति अदब की चीज़ों का, जो ईश्वर ने निर्धारित की है, सम्मान करे तो यह परवरदिगार के नज़दीक उसके हक़ में बेहतर है। और तुम्हारे लिए जानवर हलाल कर दिये गये हैं सिवा उनके जो तुम्हें पढ़कर सुनाये जाते हैं। तो बुतों की नापाकी से बचो और झूठी बात से दूर रहो। सिर्फ एक खुदा के होकर और उसके साथ शरीक न ठहरा कर। और जो व्यक्ति किसी को खुदा के साथ शरीक ठहराये तो वह मानों ऐसा है जैसे आसमान से गिर पड़े फिर उसको पक्षी उचक ले जायें या हवा किसी दूर जगह उड़ा कर फेंक दे।" (सूरः ह़ज ३०–३१)

आदिकाल से आज तक :–

यही बुतपरस्ती और शिर्क़ विश्वव्यापी तथा अजर अज्ञानता है और मानवजाति की यही पुरानी कमज़ोरी है। यह वह रोग है जो जीवन के प्रत्येक चरण में मानव जाति के पीछे लगा रहता है, अल्लाह की ग़ैरत (स्वाभिमान) और उसके ग़ज़ब (प्रकोप) को भड़काता है, भक्तों के आध्यात्मिक, नैतिक तथा सभ्यता के विकास की राह में रोड़ा बनता है और भक्त को ऊँचाई से गर्त में ढकेल देता है :–

अनुवादः "हमने इन्सान को बहुत अच्छी सूरत में पैदा किया है फिर धीरे–धीरे उसकी हालत को बदल कर नीचे से नीचे कर दिया"।

(सूरः अत्तीन ४, ५)

यही अज्ञानता मानव को देवताओं के ऊँचे पद से गिरा कर तुच्छ व निरर्थक वस्तुओं के समक्ष सर झुकाने की स्थिति में ला देती है और मानव–शक्ति का गला घोंट देती है उनकी क्षमताओं का ख़ून कर देती है और सर्व शक्तिमान पर उसके विश्वास, उसके आत्मविश्वास तथा स्वमूल्यांकन को समाप्त कर देती है। और यही अज्ञानता मानव को सर्वव्याप्त व सर्वशक्तिमान, सबसे बड़े दाता तथा कृपालु ईश्वर की सुरक्षित शरण से निकाल कर और उसके अपार व असीम गुणों से वंचित कर के, निर्बल, असमर्थ व तुच्छ ऐसे प्राणियों की छत्र–छाया में शरण लेने पर मज़बूर कर देती है जिनकी झोली में कुछ भी नहीं।

अनुवादः "वही रात को दिन में दाख़िल करता है और वही दिन को रात में दाख़िल करता है और उसी ने सूरज और चाँद को काम में लगा दिया है। प्रत्येक एक निश्चित समय तक चल रहा है। यही तुम्हारा परवरदिगार है, उसी की बादशाही है और जिन लोगों को तुम उसके सिवा पुकारते हो वह खजूर की गुठली के छिल्के के बराबर भी तो किसी चीज़ के मालिक नहीं। अगर तुम उनको पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार न सुनें, और अगर सुन भी लें तो तुम्हारी बात को कुबूल न कर सकें और क़यामत के दिन तुम्हारे शिर्क से इन्कार कर देंगे। और ख़ुदा–ए–बाख़बर

की तरह तुमको कोई ख़बर नहीं देगा। लोगों ! तुम सब ख़ुदा के मुहताज हो और ख़ुदा सर्वसम्पन्न (ग़नी) और तारीफ़ वाला है।"

(सूरः फ़ातिर १३–१५)

कुरानी शब्दावलियां सहाबा की नज़र में :–

यही शिर्क और बुतपरस्ती अपने तमाम स्पष्ट व अस्पष्ट स्वरूप में प्रत्येक युग, हर परिस्थिति और हर समाज में नबियों के संघर्ष का विषय रही है। और इसी ने अज्ञानों के क्रोध को भड़का दिया और वह चीख़ पड़े:–

अनुवादः "क्या उसने इतने माबूदों की जगह एक ही माबूद बना दिया। यह तो बड़ी अजीब बात है तो इनमें जो प्रतिष्ठित थे वह चल खड़े हुए और बोले कि चलो और अपने माबूदों की पूजा पर क़ायम रहो। बेशक यह ऐसी बात है जिसका उद्देश्य मान मर्यादा है। पिछले मज़हब में हमने यह कभी सुनी ह। नहीं। यह बिल्कुल बनाई हुई बात है।"

(सूरः सोआद ५–७)

और जिस बुद्धिमान ने भी नबी के युग के इतिहास का अध्ययन किया है उसको इस बात में तनिक भी सन्देह न होगा कि उपरोक्त आयतों से सहाबा यही मूर्तियों की खुली पूजा, पहले के अथवा वर्तमान व्यक्तियों के सामने सजदा करने, उनके लिए मानता, उनके नामों की क़समें, उनकी उपासना से ईश्वर के सानिध्य की प्राप्ति, उनके मोक्ष दिलाने पर पूरा विश्वास तथा उनसे नफ़ा–नुक़सान और दुखों को दूर

करने की याचना आदि ही समझते रहे हैं। और इसी प्रकार 'इलाह' (पूज्य) 'रब' (पालनहार) 'इबादत' (उपासना) और 'दीन' (धर्म) से भी इन शब्दों का मात्र धार्मिक भावार्थ ही समझा है। और उनकी वर्णन शैली से स्पष्ट ज्ञात होता है कि उनके कथन में अनेक स्थलों पर इसी भाव से तात्पर्य है। और यह निर्विवाद है।

दीन व धर्म की ओर बुलावे का बुनियादी तत्वः—

और यही सदा के लिए दीनी दावतों और सुधार आन्दोलनों का मूल स्तम्भ तथा पैग़म्बरी की मीरास है :—

अनुवादः "और यही बात अपनी औलाद में पीछे छोड़ गये ताकि वह ख़ुदा की तरफ झुकें।" (सूरः जख़रफ़ २८)

और यही तमाम समाज सुधारकों और अल्लाह की तरफ बुलाने वालों की पहचान है। और अज्ञानता के अन्य स्वरूप जैसे ग़ैर—अल्लाह की भक्ति, ग़ैर—इलाही कानून को स्वीकारना यह सब इसी बुतपरस्ती और शिर्क के अधीन हैं। अतएव शिर्क के महत्व को घटा कर धार्मिक प्रचार के मूल सिद्धान्तों में उसे गौण स्थान देना कदापि उचित नहीं है। अथवा यह कि दोनों के लिए एक मापदण्ड अपनाया जाये। अथवा यह समझ लिया जाये कि वह प्राचीन अज्ञानता की विशेषताओं में से है जिसका ज़माना गुज़र चुका है और अब यह कालातीत हो चुका। क्योंकि ऐसा सोचना नबियों के पावन प्रयासों के हक़ में दुर्भावना को जगह देना होगा और कुरआन के अमरत्व में शंका व सन्देह का प्रर्याय होगा। और इस विश्वास में अविश्वास का पर्यायवाची होगा कि नबियों की कार्यशैली

ही उत्तम कार्यशैली है।

नौजवान प्रचारकों और लेखकों से :–

प्रिय नवजवानों ! तुम, अपनी संस्था से आशा है ज्ञानी और सुधारक, लेखक व निबन्धकार और लीडर बन कर निकलोगे। मैं चाहता हूँ कि यहाँ तुमको एक नसीहत (उपदेश) करता चलूँ जो मेरे दीर्घकालीन अनुभव और अध्ययन का निचोड़ है।

ख़बरदार ! तुम्हारी लेखनी और इस्लाम व उसके सिद्धान्तों के प्रस्तुतीकरण का तुम्हारा अन्दाज़ पाठकों को यह अनुभूति कदापि न देने पाये कि मुसलमान इस लम्बी अवधि में घोर अज्ञानता के अन्धकार में भटकते रहे और धर्म को सही तौर पर न समझ सके और कुरआन की आधारभूत शब्दावलियों तथा उनके भावार्थ को समझने में असमर्थ रहे। क्योंकि इससे यह साबित होता है कि इस लम्बी अवधि में यह किताब उदासीनता और अज्ञानता का शिकार रही, इसकी वास्तविकताओं को समझा नहीं जा सका और यह कि वितरण के थोड़े ही समय बाद इससे लाभान्वित होने का क्रम टूट गया। यह तस्वीर कुरआन की आयत (अनुवादः हमने उतारी है यह नसीहत अर्थात कुरआन और हम इसकी हिफाज़त के वायदे करने वाले है,) के सर्वथा विपरीत है। क्योंकि हिफ़ाज़त में इसके अर्थ की समझ, उनकी विवेचना, उसकी शिक्षाओं को व्यवहार में लाना भी सम्मिलित है।

अनुवादः "इसका जमा करना और पढ़वाना हमारे ज़िम्में है, जब हम 'वही' पढ़ा करें तो तुम उसको सुना करो और फिर उसी तरह पढ़ा

करो फिर इसके अर्थ का बयान भी हमारे ज़िम्में है।"

(सूरः अल्–क़ियामः१७–१६)

विचार व चिन्तन की यह शैली जिसे वर्तमान युग के कुछ विचारक और लेखक अपना रहे हैं, अमर तथा क्रान्तिकारी क्षमताओं और कारनामों से भरपूर इस उम्मत (मुसलमानों) पर एक दीर्घकालीन बौद्धिक व ज्ञानमयी अवरोध का आरोप लगाता है। जो वृक्ष अपने जीवन के स्वर्णिम युग में पल्लवित न हो और फले–फूले नहीं उसकी उपादेयता और स्वाभाविक क्षमता स्थायी रूप से सन्दिग्ध हो जाती है और उससे भविष्य में भी किसी बड़ी भलाई की आशा करना कठिन है। १

१– उदाहरण स्वरूप यहाँ मौलाना सय्यद अबुल अअ़ला मौदूदी की लोकप्रिय पुस्तक "कुरआन की चार बुनियादी इस्तेलाहात" के कुछ एक उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं। लेखक 'इलाह', 'रब', 'दीन' और 'इबादत' की विवेचना करने और यह सिद्ध करने के पश्चात् कि कुरआन के अवतरण के समय प्रत्येक वह व्यक्ति जिसे सम्बोधित किया गया था और जिसकी भाषा अरबी थी, इन चारों के वास्तविक अर्थ और भाव से परिचित था, लिखते हैं :–

"लेकिन बाद की सदियों में धीरे–धीरे इन शब्दों के वह मूल अर्थ जो कुरआन के अवतरण के समय समझे जाते थे, बदलते चले गये, यहाँ तक कि हर एक अपनी पूरी व्यापकता से हट कर अत्यन्त सीमित बल्कि अस्पष्ट भावार्थ के लिए ख़ास हो गया।"

(कुरआन की चार बुनियादी इस्तेलाहें पृष्ठ ४)

फलतः कुरआन के वास्तविक भाव का समझना लोगों के लिए कठिन हो गया।"

यद्यपि देखने में यह बात कुछ अधिक संगीन प्रतीत न हो तथापि इसके बड़े दूरगामी परिणाम हैं, क्योंकि यह बात मुसलमानों की क्षमता ही में आशंका उत्पन्न कर देती है। इससे उनका पिछला इतिहास और उनके महापुरूषों के प्रयास तथा उनके महान सपूतों के कारनामों का अवमूल्यन होता है और भविष्य में सन्देह और शंका के द्वार खुल जाते हैं।

यह बात इसके भी विरुद्ध है कि यह दीन इस पीढ़ी को मात्र किताब के रूप में ही नहीं मिला बल्कि एक पीढ़ी ने दूसरी पीढ़ी तक उस के शब्दों उनके भावार्थ बल्कि उन्हें व्यवहार में लाने की विद्या तक को हस्तान्तरित किया। अल्लाह ने कुरआन को 'अल किताबुल मुबीन' और 'अरबी मुबीन' अर्थात् रौशन किताब की संज्ञा दी है और एक जगह कुरआन की आयतों को ठोस और विस्तृत बताया गया है। यह गुण और विशेषतायें भी इस विचार की काट करती हैं कि कुरआन की अनेक बुनियादी बातें लम्बी अवधि तक आँखों से ओझल रहीं।

इस से यह भी निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उम्मत एक लम्बी अवधि तक कुरआन के महत्वपूर्ण तथा बुनियादी शब्दों के भावार्थ से अनभिज्ञ रही है किन्तु हदीस की किताबों से यह साबित होता है कि पिछली उम्मतों के विपरीत यह उम्मत किसी भी काल में सामान्य व विश्वव्यापी अनभिज्ञता से पीड़ित नहीं होगी। स्पेन के विख्यात विद्वान

अबू मुहम्मद अली बिन हज़्म (मृत्यु ४५६ हि०) अपनी पुस्तक 'अल–अहकाम फ़ी उसूलुल अहकाम' में लिखते है:–

"हदीस के विद्वान कहते हैं कि यह बात बिल्कुल सही है कि मुहम्मद स० की उम्मत कभी ग़ैर हक़ (असत्य) पर सहमत नहीं हो सकती, क्योंकि आप (मुहम्मद स०) ने ख़बर दी है कि हर युग मे हक़ (सत्य) के समर्थक होंगे।"

हाफ़िज़ इब्न कसीर अपनी विख्यात तफ़्सीर (व्याख्या) में सूरः निसा की आयत न० ११५ की व्याख्या करते हुऐ लिखते हैं कि," इस उम्मत के लिए इस बात की ज़मानत की गयी है किवह किसी ग़लत चीज़ पर एक मत हो जाने से सुरक्षित कर दी गयी है।"

शेख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया 'इजमा' (मतैक्य)का वर्णन करते हुए लिखते है :–

"उम्मत का इजमा अपनी जगह पर हक़ है, इसलिये कि उम्मत किसी अज्ञानता और अविहित बात पर एक मत नहीं हो सकती।"

(फ़तावा इब्ने तैमिया खण्ड १६ पृ० १७६)

निस्सन्देह इस विचारधारा में हमारे समय के राजनैतिक मूल्यों तथा संगठनों की लोकप्रियता का भी बड़ा दख़ल है। इस्लामी व्यवस्था का कार्यान्वयन अपने आप में अत्याधिक आवश्यक है। इसमें दो मत नहीं हो सकते। मुस्लिम विचारकों व लेखकों का कर्तव्य है कि अपनी पूरी शक्ति इस उद्देश्य की प्राप्ति में लगा दें, लेकिन इसके लिए कुरआन की आयतों

व शब्दावली से निःसंकोच व अपने उद्देश्य को फ़ायदा दें, लेकिन इसके लिए कुरआन की आयतों व शब्दावली से निः संकोच अपने उद्देश्य को सिद्ध करने और सारे कुरआन को इसी रंग में देखने की ज़रूरत नहीं।

नबियों की दावत में पारलौकिक जीवन में आस्था की व्यवस्थाः–

दूसरा महत्वपूर्ण लक्षण जो पैगम्बरी का द्योतक है, पारलौकिक जीवन(आख़िरत) में विश्वास और उसकी लगन है; नबियों की जीवनी का गहन अध्ययन करने वाले महसूस करते हैं, कि जैसे आख़िरत हमेशा उनकी निगाहों के सामने होती है। और वह हर समय स्वर्ग की लालसा में नर्क से अत्यन्त भयभीत रहते हैं। यहाँ कुरआन के उस स्थल का अनुवाद प्रस्तुत कर देना पर्याप्त होगा, जहाँ हज़रत इब्राहीम(अ०) ने आख़िरत का उल्लेख किया है।

अनुवादः–

"और वह जिससे मैं आशा रखता हूँ कि क़ियामत के दिन मेरे गुनाह बख़्शेगा। ऐ परवरदिगार मुझे सद्बुद्धी दे और पिछले लोगों में मेरा अच्छा उल्लेख कर, और मुझे स्वर्ग के वारिसों में कर और मेरे बाप को बख़्श दे कि वह गुमराहों(पथभ्रष्ट) में से हैं। और जिस दिन लोग उठा खड़े किये जायेंगे, मुझे लज्जित न कीजिए, जिस दिन न माल ही कुछ फ़ायदा दे सकेगा और न बेटे। हाँ जो व्यक्ति खुदा के पास पवित्र हृदय लेकर आया वह बच जायेगा, और स्वर्ग परहेज़गारों के करीब कर दी जायेगी और नर्क गुमराहों के सामने लायी जायेगी।"

(सूरः शोरा ८२–६१)

हज़रत यूसुफ़ अ० भी आख़िरत को इसी तरह देखते हैं, यद्यपि वह

उस समय मिस्र के महान पद पर आसीन थे। मिस्र जैसा हरा भरा देश उनकी सत्ता के अधीन था। अपने बूढ़े बाप तथा परिवार के सदस्यों से मिल कर उन्हें वास्तविक प्रसन्नता प्राप्त हुई थी, उनकी गरिमा और शौर्य को देखकर परिवार वाले भी फूले न समाते थे। किन्तु ऐसे समय में भी यूसुफ अ० के मन मस्तिष्क पर आख़िरत की चिन्ता छायी थी। कुरआन ने इस स्थल का वर्णन इस प्रकार किया है :–

अनुवादः "ऐ मेरे परवरदिगार तूने मुझे हिकमत से भर दिया और स्वपनों के अर्थ बताने का ज्ञान दिया। ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरा वली और कारसाज़ है। तू मुझे दुनिया से अपनी आज्ञापालन की दशा में उठा और आख़िरत में अपने नेक बन्दों में दाख़िल कर"। (सूरः यूसुफ़ १०१)

नसीहत और सीख का मूल उत्प्रेरक :–

नबियों की नसीहत और उनकी सीख का प्रमुख कारक आख़िरत की यही परिकल्पना है। यही उनको परेशान करता रहता है। और उन्हें किसी करवट चैन नहीं मिलता। यही आख़िरत की चिन्ता उन्हें बेचैन रखती है।हज़रत नूह(अलै०) का उल्लेख करते हुए कुरआन कहता है :–

अनुवादः– "और हमने नूह को उनकी कौम की तरफ भेजा तो उन्होंने उन से कहा कि मैं तुमको खोल खोल कर डर सुनाने और यह पैग़ाम (सन्देश) पहुंचाने आया हूं कि खुदा के सिवा किसी की इबादत न करो, मुझे तुम्हारे लिये बड़े प्रकोप का डर है।"

(सूरः हूद ३५–३६)

और इसी प्रकार हज़रत हूद(अलै०) का उल्लेख करते हुए कुरआन कहता है :–

अनुवादः "और उससे जिसने तुमको उन चीज़ों से मदद दी जिनको तुम जानते हो डरो। उसने तुम्हें चारपायों और बेटों से मदद दी और बाग़ों और चश्मों से। मुझको तुम्हारे बारे में बड़े कठोर दिन के प्रकोप का भय है।" (सूरः शोरा १३२–१३५)

और इसी प्रकार हज़रत शोऐब (अलै०) के बारे में कुरआन कहता है :–

अनुवादः "मैं तो तुमको खुशहाल देखता हूँ और अगर तुम ईमान न लाओगे तो मुझे तुम्हारे बारे में एक ऐसे दिन के प्रकोप (अज़ाब) का डर है जो तुम को घेर कर रहेगा।" (सूरः हूद ८४)

पारलौकिक जीवन मे आस्था का प्रभाव बाद के लोगों पर :–

यह दृष्टिकोण केवल नबियों तक ही सीमित नहीं रहा। बल्कि उनके बाद उनके अनुयायियों पर भी इसका प्रभाव पड़ा उनके लिये भी यह दुनिया क्षणभंगुर तथा नापायदार है। कुरआन में इसका उल्लेख इस प्रकार आया है :–

अनुवादः "भाइयों ! यह दुनिया की ज़िन्दगी चन्द रोज़ फ़ायदा उठाने की चीज़ है। और जो आख़िरत है वही हमेशा रहने का घर है।

जो बुरे काम करेगा उसको बदला भी वैसा ही मिलेगा। और जो नेक काम करेगा, स्त्री हो या पुरुष, और वह ईमान वाला भी होगा तो ऐसे लोग जन्नत में जायेंगे वहाँ उनको बेहिसाब सवाब मिलेगा।"

(सूरःमोमिन ३६–४०)

और फ़िरऔन के जादूगरों के मूसा अ० पर ईमान लाने के बाद जब फ़िरऔन ने उनको दर्दनाक सज़ा की धमकी दी तो उन्होंने तत्काल उत्तर दिया–

अनुवादः "उन्होंने कहा जो तर्क हमारे पास आ गये हैं उन पर और जिसने हमको पैदा किया है उस पर हम आपको कदापि प्राथमिकता नहीं देंगे। तो आप को जो हुक्म देना हो दे दीजिये, और आप जो हुक्म दे सकते हैं वह सिर्फ़ इस दुनिया की ज़िन्दगी में दे सकते हैं। हम अपने परवरदिगार पर ईमान ले आये ताकि वह हमारे गुनाहों को माफ़ करे और उसे भी जो आपने हमसे ज़बरदस्ती जादू कराया। और खुदा बेहतर और बाक़ी रहने वाला है। जो व्यक्ति अपने परवरदिगार के पास पापी होकर आयेगा तो उसके लिए जहन्नम है जिसमें न मरेगा न जियेगा, और जो उसके सामने ईमानदार हो कर आयेगा और सद्कर्म किये होंगे तो ऐसे लोगों के लिए ऊँचे ऊँचे दर्जे हैं अर्थात् सदैव रहने के बाग़ जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, हमेशा उनमें रहेंगे और यह उस व्यक्ति का बदला है जो पाक और पवित्र हो।"

(सूरः ताहा ७२–७६)

कर्म का उद्देश्य आख़िरत में मिलने वाले बदले पर निर्भर है :–

ऐसा नहीं हो सकता कि नबी अपने मानने वालों को राजनीति व शासन अथवा माया की लालच दिलायें और उसे उनके ईमान की क़ीमत और अपने अनुयायी बनने का बदला बतायें। बल्कि इसके विपरीत मायाजाल, गर्व और लोगों पर छा जाने का विरोध करते हैं। कुरआन कहता है :–

अनुवादः "वह जो आख़िरत का घर है हमने उसे उन लोगों के लिए तैयार कर रखा है जो देश में व्यक्तिगत उठान और फ़साद का इरादा नहीं करते और अच्छा प्रतिफल तो परहेज़गारों ही का है।"

(सूरः क़सस–८३)

नबी अपने अनुयायियों में अल्लाह की रहमत (दया) की उम्मीद और तलब पैदा करते हैं, ईश्वर के प्रकोप से डराते हैं, कर्म का सम्बन्ध आख़िरत के बदले से जोड़ते हैं और बताते हैं कि ईमान, अनुसरण तथा प्रायश्चित ईश्वर की करुणा को जोश में लाते हैं, रोज़ी बिखेरते हैं, बरसात लाते हैं और लोगों को अकाल तथा सूखा से छुटकारा दिलाते हैं। नूह अ० अल्लाह से अपनी क़ौम का दुर्भाग्य वर्णन करते हुए कहते हैं:–

अनुवादः "और कहा अपने पालनहार से क्षमा माँगों कि वह बड़ा क्षमा करने वाला है, वह तुम पर आकाश से पानी बरसायेगा, और माँ और बेटों से तुम्हारी सहायता करेगा और उन में तुम्हारे लिए नहरें बहा

देगा।" (सूरः नूह १०—१२)

इसी प्रकार हूद(अलै०) अपनी क़ौम से कहते हैं :—

अनुवादः "और ऐ क़ौम अपने पालनहार से क्षमा माँगो, फिर उसके आगे तौबा करो, वह तुम पर आसमान से मूसलाधार पानी बरसायेगा और तुम्हारी ताक़त बढ़ायेगा और देखो पापी बनकर अवज्ञापालन न करो।"

(सूरः हूद — ५२)

नबियों और उनके बाद के अनुयाइयों के आचरण में आख़िरत का स्थानः—

पारलौकिक जीवन को महत्व देना तथा दुनिया पर उसे प्राथमिकता देना और मायाजाल से दूर रहने का आह्वान करना मात्र मौखिक न था और न यह कि यह नसीहत सिर्फ़ उम्मतियों व अनुयायियों के लिए थी बल्कि यही उनके जीवन का मूल सिद्धान्त और उनका आचरण था। वह इस पर सर्व प्रथम स्वयं ईमान लाते थे और अपने खास लोगों में, अपने ख़ानदान में और अपने पूरे जीवन में इसी मार्ग पर चलते रहते थे।

हज़रत शुऐब(अलै०) नबियों के पूरे गिरोह के उदगार व्यक्त करते हुए कहते हैं :—

अनुवादः "और मैं नहीं चाहता कि जिस बात से मैं तुम्हें मना करूँ स्वयं उसको करने लगूँ। (सूरः हूद ८८)

वह दुनिया की तरफ़ से निश्चिन्त और आख़िरत की तरफ़ हमेशा ध्यानमग्न रहते थे। उन्होंने उच्च पदों को ठुकराया और अपने लक्ष्य की पूर्ति में उनको बलिदान कर दिया और "स्वर्णिम अवसरों" को खो दिया, यद्यपि कि उनमें अधिकांश ऐसे थे जिनका भविष्य उज्जवल था और जो अपनी सूझ–बूझ, निपुणता, परिवार की प्रतिष्ठा और शाही दरबार से सम्बन्ध के कारण अपने समय के उत्कृष्ठ तथा 'चमकते' लोगों में से थे। हज़रत सालेह (अ०) की कौम ने इस ओर संकेत करते हुए कहा थाः–

अनुवादः "ऐ सालेह ! तुम तो हमारी आशाओं के केन्द्र बिन्दु थे"।

(सूरः हूद –६२)

और नबियों के घर वालों ने भी यही मार्ग अपनाया जैसा कि नबियों के सरदार मुहम्मद स० से कहा गया :–

अनुवादः "ऐ पैग़म्बर ! अपनी बीवियों से कह दो कि अगर तुम सांसारिक जीवन तथा उसके सौन्दर्य के इच्छुक हो तो आओ मैं तुम्हें कुछ माल दूँ और भली प्रकार विदा कर दूँ। और यदि तुम खुदा और उसके पैग़म्बर तथा आख़िरत के घर अर्थात् जन्नत की तलबगार हो तो तुम में जो नेक काम (सत्कर्म) करने वाली हैं उनके लिए खुदा ने महान् बदला तैयार कर रखा है।" (सूरः अल– अहज़ाब २८–२६)

और आप की सोहबत की तासीर थी कि आपकी तमाम बीवियों ने अल्लाह और उसके रसूल ही को प्राथमिकता प्रदान की और दूसरों के साथ खुशहाली की ज़िन्दगी से मुँह मोड़ कर अल्लाह के रसूल स० के

साथ तंगदस्ती की ज़िन्दगी को पसन्द किया।

नबियों और समाज सुधारकों के अह्वान में अन्तरः–

नबियों की आख़िरत पर ईमान की दावत (बुलावा) सिर्फ नैतिक सुधार की आवश्यकता के अधीन नहीं थी। नबियों की कार्यप्रणाली तथा सुधारात्मक आन्दोलनों में यह अन्तर है कि नबियों की कार्यप्रणाली में ईमान व अन्तःकरण की भावनायें मनुष्य के चिन्तन और कर्म पर पूरी तरह छा जाती हैं किन्तु सुधारात्मक कार्यो में यह बातें केवल स्वीकारोक्ति और नियमावली की हैसियत रखती हैं। आख़िरत के सम्बन्ध में बातचीत करते समय नबियों के अन्दर एक तड़प और तनमयता होती है किन्तु दूसरे लोग जब इसकी बात करते हैं तो नैतिक अथवा सामाजिक ज़रूरत की हद तक।

अगोचर और अनदेखे पर ईमान का मुतालबाः–

पैग़म्बरी की विशेषताओं में से एक चीज़ यह भी है कि नबी 'ईमान–बिल–ग़ैब' (बिना देखे किसी बात पर ईमान लाना और उसे दिल में बिठा लेना) पर बहुत बल देते हैं। और इसे दीन से फायदा हासिल करने की बुनियादी शर्त मानते हैं। कुरआन कहता है :–

अनुवादः "यह क़िताब (कुरआन) निस्सन्देह अल्लाह का कलाम है, खुदा से डरने वालों के लिए हिदायत (गाइड) है, जो ग़ैब पर ईमान लाते और अदब के साथ नमाज़ पढ़ते और जो कुछ हमने उनको दिया है उसी में से ख़र्च करते हैं। और जो किताब (ऐ मोहम्मद) तुम पर उतरी,

और जो किताबें तुम से पहले पैग़म्बरों पर उतरीं सब पर ईमान लाते और आख़िरत का यक़ीन रखते हैं, यही लोग अपने परवरदिगार की तरफ से हिदायत (सद्मार्ग) पर हैं और यही निजात (मोक्ष) पाने वाले हैं।

(सूरः अल बक्रः १–५)

और जो लोग अल्लाह पर ईमान लाते हैं, और इस्लाम पर ईमान लाते हैं उनसे माँग करते हैं कि अल्लाह की उच्च विशिष्टताओं, उसकी अपार महिमा और असीम शक्ति को हृदय से स्वीकार करें, और पैग़म्बरों (ईशदूतों) की लाई हुई और आसमानी किताबों में उल्लिखित तमाम बातों पर सच्चे दिल से ईमान लायें और उन ख़बरों पर, जिनको न कभी मनुष्य ने अनुभव किया न ज्ञान इन्द्रियों ने उनको प्रमाणित किया न बुद्धि ने उनको स्वीकार किया, यक़ीन करें और विश्वास करें कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, जिसको चाहता है पैदा करता है, जो चाहता है करता है, वह महान् सृष्टा है, वह बेमिसाल है, चीज़ों का बनाने वाला, और अपने इरादों में आज़ाद और ख़ुदमुख़्तार है। उसे अपने पैदा किये हुए कारणों व साधनों की भी आवश्यकता नहीं और न वह स्वयं अपने निर्धारित किये हुए तरीक़ों का पाबन्द है, बल्कि वह हमेशा से उनका रचयिता व मालिक है, उनका हाकिम है। क़ुरआन कहता है :–

अनुवाद :: "उसका हुक्म यही है कि जब वह किसी चीज़ को करना चाहे तो उसको 'हो' कहे और वह उसी समय हो जाये।"

(सूरः यासीन ८२)

क़ुरआन मजीद और दूसरी आसमानी किताबों में इस तरह की बातें

जगह जगह मिलती हैं।

कुरआन में दोनो पक्षों के अन्तर को स्पष्ट रूप से बयान किया गया है। एक पक्ष (फ़रीक़) वह है जिसे अल्लाह ने ईमान की दौलत दी है और इस्लाम के लिए उनका सीना खोल दिया है। दूसरा फरीक़ वह है जिनके ज्ञान चक्षु के द्वार ईश्वर की ओर से आई हुई अधिकांश चीज़ों के लिये बन्द कर दिये गये हैं। कुरआन में इस अन्तर को इस प्रकार बयान किया गया है :—

अनुवादः "तो जिस व्यक्ति को ईश्वर चाहता है कि सद्मार्ग दिखाये, उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है और जिसे चाहता है गुमराह करे उसका सीना तंग और घटा हुआ कर देता है, मानों वह आसमान पर चढ़ रहा है। इस प्रकार ईश्वर उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते प्रकोप (अज़ाब) भेजता है।" (सूरः अनाम १२६)

कुरआन ने अल्लाह की ऐसी विशेषताओं का उल्लेख किया है जिनको हृदय से मानना ईमान–बिल–ग़ैब के बिना सम्भव ही नहीं। कुरआन में ऐसी बातों का उल्लेख आया है जिन पर विश्वास ईमान बिल ग़ैब के अलावा किसी के बस का नहीं है। जैसे मूसा अ़लै०और उनके साथियों के लिए समुद्र का फट जाना, पत्थर पर मूसा की चोट से बारह चश्मों का जारी होना, बनी इस्राईल की टोली पर पहाड़ का छाया की तरह उठना और उन्हीं की एक टोली का मौत के बाद ज़िन्दा होना, उन्हीं के कुछ लोगों के चेहरों का बिगड़ जाना, ज़िबह की हुई गाय के एक टुकड़े को छूने से उस गाय का ज़िन्दा होना जिसका मारने वाला

अज्ञात था, इब्राहीम(अलै०)के लिए आग का ठंडा होना, सुलेमान(अलै०)की सिखाई हुई चिड़िया की बातचीत, स्वयं उनका चींटियों की बातचीत को समझना, हवाओं के काँधों पर सुबह–शाम में एक महीने की दूरी तय करना, पलक झपकते में महारानी सबा के सिंहासन का स्थानान्तरण, मछली वाले नबी का किस्सा, उनका मछली के पेट से सही सलामत ज़िन्दा निकलना, हज़रत ईसा (अलै की अस्वाभाविक पैदाइश, पत्थर की कंकरियों से हाथी वालों की मौत, अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ल का मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक फिर वहां से आसमान का सफ़र और इस तरह की अनगिनत घटनायें जिनसे कुरआन और दूसरी आसमानी किताबें भरी पड़ी हैं, इन सब को ईमान बिल ग़ैब ही क़बूल कर सकता है ऐसा ईमान व विश्वास जिसने ऐसे अल्लाह पर यक़ीन कर लिया हो जो सर्वशक्तिमान है।

अनदेखे ईमान और प्रकट पर ईमानः–

जिस ईमान की बुनियाद मात्र अनुभूति तथा अनुभव पर आधारित हो, जो चिरपरिचित चीज़ों का ही साथ दे सकता हो, जो सृजनात्मक विधियों, प्राकृतिक नियमों तथा अनुभूति के आँचल में शरण लेता हो वह ईमान कारावासी और बंदी ईमान है। सीमित और सशर्त ईमान है। वह विश्वसनीय नहीं हो सकता, न धर्म का साथ दे सकता है न ही नबियों की दावत उन पर अ विश्वास, उनका त्वरित अनुसरण तथा संघर्ष के मार्ग में तल्लीनता से कोई ताल मेल रखता है। वास्तव में इसका ईमान नाम रखना ही उचित नहीं। वह तो मात्र ज्ञान व खोज है, तार्किक नियमों के सामने ढाल की लड़ाई है, अनुभूति तथा अनुभव का असीम अनुसरण है, इसमें

कोई विशिष्टता नहीं और न वह धर्म के साथ विशिष्ट है। क्योंकि हर समझदार व्यक्ति अपने जीवन में अपने अनुभवों, अपने ज्ञान अपनी अनुभूति तथा अपनी बुद्धि पर विश्वास रखता है।

इस "तार्किक" ईमान वाले व्यक्ति को आसमानी किताबों और ऐश्वरीय धर्मों के सामने पग पग पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह धर्म की आत्मा तथा उसकी वास्तविकताओं के सम्बन्ध में निरन्तर खींच–तान से ग्रसित रहता है। क्योंकि 'लकड़ी के पैर' तेज़ चलने, आज़ादी के साथ क़दम उठाने तथा इधर उधर मुड़ने में इन्सान का साथ नहीं दे सकते, और 'तर्क' की स्थिति लकड़ी के पैर जैसी है। यही कारण है कि शुद्ध तार्किक बुद्धि वाला व्यक्ति आसमानी किताबों के बयान किये हुए तथ्यों और अपनी अनुभूति के बीच की खाई को पाटने के प्रयास में या तो परिवर्तन तथा स्पष्टीकरण का सहारा लेता है अथवा नास्तिक होने पर बाध्य हो जाता है।

अनुवादः "सच्चाई यह है कि जिस चीज़ के ज्ञान पर यह क़ाबू (नियंत्रण) नहीं पा सके उसे नासमझी से झुठला दिया, और अभी उस की वास्तविकता उन पर खुली ही नहीं।" (सूरः यूनुस–३९)

परन्तु गैब (अगोचर) पर ईमान रखने वाला और ईश्वर की सत्ता व सर्वशक्ति पर विश्वास रखने वाला, नबियों की लाई हुई उनकी बयान की हुई ख़बरों तथा ईश्वर के बारे में उनकी बताई हुईबातों पर विश्वास और उनकी पुष्टि करने वाला खींच–तान व असमंजस का शिकार नहीं होता बल्कि वह आराम व शान्ति अनुभव करता है। धर्म से एक प्रकार

का लगाव महसूस करता है। वह सोच–विचार कर ईश्वर पर ईमान लाता है और नबी (ईशदूत) की सच्चाई को स्वीकार कर सन्तुष्ट हो जाता है अब वह बड़ी आसानी के साथ उन तमाम बातों पर विश्वास जमा लेता है जिन्हें ईश–दूत ने बयान की हों।

कुरआन में इन दोनों प्रवृत्तियों के अन्तर का उल्लेख इस प्रकार आया है :–

अनुवादः "(ऐ पैग़म्बर!) वही है जिसने तुम पर (यह) किताब उतारी जिसमें से कुछ आयतें मुहकम (पक्की) हैं, (और) वही किताब का आधार है और कुछ (आयतें) मुतशाबिह (हैं)।

१. कुरआन में दो तरह की आयतें हैं – एक मुहकम, दूसरी मुतशाबिह। मुहकम (पक्की) वह वाक्य है जिनका अर्थ बिल्कुल साफ है और इसलिए उनका समझना सहज है। मुतशाबिह वह हैं जिनकी शब्द–रचना ऐसी है कि उनसे कई अर्थ निकल सकते हैं। हालाँकि अर्थ तो सही एक ही होता है। इसलिए इनमें माने निकालने की धुन में न पड़ना चाहिये। इससे अपने व दूसरों को भ्रम में डालेंगे। तो जिन लोगों के दिलों में कजी (कुटिलता) है वह कुरआन की उन्हीं मुतशाबिह आयतों के पीछे हो लेते हैं, ताकि उनका असली मतलब खोज निकालें और (इस तरह) फ़साद पैदा करें। हालांकि अल्लाह के सिवाय उसका (असली) मतलब किसी को मालूम नहीं। और जो लोग इल्म में बड़ी पैठ रखते हैं वह तो इतना ही कहते हैं कि इन पर हम ईमान लाये, (यह) सब हमारे परवरदिगार की तरफ से हैं। और शिक्षा उन्हीं के पल्ले पड़ती है जिनको

बुद्धि है। (वे बुद्धि वाले कहते हैं) ऐ ! परवरदिगार ! हमको सीधी राह दिखाने के बाद हमारे दिलों को डावाँडोल न करे और अपनी सरकार से हम पर रहमत (कृपा प्रदान) कर। कोई शक नहीं तू ही बड़ा देने वाला है।" (सूरः आले इमरान –७,८)

और जो व्यक्ति अपनी अनुभूति और इच्छा के अनुकूल चिरपरिचित चीज़ों में ही जीवन व्यतीत कर सकता है उसी को स्वीकारता है और उन्हीं पर ईमान लाता है, उसकी प्रवृत्ति का उल्लेख करते हुए कुरआन कहता है :–

अनुवादः " और लोगों में कोई कोई ऐसे भी हैं जो अल्लाह की इबादत किनारे खड़े हो कर करते हैं (यानी दिल से इस्लाम कुबूल नहीं करते) फिर अगर कोई उनको फ़ायदा पहुंचा तो उसी में चैन पकड़ी (यानी इस्लाम में दाख़िल रहे), और अगर किसी आज़माइश (की आफ़त) से गुज़रना पड़ा तो जिधर से आये थे उल्टे ही लौट (कर फिर काफ़िर हो) गये। (ऐसों ने) दुनिया और आख़िरत दोनों ही गँवा दी। ज़ाहिर (प्रत्यक्ष) घाटा यही है।" (सूरः हज्ज–११)

खेद है कि हमारे इस्लामी साहित्य तथा हमारी धार्मिक शिक्षा और धर्म की ओर लोगों को बुलाने के ढंग ने विश्वास एवं लगन के साथ अनदेखे ईश्वर पर निष्ठा की ओर आह्वान में बड़ी उदासीनता दिखाई है और कुछ एक हमारे समकालीन लेखक धर्म को आधुनिक बौद्धिक ढाँचे में ढालने का प्रयास करते हैं। और धर्म की ऐसी व्याख्या कर रहे हैं जो आधुनिक ज्ञान तथा आधुनिक विचारों से मेल खाती हैं। इस बात ने एक सीमा तक अप्रत्यक्ष रूप से अनदेखे ईश्वर पर निष्ठा (ग़ैब पर ईमान) की

भावना को नुक़सान पहुंचाया है। और शिक्षित मुस्लिम युवा इसी के आदी होते जा रहे हैं। वह उन्हीं चीज़ों की ओर लपकते हैं जो चिरपरिचित हों, निर्धारित नियमों के अनुकूल हों और स्वाभाविक जीवन में बार बार सामने आ रही हों। किन्तु जो घटनायें इन नियमों की कसौटी पर खरी न उतरती हों तथा जिनकी प्रमाणिकता में गहने विश्वास और संवाददाता की सच्चाई पर भरोसे की ज़रूरत हो, उनको बड़े अनमने ढंग से और बड़ी कठिनाई के साथ स्वीकार करते हैं। न उनकी ओर लपकते हैं न उनका स्वागत् करते हैं। और उनको इन घटनाओं की पुष्टि में अपनी बार बार सुनी हुई इस बात का विरोध दिखाई पड़ता है कि इस्लाम एक बौद्धिक एवं ज्ञानमयी धर्म है। निस्सन्देह इस्लाम की यह परिभाषा सर्वथा सही है, और यही सही है कि न्याय शास्त्र तथा नकल किये हुये शास्त्र में कोई विरोधाभास नहीं। जैसा कि इब्ने तैमिया कहते हैं – माकूलात व मन्कूलात में कोई विरोधाभास नहीं। किन्तु मनुष्य के बौद्धिक स्तर तथा मापदण्ड भिन्न–भिन्न होते हैं। हमारे युग के बड़े नगरों तथा राजधानियों में पाई जाने वाली विचित्र चीज़े और सभ्यता की सुख सुविधायें एक सीधे साधे ग्रामीण के गुमान में भी नहीं आ सकती हैं। इसी प्रकार एक साधारण आदमी की बुद्धि आधुनिक युग में मनुष्य के अविष्कारों जैसे अणु शक्ति पर नियंत्रण तथा कृत्रिम चाँद आदि को स्वीकार नहीं कर सकती।

इस सम्बन्ध में महान विद्वान अब्दुर्रहमान इब्ने ख़लदून का कथन स्वर्णिम अक्षरों में लिखने योग्य है :–

"तुम चिन्तन की इस मूर्खता पर कदापि भरोसा न करो कि वह

सृष्टि एवं उसके कारण व कारक का परिसीमन कर सकती है, और उसकी उत्पत्ति के सारे विवरण से परिचित हो सकती है। इस मामले में चिन्तन के स्वेच्छाचार को मूर्खता पर आधारित समझो। और यह समझ लो कि प्रत्येक समझदार आदमी प्रारम्भ में यही समझता है कि सारी सृष्टि उसके ज्ञान और समझ की सीमा में आ गये हैं कोई चीज़ उससे परे नहीं रही। किन्तु वास्तविकता इसके विपरीत है। तुम बहरे को देखते हो कि उसके लिए सृष्टि मात्र चार ज्ञानेन्द्रियों पर निर्भर है। सुनने की किस्म उसकी परिधि से बाहर है। इसी प्रकार अन्धा देख नहीं सकता। और महसूस न की जाने वाली चीज़ों में यदि उनके पूर्वजों तथा उनके अपने समय के बड़े बूढ़ों का अनुकरण से प्राप्त ज्ञान न हो तो उनके मानने से भी इन्कार कर दें। किन्तु वह इन महसूस न होने वाली चीज़ों को स्वीकारने में जन साधारण का अनुकरण करते हैं। और इनको अपनी प्रवृत्ति एवं सूझ–बूझ की मदद से स्वीकार नहीं करते। अगर बेज़बान बोलने लगें और उनसे पूछा जाये तो हम उनको न्याय शास्त्र (माकूलात) को नकारने वाला ही पायेंगे। और उनके निकट न्यायशास्त्र का पूरा ख़ज़ाना अविश्वसनीय होगा। और जब यह बात स्पष्ट हो गयी तो बहुत सम्भव है कि ऐसी विवेक की शक्तियाँ संसार में मौजूद हों जो हमारी समझ से बाहर हों। क्योंकि हम उन्हीं चीज़ों को अनुभव करते हैं जिनका सम्बन्ध प्राणि जगत, सृष्टि मानव के ज्ञान से कहीं अधिक है और प्राणि जगत का परिसीमन सम्भव नहीं है। ईश्वर ही उनका परिसीमन कर सकता है। अतः प्राणिजगत के परिसीमन के बारे में अपने ज्ञान व विवेक का खण्डन कर दो तथा ईशदूतों के बताये हुए विश्वास/व कर्म पर क़ायम रहो, क्योंकि वह तुम्हारे शुभचिन्तक हैं और तुम्हारे लिए लाभदायक

चीज़ों को वह तुम से अधिक जानते हैं और उनका विवेक तुम्हारे विवेक से ऊँचा है। और उनकी बुद्धि का वृत्त तुम्हारी बुद्धि के वृत्त से विशाल है। और यह बुद्धि और विवेक के लिए कोई अवगुण नहीं क्योंकि बुद्धि एक तराजू की तरह है और उसके फैसले अन्तिम तथा आवश्यम्भावी हैं उनमें ग़लती या झूठ लेशमात्र नहीं। तुमको यह आशा नहीं करनी चाहिये कि इसी तराजू से एकेश्वरवाद व आख़िरत (परलोक) की बातों तथा ऐश्वरीय गुणों को भी तौल सकोगे क्योंकि यह आशा के विपरीत है और इसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक व्यक्ति सोना तौलने वाला कांटा देखे तो यह आशा करने लगे कि उसी से पहाड़ भी तौल सकता है। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि कांटा अपनी तौल में सच्चा नहीं। बुद्धि की भी सीमा है जहां उसको ठहरना पड़ता है उससे वह आगे नहीं बढ़ सकती कि वह ईश्वर के गुणों को भी अपनी समझ के दायरे में दाख़िल कर ले, बुद्धि ईश्वर के पैदा किये हुए अगणित कणों में से एक तुच्छ कण है।"

कोई औपचारिकता नहीं और प्राकृतिक स्वभाव पर भरोसा:-

नबियों की विशेषताओं व विशिष्टताओं में से एक यह भी है कि वह स्वरचित औपचारिकताओं से सामान्यतः अपने पूरे जीवन में तथा विशेषकर अपने प्रवचन व तर्क में बहुत दूर रहते हैं। अन्तिम नबी मुहम्मद स० का यह कथन समस्त भूतपूर्व नबियों की दशा का चित्रण कर रहा है :-

अनुवादः "मैं तुमसे इसका बदला नहीं माँगता और न मैं बनावट करने वालों में हूँ। यह कुरआन तो ज्ञानियों के लिए नसीहत (उपदेश) है।

नबी हमेशा सामान्य बुद्धि को सादा और सरल ढंग से सम्बोधित करते हैं जिसका समझना न तो दुर्लभ बुद्धि पर निर्भर होता है, न विशिष्ट ज्ञान पर, न विभिन्न ज्ञान–विज्ञान व कला कौशल के विस्तृत व गहन अध्ययन पर, न ज्ञानमयी शब्दावलियों की जानकारी पर, न तर्कशास्त्र, गणित, खगोलशास्त्र तथा वैज्ञानिक ज्ञान की प्राप्ति पर बल्कि जिस प्रकार विशिष्ट जन इससे रूचि लेते हैं उसी प्रकार जन साधारण भी इस को समझते हैं और जिस प्रकार ज्ञानी पंडित इससे लाभान्वित होते हैं उसी प्रकार कम ज्ञान रखने वाले भी इससे लाभ उठाते हैं। प्रत्येक अपने ज्ञान व समझ के अनुसार इस से लाभ उठाता है।

नबियों की शिक्षा (उपदेश) जिस प्रकार सरल व सहज जीवन व्यतीत करने वाले जन समुदाय की परिस्थितियों के अनुकूल होती है। वह न जटिल समस्याओं को उठाते हैं, न उन्हें आवश्यक बताते हैं। उनकी बात मीठे और आनन्दमय पानी की तरह होती है, प्रत्येक व्यक्ति उसका उपभोग करता है और उसका ज़रूरतमन्द भी रहता है। शाह वली उल्लाह साहब देहल्वी अपनी अद्वितीय रचना "हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा" में इस बिन्दु की ओर संकेत करते हुए लिखते हैं :–

अनुवादः "नबियों के आचरण में यह भी दिखाई पड़ता है कि वह लोगों से उनकी समझ और ज्ञान के अनुसार बात करते हैं और यह

इसलिए कि मानव जहां भी होगा, मूल सृष्टि में उसकी समझ की एक सीमा होगी, कुछ शास्त्र ऐसे भी हैं जिन तक चमत्कार के बिना कोई नहीं पहुंच सकता जैसे नबी और औलिया की पवित्र आत्मा अथवा कठोर परिश्रम व साधना के द्वारा उस तक पहुंचना सम्भव है जो उसके अस्तित्व को अपनी पहुंच से बाहर के शास्त्रों को प्राप्त करने योग्य बना दे अथवा दीर्घकालीन शास्त्र आदि का अभ्यास उनकी प्राप्ति को सम्भव बना दे।

और नबी लोगों को उनको सहज समझ के अनुसार सम्बोधित करते हैं जो उनको मूल सृष्टि के अनुसार प्रदान की गई है। और वह दुर्लभ वस्तुओं की ओर ध्यान नहीं देते। यही कारण है कि वह लोगों को इस बात का दावा करने को नहीं कहते कि अपने पालनहार (रब) को आध्यात्म ज्योति तथा अनुभवों के द्वारा पहिचानें, अथवा तर्क व अनुमान के द्वारा। और न इसका दावेदार बनाते हैं कि उसको हर तरफ से त्रुटियों से पाक समझें! क्योंकि साधना में लीन रहने वाले के लिए लगभग असम्भव है। जो लम्बे समय तक शिष्टों के साथ न रहा हो और उन्होंने उसे निष्कर्ष निकालने व तर्क के तरीके, पसन्द का कारण, जटिल व समझ से बाहर प्राक्कथन के द्वारा अगोचर व गोचर का अन्तर भली प्रकार समझा ना दिया हो और वह तमाम चीज़ें मस्तिष्क में न बिठा दी हों जिन पर विद्वत परामर्शदाता कथाकारों पर गर्व किया करते हैं।

और इन लोगों की एक आदत यह भी है कि वह ऐसी चीज़ों में

व्यस्त नहीं होते जो काम–वासना (नफ़्स) की दुरूस्ती अथवा जनसमुदाय की नीति से सम्बन्धित न हों जैसे वायुमण्डल की घटनाओं के कारणों का वर्णन उदाहरण के लिए वर्षा, ग्रहण, आदि अथवा विचित्र प्राणियों तथा वनस्पति या चांद सूरज की गति,, इसी प्रकार प्रतिदिन की घटनायें, नबियों, बादशाहों तथा शहरों के क़िस्से आदि के अलावा कुछ एक मामूली बातों के जिन से उनके कान पहले से परिचित हों। और यह चीज़ें भी ईश्वर के वरदानों व अभिषापों के द्वारा उल्लेख के अन्तर्गत संक्षेप में बयान की जाती हैं, और इन जैसी चीज़ों में उपमा का प्रयोग भी उचित (जायज़) होता है। और इसी सिद्धान्त के अनुसार जब लोगों ने हज़रत मुहम्मद स० से चाँद के घटने बढ़ने का कारण पूछा तो अल्लाह ने इसकी उपेक्षा की, और महीनों के लाभ वर्णन किये। सूरः बक्रः की १८६वीं आयत में हैं :–

अनुवादः "लोग आपसे सवाल करते हैं चांद के बारे में, आप कह दीजिये कि यह लोगों और हज के लिए समय मालूम करने का साधन है।"

तुम बहुत से लोगों को देखते हो कि इन कौशलों तथा इनके अतिरिक्त कारण व प्रभाव से लगाव के कारण उनकी रूचि दूषित हो गई है और वह लोग रसूलों की वाणी को अवसर के विपरीत प्रयोग करते हैं।" (हुज्जततुल्लाहिल बालिग़ा खण्ड–१ पृष्ठ ८६)

और इसी पुस्तक में दीन (धर्म) की आसानी व सहूलत के कारणों का उल्लेख करते हुये कहते हैं :–

"और इन्हीं में से एक यह भी है कि नबियों ने लोगों को सम्भाषण की कला व नियमों की जटिलतायें मालूम करने से पूर्व, मूल सृष्टि के अनुसार प्रदत्त समझ के स्तर के अनुकूल सम्बोधित किया है।"

और शाह साहब से पहले इमाम गजाली इसी प्रकरण पर कुरआन की शैली की उत्कृष्ठता का उल्लेख करते हुये लिखते हैं:–

अनुवादः "कुरआन के तर्क आहार की तरह हैं उनसे हर इन्सान फ़ायदा उठाता है, और मीमाँसकों का तर्क दवा की तरह, इनसे कुछ एक लोग फ़ायदा उठाते हैं और अधिकांश लोग नुकसान, बल्कि कुरआन के तर्क पानी की तरह हैं जिस से दूध पीते बच्चे भी फायदा उठाते हैं औरं बलवान इन्सान भी, और दूसरी तमाम दलीलें (तर्क) आहार की तरह हैं जिससे बलवान कभी फायदा उठाते हैं, कभी बीमार हो जाते हैं, और बच्चों को कुछ भी फायदा नहीं पहुंचता।"

(इल्मुलकलाम पृष्ठ २०)

इमाम फ़ख़रूद्दीन राज़ी कहते हैं :–

"मैंने वर्णन शैली तथा दर्शन शास्त्र के सिद्धान्तों पर गहन विचार किया, किन्तु मैंने नहीं देखा कि वह किसी बीमार को स्वास्थ्य लाभ देते हैं, या किसी प्यासे की प्यास बुझाते हैं, और मानव मन से निकटतम शैली कुरआन की शैली को पाया, और जो कोई भी मेरी तरह प्रयोग करेगा, उसको यही बात नज़र आयेगी।"

पैग़म्बरी की स्वाभाविक विशेषताओं उसके लक्षण नबियों के अन्दर तथा प्रचार व प्रसार में अथवा निजी जीवन तथा लोगों के साथ सामाजिक जीवन में उनके चरित्रों से इस युग के लोगों की दूरी व अनभिज्ञता के कारण मैंने इस विषय को अधक विस्तार के साथ वर्णन किया है। और यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि बनावटी वर्णन शैली, तर्क शैली तथा प्रचार के आधुनिक नियमों ने घोर अन्याय किया है। यहां तक कि लोग नबियों के तरीक़ों और उनके चरित्रों से अनभिज्ञ हो गये, बल्कि उनके तिरस्कार तक पहुँच गये। और क़ुरआन का समझना उनके लिए बहुत कठिन हो गया। अब स्थिति यह है कि वह इसको जतनपूर्ण शैली का आनन्द उठाने की क्षमता ही नहीं रखते। और असल अर्थ से हटकर बनावटी शैली का सहारा लेने लगे हैं। यद्यपि आज तक धर्म प्रचार में नबियों की जीवनी ही आदर्श जीवनी है, तथा क़ुरआन की शैली ही स्वाभाविक व प्रभावशाली शैली है जिससे मन के द्वार खुल जाते हैं और हर वर्ग के लोग इसमें पर्याप्त विवेचना और दुख की दवा पाते हैं।

तीसरा व्याख्यान

सद्मार्ग के अगुवा और मानवता के सरदारः–

मानव जाति अपने दीर्घ इतिहास में सदैव तथा कथित लीडरों व सत्तारूढ़ व्यक्तियों का खेल और मज़ाक़ तथा क़ानून बनाने वालों व शासकों के प्रयोगों का निशाना बनती रही है। ऐसे लोगों ने अपने ही जैसे इन्सानों के साथ वह बर्ताव किया जो एक बच्चा काग़ज के किसी टुकड़े के साथ करता है। बच्च कभी काग़ज को लपेटता, कभी फैलाता, कभी खोलता, कभी बन्द करता और जब जी चाहे फाड़ता और जला डालता है।

उनके लिए मानव जीवन, उसके विकास की सम्भावनाओं तथा उसकी निहित शक्तियों का कोई मूल्य न था। ईश्वर ने मानव को स्वामी भक्ति की जो क्षमता प्रदान की है, और उसके अन्दर नेताओं पर भरोसा तथा उस पर मर मिटने का जो गुण रखा है, इस सम्बन्ध में उन्होंने न ईश्वर से भय खाने का काम लिया, न सत्य व न्याय की रक्षा की, न किसी सम्बन्ध व जिम्मेदारी का लेहाज़ किया। बल्कि उन्होंने मानव को अपनी कामना व स्वेच्दा की सिद्धि का माध्यम तथा नेतृत्व व उद्देश्य पूर्ति का साधन बना लिया। उनकी अदूरदर्शिता, ग़लती व गुमराही, उनके भ्रम, उनकी काम लोलुपता, व्यक्तिगत व सामूहिक अहंवाद, जातीय व राष्ट्रीय पक्षपात ने अभागे मानव के सर पर दुर्भाग्य व मुसीबत लाद दी है। उनकी सत्यनिष्ठा, दूरदर्शिता, विश्वबन्धुत्व तथा मानवता के प्रति आदर की भावना संन्दिध हो गई है और इस बात की अब कोई ज़मानत नहीं रही कि मानवता उनकी छत्र–छाया में फल–फूल सकती है। मानव

इतिहास एक साथ हंसाने और रुलाने वाली ऐसी घटनाओं और ऐसे दुखान्त से भरा पड़ा है। और पूरब व पश्चिम में आज भी अनेक राष्ट्र इन्हीं भाग्य का सौदा करने वाले लीडरों की कृपा दृष्टि पर जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जो इससे खेलते, इसे गेंद की तरह लुढ़काते और इस पर नित नये प्रयोग करते रहते हैं। और फिर स्वयं ही इन प्रयोगारों की असफलता को स्वीकार भी करते हैं।

मासूम और ग़लतियों से पाक नबियों की ज़रूरतः–

इन असफल प्रयोगों तथा ग़लत निष्कर्षो के कुप्रभाव से धार्मिक विश्वास व ईमान भी सुरक्षित नहीं रहे जिन पर अच्छे प्रतिफल, सांसारिक जीवन की सार्थकता तथा पारलौकिक जीवन की सफलता की नींव टिकी है और जो सद् आचरण, सभ्यता, भक्त को ईश्वर से मिलाने वाली आराधना और आचार्य संहिताओं (शरीअ़तों) का निर्माण कर इन्हें परिपूर्ण करते हैं और जिनमें किसी भूल की क्षतिपूर्ति बहुत कठिन बल्कि असम्भव होती है। इसलिए ऐसे लीडर्स की आवश्यकता हुई जो अमानतदार, सत्यनिष्ठ, गुमराहियों और गलतियों से पाक और हर लालच से बरी हों, जो काम व मोह की भावना से प्रभावित न होते हों, जो अपनी राय और तुच्छ ज्ञान, सीमित अनुभव तथा व्यक्तिगत कारणों से प्रेरित होकर कोई निर्णय न लेते हों और जब उनसे ऐसे स्थल पर जहाँ कुरआन और ह़दीस का आदेश साफ न हो वहाँ अपनी राय से उचित रास्ता निकालने में ग़लती हो जाये, जिसे इज्तिहादी ग़लती कहते हैं, तो अल्लाह की चेतावनी के बाद वह इन ग़ल्तियों पर अड़े न रहते हों।

अमानतदारी और सत्यनिष्ठा :–

अतएव आप देखेंगे कि हर नबी अपनी उम्मत को अपनी अमानतदारी, सत्यनिष्ठा तथा निःस्वार्थ भावना का पूरा विश्वास दिलाता है। सूरः शुअ़रा में एक एक नबी की ज़बान से जो विवेचना की गई है और जो विश्वास दिलाया गया है उसे पढ़िये:–

अनुवादः १. "(इसी तरह) नूह़ की क़ौम ने पैग़म्बरों को झुठलाया। जब उनसे उनके भाई नूह ने कहा क्या तुम (लोग अल्लाह का) भय नहीं रखते हो। मैं (तो) तुम्हारा अमानतदार (भरोसेवाला) पैग़म्बर हूँ। तो अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। और मैं इस (समझने) पर तुमसे कुछ मज़दूरी तो नहीं मांगता। मेरी मज़दूरी तो दुनिया के पालनहार के जिम्में है।" (सूरः शुअ़रा १०५–१०६)

२. "(इसी तरह क़ौमे) आ़द ने पैग़ाम लाने वालों (पैग़म्बरों) को झुठलाया। जब उनके भाई हूद ने उनसे कहा क्या तुमको (अल्लाह का) डर नहीं है ? मैं तुम्हारा अमानतदार (भरोसेवाला) पैग़म्बर हूँ। तो अल्लाह से डरो, और मेरा कहा मानों। और मैं इस (समझाने) पर तुमसे कुछ उजरत तो नहीं माँगता, मेरी उजरत तो बस संसार के परवरदिगार के जिम्में है।" (सूरः शुअ़रा १२३–१२७)

३. "(और क़ौमे आ़द की तरह क़ौमे) समूद ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया। जब कि उनके भाई सालेह ने उनसे कहा कि क्या तुमको (अल्लाह का) डर नहीं है ? मैं तुम्हारा अमानतदार (भरोसेवाला) पैग़म्बर हूँ। तो अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानों। और मैं इस (समझाने) पर

तुमसे कुछ उजरत (मज़दूरी) नहीं माँगता और मेरी उजरत तो संसार के परवरदिगार के जिम्में है।" (सूरः शुअ़रा १४१—१४५)

४. "(इसी तरह) कौमे लूत ने (भी) पैग़म्बरों को झुठलाया। जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा, क्या तुमको (अल्लाह का) डर नहीं है ? मैं तुम्हारा अमानतदार (भरोसेवाला) पैग़म्बर हूँ। तो अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानों। और मैं इस (समझाने) पर तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं माँगता और मेरी मज़दूरी तो संसार के परवरदिगार के ज़िम्में है।"

(सूरः शुअ़रा १६०—१६४)

५. "(इसी तरह) वन के रहने वालों ने पैग़म्बरों को झुठलाया। जब (उनके भाई) शुऐब ने उनसे कहा क्या तुमको (अल्लाह का) डर नहीं है? मैं तुम्हारा अमानतदार (भरोसेवाला) पैगम्बर हूँ। तो अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानों। और मैं इस (समझाने) पर तुमसे कुछ उजरत (मज़दूरी) नहीं माँगता और मेरी उजरत तो संसार के परवरदिगार के जिम्में है।"
(सूरः शुअ़रा १७६—१८०)

उद्देश्य की यह एकरूपता जो विभिन्न जन समुदायों तथा विभिन्न युगों के नबियों के बारे में एक समान है अपने आप में गूढ़ अर्थ रखती है। 'अमानतदार' शब्द ऐसा व्यापक शब्द है जिसका सम्बन्ध सच्चाई, अल्लाह की वह़ी को विशुद्ध रूप में स्वीकारने तथा उसे उम्मत तक सही सही पहुँचाने से है और जो पैग़म्बरी की व्यवस्था का मूल स्तम्भ है। अ़रबी भाषा में इस उद्देश्य के लिए इससे बढ़ कर कोई और अधिक व्यापक शब्द नहीं।

यह विधि का विधान था कि अल्लाह के रसूल मुहम्मद स० ने पैग़म्बरी से पहले इस गुण के साथ ख्याति पाई और मक्कावासियों के दिल में स्वतः यह बात आ गई कि वह आपको "सादिक़ व अमीन" के नाम से पुकारें, जिसका अर्थ है सच्चा और अमानतदार।

इसी प्रकार सत्यनिष्ठा, निःस्वार्थ भावना, हर प्रकार की लालच और हर प्रकार के व्यक्तिगत अथवा सगे सम्बन्धी को लाभ पहुँचाने से परहेज़ नबियों की पहिचान है। और यह स्वाभाविक बात है कि ऐसे निःस्वार्थ व हितैषी लोगों की ओर लोग खिंचे। इसी लिये हज़रत सालेह ने आश्चर्य व्यक्त किया थाः–

अनुवादः "ऐ क़ौम ! मैंने तुम तक अपने परवरदिगार का सन्देश पहुंचा दिया और तुम्हारी भलाई करता रहा लेकिन इसका क्या इलाज कि तुम हितैषियों को पसन्द नहीं करते।" (सूरः अल–अअ़राफ़–७९)

और हज़रत मूसा ने फ़िरऔन के सामने कहाः–

अनुवादः "मूसा ने कहा ऐ फिरऔन मैं बेशक संसार के परवरदिगार का भेजा हुआ हूँ। मैं अटल हूँ इस पर कि सच के सिवाय अल्लाह की बाबत दूसरी बात न कहूँ। मैं तुम लोगों के पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से निशानी लेकर आया हूँ, तो तू इस्राईल के बेटों को मेरे साथ भेज दे।" (सूरः अल–अअ़राफ़ १०४–१०५)

उम्मत के लिए ज़मानत :–

नबियों की मर्यादा, अमानतदारी

तथा निःस्वार्थ भावना उनकी उम्मतों के धर्म व विश्वास की सुरक्षा का कारण बनी और दूसरी क़ौमों की लाई हुई आज़माइशों के मुक़ाबले में एक ढाल साबित हुई। फलतः उनके उम्मती नबियों के चमत्कारों के बारे में किसी प्रकार की शंका से बच गये।

नबियों के मर्यादा की हक़ीक़त :–

शाह वली उल्ला देहल्वी अपनी अद्वितीय पुस्तक 'हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा' में नबियों के गुणों का उल्लेख करते हुए लिखते हैं:–

अनुवादः "फिर इस दुनिया में नबी के लिए ज़रूरी है कि वह खुले आम यह साबित करे कि वह पैगम्बरी के भेद का जानेवाला है और वह जो शिक्षा दे रहा है उसमें ग़लती व गुमराही से पाक है, और इससे भी बरी है कि सुधारात्मक कार्य का कुछ अंश ले ले और कुछ आवश्यक अंश छोड़ दे। इस के दो विकल्प हैं– एक यह कि वह नबी अपने से पूर्व नबी का उल्लेखक हो जिसकी मान मर्यादा पर वह सहमत हों और यह उल्लेख उस कौम में सुरक्षित हो, तो इस तरह से वह नबी अपनी क़ौम को लाजवाब कर सकता है कि वह जो कुछ कह रहा है उनके सर्व सम्मत नबी ही की तरफ से कह रहा है।

कुछ भी हो लोगों के लिए एक मासूम (निष्पाप) तथा सर्वसम्मत व्यक्ति की ज़रूरत है जो उनमें मौजूद हो अथवा जिसका उल्लेख सुरक्षित हो। ईमान व अक़ीदे का आभास तथा गुनाहों व उनके नुकसानात का ज्ञान तर्क व सांसारिक बुद्धि व इन्द्रियों के द्वारा नहीं होता बल्कि

इन बातों की वास्तविकता अन्तःकरण ही पर खुलती है। जैसे भूख, प्यास, गर्म अथवा ठंडी दवाओं की अनुभूति अन्तःकरण ही से होती है, वैसे ही आत्मा के अनुकूल व प्रतिकूल चीज़ का ज्ञान सुरूचि से ही होता है।

और नबियों का मासूम (बेगुनाह) होना अल्लाह के दिए हुए आवश्यक ज्ञान व विश्वास के कारण होता है जिसके कारण नबी समझता है कि वह खुदा की तरफ से जो चीज़ पा रहा है और समझ रहा है वह सच्चाई के अनुरूप है, और उसे ऐसा विश्वास होता है कि मानों कोई सत्य को अपनी आँखों से देख रहा है और देखते समय अपनी आँखों को गलत देखने वाली आँखे नहीं समझ रहा है। अथवा नबी का ज्ञान किसी भाषा विज्ञ के किसी शब्द के निश्चित अर्थ को समझने के अनुरूप होता है जैसे एक अरब को कभी यह शक नहीं होगा कि शब्द "माआ" पानी के लिए बना है और शब्द "अर्ज़" ज़मीन के लिए, यद्यपि इस सिलसिले में न उनके पास कोई दलील (तर्क) होती है न शब्द व अर्थ में कोई बौद्धिक अनिवार्यता ही होती है। इसके बावजूद उसे यह आवश्यक ज्ञान प्राप्त होता है। और अधिकांश सच्चाइयों के बारे में नबी को एक स्वाभाविक शक्ति प्राप्त हो जाती है जिसके द्वारा उसे सदैव शुद्ध आन्तरिक ज्ञान प्राप्त होता है और उसे अपने आन्तरिक अनुभव की सच्चाई का निरीक्षण प्रायः होता रहता है।

और लोगों को उसकी मर्यादा का यक़ीन नबी की बौद्धिक व सम्बोधन के तर्क से होता है, कि उसका आह्वान सही और उसका सदाचरण ऐसा है जहां झूठ का गुज़र नहीं, और कभी उसके खुदा के

करीब होने का निरीक्षण इन्हीं चमत्कारों तथा उसकी दुआओं की स्वीकारोक्ति से हो जाता है। यह इसलिए होता है ताकि उन्हें नबी के महान आह्वान की गरिमा का एहसास हो जाये और वह यह जान लें कि वह देवदूतों से सम्पर्क रखने वाली पवित्र आत्माओं में से है। और यह कि उस जैसा व्यक्ति अल्लाह के बारे में झूठ नहीं गढ़ सकता और न कोई गुनाह कर सकता है। फिर इसके बाद कुछ अन्य बातों से और विश्वास पैदा होता है और वह उन्हें और निकट ले आती हैं। और नबी को क़ौम के माल व औलाद तथा प्यासे के लिए पानी से अधिक प्रिय बना देती हैं। और यह सब बातें वह हैं जिनके बिना कोई उम्मत किसी नबी के विशेष रंग में नहीं रंग सकती।

इसलिए इन जैसी उपासनाओं में तीन व्यक्ति ऐसे से सम्बन्ध पैदा करते हैं जिसमें यह बातें पाते हैं।

(हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा– खण्ड एक पृष्ठ ८३–८४)

नबी अनुसरण के हक़दार होते हैं :–

वह पवित्र आत्मायें जिनकी मर्यादा, जिनके सद्ज्ञान, जिनकी अमानतदारी व निःस्वार्थ भावना का यह हाल हो जिनके सद्मार्ग पर चलने व सदाचरण तथा शिक्षा–दीक्षा की अल्लाह ने अति उत्तम व्यवस्था की हो, जिनके बारे में यह कहा गया हो वह बुद्धि, ज्ञान, अभिरूचि व तर्क हर प्रकार से अनुकरणीय है। सूरः अल–अनआम में कहा गया है–

अनुवादः "यही वह हैं जिन्हें अल्लाह ने सद्मार्ग दिखाया तो आप

इनके आचरण का अनुकरण कीजिये।"　　　(सूरःअल—अनआम—६१)

ईश्वर की अनुकम्पा के हक़दार :–

नबियों पर अल्लाह की विशेष अनुकम्पा व दया—दृष्टि होती है। उनके आचरण, उनके जीवन का रहन सहन सब अल्लाह की नज़र में प्रिय व पसन्दीदा बन जाते हैं।

एक मंजिल को विभिन्न रास्ते जाते हैं वह सब रास्ते एक ही जगह पहुंचते हैं किन्तु नबी जिस मार्ग को अपनाते हैं वह रास्ता खुदा के यहां प्रिय बन जाता है। और उसे दूसरे रास्तों पर प्राथमिकता प्राप्त होती है और केवल इसलिए कि नबियों के कदम इस रास्ते पर पड़े हैं, उनकी तमाम प्रिय चीजे़ तथा उनसे जुड़ी हुई तमाम चीज़ों से अल्लाह की मुहब्बतबत सम्बद्ध हो जाती है। और उनका अनुसरण उनको अपनाना और उन जैसा आचरण पैदा करना ईश्वर का सानिध्य प्राप्त करने का आसान रास्ता हो जाता है। और जो उनका अनुसरण करता और उन जैसा बनता है वह ईश्वर का परम प्रिय भक्त हो जाता है। क्योंकि दोस्त का दोस्त, दोस्त और दुश्मन का दोस्त, दुश्मन समझा जाता है। यह अकाट्य सत्य है जो कभी बदलता नहीं। अतएव अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़बान से कहलाया गया :–

अनुवादः "कह दीजिये कि अगर तुम अल्लाह से प्रेम रखते हो तो मेरी पैरवी करो ताकि अल्लाह़ (भी) तुमसे प्रेम रखे और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे। और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला (और) बड़ा मेहरबान है।　　　(सूरः आले इमरान —अ)

इसके विपरीत अत्याचारियों व अल्लाह को झुठलाने वालों की ओर झुकाव तथा उनके आचरण को अपनाने से अल्लाह की ग़ैरत (स्वाभिमान) हरकत में आ जाती है और इसे अल्लाह से बन्दे को दूर करने वाली चीज़ बताई गई है :–

अनुवादः "और ज़ालिमों की ओर ज़रा न झुकना कि तुम्हें आग का अज़ाब पकड़ ले और खुदा के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त न हो और तुम्हारी मदद न की जा सके।" (सूरः हूद– ११३)

आचरण की गरिमा का भेद :–

पैग़म्बरी के इन आचरण व तौर–तरीक़ों का नाम शरीअत की ज़बान में 'ख़साल फ़ितरत' (स्वाभाविक आदतें) और हिदायत (सद्मार्ग) के तरीक़े हैं जिसकी शरीअत हिमायत करती और लोगों को इन्हें अपनाने के लिए आमादा करती है और प्रेरणा देती है। यह तमाम आचार–व्यवहार लोगों को नबियों के रंग में रंगते है जिनके बारे में अल्लाह ने कहा है :–

अनुवादः "यह अल्लाह का रंग है और अल्लाह के रंग से बढ़ कर कौन रंग हो सकता है और हम उसके इबादत गुज़ार (उपासक) हैं।"

(सूरः अल–बक़रा– १३८)

और अल्लाह की एक आदत (स्वभाव) को दूसरी आदत, एक आचरण को दूसरे आचरण एक तौर तरीक़ा को दूसरे तौर तरीक़ा पर प्राथमिकता देने का यही भेद है। और यही वह भेद है जिसे इस्लामी

शरीअत ईमान वालों की पहिचान बताती है और इसके विपरीत तरीक़ों को जाहिलों और कम अक़्लों की पहिचान कहलाती है। इन दोनों में यही अन्तर है कि एक नबियों की प्रिय आदतों की नकल और दूसरी अज्ञानों की आदतों तथा शैतान व उसके अनुयाइयों की पहचान है।

और इसके अन्तर्गत खाने पीने, वस्त्र व श्रृंगार, रहने सहने तथा सभ्यता के अनेक आयाम आ जाते हैं। दाहिने हाथ को बायें पर क्यों अधिक महत्व प्राप्त है, और अच्छे कामः खाना पीना और किसी महत्वपूर्ण वस्तु का लेना देना और हर आदर की बात इसी से क्यों सम्बद्ध है। और बायां हाथ शौच आदि के लिए क्यों सुनिश्चित है ? यद्यपि दोनों इन्सान ही के हाथ हैं और दोनों ही सृष्टा की सृष्टि और उसकी रचना हैं। अनेक अज्ञान लोग दोनों के बीच कोई फ़र्क़ नहीं करते और न इस आचरण को व्यवहार में लाते हैं बल्कि एक को दूसरे के काम के लिए प्रयोग करते रहते हैं।

इसका एकमात्र कारण यह है कि नबी सामान्यतया और अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ल० विशेषकर ऐसा ईशवाणी के अधीन अथवा अपने स्वभाव के कारण करते थे और उनका यह आचरण ईश्वर की इच्छानुसार होता है। दाहिने से शुरू करना इस्लामी सभ्यता में अच्छा क्यों समझा जाता है ? इसलिए कि यह नबी और अल्लाह के रसूलसल्ल०की सुन्नत थी। हज़रत आयश बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० को यथासम्भव अपने तमाम कामों में दाहिने से शुरू करना पसन्द था। सही बुख़ारी में है :–

"नबीसल्ल॰ यथासम्भव हर काम में दाहिनी ओर से शुरू करना पसन्द करते थे यहाँ तक कि तहारत (वुज़ू व सफ़ाई) कंघी करने और जूता पहनने में भी।"

नबी एक विशेष सभ्यता और जीवन प्रणाली के संस्थापक :–

नबियों में मात्र अक़ीदा (विश्वास) व शरीअत तथा केवल एक नये दीन–इस्लाम–ही का आह्वान नहीं किया बल्कि वह सभ्यता व संस्कृति और नयी जीवन शैली के भी संस्थापक होते हैं। और जो ऐश्वरीय सभ्यता" कहलाने की पात्र होती हैं। इस सभ्यता के कुछ विशेष लक्षण हैं जिनके कारण दूसरी सभ्यताओं की अपेक्षा यह अधिक उजागर हो जाती है।

इब्राहीमी और मोहम्मदी सभ्यता :–

हज़रत इब्राहीम इस ईश्वर को पूजने वाली सभ्यता के संस्थापक थे जिसकी बुनियाद एकेश्वरवाद पर ईमान उस के गुन गाने, सीधी सच्ची राह, निरोग मन, अल्लाह के लेहाज़ व डर, मानवजाति पर दया एवं सुरूचि पर रखी गयी है।

इब्राहीम आचरण व जीवनचर्या इस सभ्यता के रोम रोम में व्याप्त है जिसके बारे में कहा गया है :–

(और हर बात में अल्लाह की तरफ) रुजू (विनती) रहने वाले थे।"

(सूरः हूद– ७५)

हज़रत इब्राहीम एक ओर इस सभ्यता के संस्थापक थे और दूसरी ओर हज़रत मुहम्मद स० जो उनके वंशज में थे इस सभ्यता को नवचेतना देने वाले तथा इसे परिपूर्ण करने वाले थे। आपने इसमें नयी जान डाल दी और इसमें स्थाइत्व का रंग पैदा कर दिया और इसके सिद्धान्तों को ऐसा सुदृढ़ कर गये कि इसे एक अमर व विश्वव्यापी सभ्यता का रूप दे गये।

इब्राहीमी सभ्यता की विशेषतायें :–

यह सभ्यता शिर्क व बुतपरस्ती से सर्वथा अनभिज्ञ है और इसे किसी रंग में और किसी स्थल व समय में अपनाने के लिए तैयार नहीं। हज़रत इब्राहीम की एक बड़ी दुआ और इच्छा यह थी कि

अनुवादः "और ऐ ख़ुदा ! मुझे और मेरी सन्तान को इससे बचा कि हम बुतों को पूजने लगें।" (सूरः इब्राहीम– ३५)

और उनकी ख़ास वसीयत थी कि :–

अनुवादः "गन्दगी अर्थात् बुतों से बचते रहो और झूठ कहने से बचो, ख़ुदा के लिए शुद्ध मन होकर और उसके साथ किसी को शरीक किये बिना।" (सूरः अल– हज्ज– ३०–३१)

इस्लामी सभ्यता लोलुपता, काम और वासना पर टूट कर गिरने, दुनिया की माया पर रीझने, और भौतिकवाद के मुर्दार पर कुत्तों की

तरह गर्राने और झगड़ने तथा कुर्सी व हुकूमत के लिए लड़ने मरने का नाम नहीं जानती। इसका तो दृढ़ विश्वास है कि :–

अनुवादः "यह आख़िरत का घर है जो हमने उन लोगों के लिए कर रखा है जो दुनिया में ऐंठ कर नहीं चलते और फ़साद नहीं चाहते। और परहेज़गारों का आख़िरी अंजाम भला है।"

(सूरःअल–क़ससि–८३)

इस्लामी सभ्यता इन्सान इन्सान में फ़र्क़ करना नहीं जानती और न रंग व नस्ल का भेद भाव पैदा करती है –

अनुवादः "सब लोग आदम की औलाद हैं। आदम मिट्टी के बने थे। अरबी को अजमी (ग़ैर अरब) पर और अजमी को अरबी पर फ़ज़ीलत नहीं मगर तक़वा (अल्लाह का डर) के लेहाज़ से। ऐ लोगों ! हमने तुम्हें एक मर्द व औरत से पैदा किया और तुम्हें गिरोहों व क़बीलों में बांटा कि एक दूसरे को पहिचानो। तुम में से खुदा के नज़दीक व प्रतिष्ठित तुममें का परहेज़गार व्यक्ति है।"

(सीरत इब्ने हिशाम)

और हज़रत मुहम्मद(स०)ने फ़रमायाः–

अनुवादः "वह हम में से नहीं जिसने जाहिली (अज्ञान) जत्था बन्दी

की ओर बुलाया और जो जाहिली जत्थाबन्दी के लिए लड़ा और जो जाहिली जत्थाबन्दी के पीछे मरा।" (अबूदाऊद)

यह वह सभ्यता है जिसकी पहिचान अक़ीदे के क्षेत्र में तौहीद, आर्थिक क्षेत्र में मानवता की समता तथा उसका सम्मान, आचरण के बारे में खुदा का डर उससे हया और विनय है। कर्मक्षेत्र में आख़िरत के लिए संघर्ष और अल्लाह के रास्ते में जेहाद, युद्ध क्षेत्र में दया की भावना और हुदूद (धार्मिक नियमों) का पालन इसकी विशेषता है। यह सभ्यता प्रशासनिक व्यवस्था में भौतिक लाभ पर धार्मिक लाभ को, आय में वृद्धि पर सद्मार्ग को, लाभ उठाने से अधिक लाभ पहुंचाने को, सेवा लेने से अधिक सेवा करने के सिद्धान्त को प्राथमिकता देती है। यह सभ्यता इतिहास में अपनी सच्ची मानव सेवा तथा मानवता को दानवता के चंगुल से छुटकारा दिलाने और भूतल पर अपनी मनमोहक यादगारों और अपनी फैलाई हुई बरकतों के लिये विख्यात और अमर है। यह सभ्यता अल्लाह के नाम और उसके गुणगान के तत्व से तैयार हुई है और खुदाई रंग में रंगी हुई और ईमान की बुनियादों पर बनी है। इसलिए इसे इसके दीनी रंग से जुदा करना किसी प्रकार सम्भव नहीं।

नबियों के अनुसरण व अनुकरण पर बल :–

कुरआन मजीद जगह जगह नबियों के अनुकरण उनके आचरण को अपनाने पर बल देता हैः–

अनुवादः "तुम्हारे लिए पैग़म्बर की चाल सीखनी भली थी (यानी उसके लिए) जो अल्लाह की और आख़िरत के दिन की आस रखता है और अल्लाह की बहुत बहुत याद किया करता है।"

(सूरः अल्–अह़ज़ाबि–२५)

कुरआन मुसलमानों को निर्देश देता है कि वह बराबर यह दुआ मांगा करें:–

अनुवादः "ऐ ख़ुदा ! हमें सीधी राह दिखा। उन लोगों की राह जिन पर तूने वरदान किया है न कि उनकी राह जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ है और न गुमराहों (पथ भ्रष्ट) की राह।"

(सूरः फ़ातिहा)

और निस्सन्देह ख़ुदा के इनाम से सम्मानित भक्तों के अगुआ नबी और रसूल ही हैं। इस दुआ को नमाज़ में भी शामिल कर दिया गया।

नबियों का सम्मान और उनसे प्रेम :–

कुरआन कहता है कि नबियों की प्रतिष्ठा व सम्मान अन्तःकरण की पैदावार हो और उनसे भावनात्मक लगाव हो। और वह दिखावे के ऐसे लगाव का क़ायल नहीं जैसा प्रजा का राजा के साथ और जनता का फ़ौजी व राजनीतिक नेताओं के साथ होता है। कुरआन कहता है :–

अनुवादः "अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, उसकी मदद करो और उसकी इज्ज़त व आदर करो।"

(सूरः अल्–फ़तेह–९)

इसलिये कुरआन ने हर उस चीज़ का हुक्म दिया जिससे उनके

आदर व सम्मान की सुरक्षा होती हो और हर उस चीज़ से मना किया जिससे उनका अनादर होता हो और जिससे उनकी शान व मान मर्यादा घटती हो अथवा उस पर आंच आती हो। कुरआन कहता है :—

अनुवादः "ऐ ईमान वालों ! अल्लाह और उसके पैग़म्बर से (किसी काम में बिना इजाज़त) आगे न बढ़ो। और अल्लाह से डरते रहो। बेशक अल्लाह (सब कुछ) सुनता जानता है। ऐ ईमान वालों ! अपनी आवाज़ों को पैग़म्बर की आवाज़ से ऊँचा न होने दो और न उनके साथ बहुत ज़ोर से बात करो जैसे तुम आपस में बोला करते हो। ऐसा न हो कि (इस असभ्यता के कारण) तुम्हारा किया धरा सब अकारत हो जाये और तुम्हें ख़बर भी न हो। जो लोग अल्लाह के पैग़म्बर के सामने दबी आवाज़ बोलते हैं वही हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए जांच में परख लिया है। उनके लिए क्षमा और बड़ा बदला है।"

(सूरः अल—हुजराति १—३)

इसके अतिरिक्त "सही हैन" में है :—

"तुममें से कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके लिए उसके बाप उसके बेटे और तमाम लोगों की अपेक्षा अधिक प्रिय न हो जाऊँ।"

प्रेम भावना का प्रभाव और रसूल के अनुसरण में सहाबा की तन्मयता :—

रसूल (सल्ल॰) की सच्ची मुहब्बत और उनके आचरण को शुद्ध व सच्चे मन से अपनाने का उल्लेख करते हुए कुरआन

कहता है:–

अनुवाद: "(ऐ पैग़म्बर) समझा दीजिये कि अगर तुम्हारे बाप और बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियां और तुम्हारे घर वाले और माल जो तुमने कमाया है, और व्यापार जिसके बन्द हो जाने का तुमको डर हो, और मकान जिन से तुम्हारा मोह हो, अल्लाह और उसके पैग़म्बर और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने से तुमको (अगर यह सब) अधिक प्यारे हों, तो राह देखो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म (यानी अज़ाब (अभिषाप) तुम्हारे सामने ले आये। और अल्लाह उन लोगों को राह नहीं दिखाया करता जो हद से बढ़ने वाले हैं।"

(सूरः तौबः २४)

इसीलिए सहाबा रसूलसल्ल०की ओर लपकने वाले, और ऐसा करने में प्रसन्नता अनुभव करने वाले थे। और इसीलिए वह इस क्षेत्र में सदैव सबसे आगे रहेंगे। हज़रत सिद्दीक़ अकबर ऐसे ही लोगों में थे। उनके लिए रसूल स० का व्यक्तित्व अपनी जान से अधिक प्रिय था और आपके स्वास्थ्य व जीवन को अपने स्वास्थ्य व जीवन पर प्राथमिकता देते थे। अतएव उत्बा बिन रबीया ने उनके चेहरे पर फटे हुए जूतों से चोट पहुंचाई और सीने पर सवार होकर इस क़दर मारा कि चेहरे की पहिचान मुश्किल हो गई। उनके क़बीले के लोग इस हाल में उन्हे एक कपड़े में डाल कर उठा लाये। उनकी मौत में किसी को शंका न थी। मगर जब सूर्यास्त के बाद उन्हें होश आया तो सबसे पहले यही पूछा कि रसूलुल्लाह ख़ैरियत से हैं ? और जब उन्हें इतमीनान दिलाया गया कि आप ख़ैरियत

से हैं तब भी उन्हें इतमीनान न हुआ और उन्होंने कहाः—

"मुझे ख़ुदा की क़सम है कि मैं तब तक खाने पानी को हाथ न लगाऊँगा जब तक कि अल्लाह के रसूल को देख न लूँ।"

ऐसे ही परम भक्तों में वह अन्सारी महिला थी जिसको ओहद की लड़ाई के मौके पर उसके निकटतम सम्बन्धियों—बाप, भाई और पति के शहीद होने की ख़बर दी जाती रही मगर उसने उन सब को छोड़कर अल्लाह के रसूल स० की ख़ैरियत पूछी। और लोगों ने आपकी ख़ैरियत बताई तो उसने आपको देखने के बाद कहा— 'आप के होते हुए हर मुसीबत हेच है।"

ऐसे ही लोगों में अब्दुल्ला बिन उबई थे जिन्होंने अपने बाप को यह कहते सुना कि अगर हम मदीना लौटे तो प्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित को निकाल देगा। वह मदीने के प्रवेश द्वार पर बाप के मुक़ाबले पर तलवार लेकर खड़े हो गये और कहा कि क्या तुमने ही ऐसा कहा था ? ख़ुदा की क़सम तुम्हें अभी मालूम हो जायेगा कि इज्ज़त तुम्हारे लिए है या अल्लाह के रसूल स० के लिए ? तुम मदीना के साये में अल्लाह और उसके रसूल स० की इजाज़त के बिना नहीं जा सकते। अतएव उन्होंने उस समय तक इजाज़त नहीं दी जब तक कि रसूललुल्लाह स० ने उसे आने की इजाज़त न दी।

यह इसी भावना का प्रतिफल था कि सहाबा अपनी जानें और अपने सर हथेली पर लेकर निकले और सगे सम्बन्धियों को छोड़ना तथा

अल्लाह के रास्ते में शहीद हो जाना जीने की अपेक्षा उन्हें अधिक प्रिय हो गया। और इसीलिए वे बदर की लड़ाई के अवसर पर कह सके:–

"हमारा मामला आपके आदेश के अधीन है। खुदा की क़सम अगर आप बर्क गमदान तक चलें तो हम आपके साथ चलेंगे। और खुदा की क़सम अगर आप कहेंगे तो हम इस समुद्र में आपके साथ कूद पड़ेंगे।"

इस्लामी दुनिया में प्रेम की कमी का नतीजा :–

आज इस्लामी दुनिया में शरीअ़त के अनुसार जीवन–यापन करने में कोताही, अनुपालन में शिथिलता और नबी की सुन्नतों के मामले में नये शिक्षित वर्ग की उदासीनता, सब इसी रसूल स० के मनसब का एहसास न होने का फल है। रसूल सल्ल० से मुहब्बत की कमी को बुद्धि, संकल्प व व्यवस्था की बड़ी से बड़ी मात्रा भी पूरी नहीं कर सकती। और यह ऐसा नुकसान है जिसकी पूर्ति सम्भव नहीं।

नबी के अनुसरण व प्रेम ही में क़ौम की भलाई है :–

किसी उम्मत की तक़दीर उसके रसूल के अनुकरण व अनुसरण, उनके आचरण को अपनाने और सुख–दुख हर हाल में उनसे सम्बद्ध रहने से जुड़ी होती है। अतः कोई उम्मत तमाम भौतिक शक्तियों व विकास के बावजूद सफल नहीं हो सकती जब तक कि वह नबी के पदचिन्हों पर चलने और उसकी बताई हुई बातों को व्यवहार में लाने का प्रयास न करे। और जो उम्मत इसके विपरीत करती है उसे असफलता का मुँह देखना पड़ता है और वह आन्तरिक अव्यवस्था

का सदैव शिकार बनी रहती है।

इस्लामी दुनिया और अरब देशों का घटनाचक्र :–

इस्लामी दुनिया सामान्यतः और अरब दुनिया विशेषकर इस वास्तविकता के साक्षी हैं। इन देशों में जब नबी सल्ल० का अनुकरण व अनुसरण भार लगने लगा और राजनीतिक लीडरों की माँगों में नबी स० के मताल्बे से अधिक दिलचस्पी बढ़ गई और नबी सल्ल० की बताई हुई बातों से हटकर उनके अधिकांश देशा नेशनलिज्म व सोशलिज्म व अन्य आधुनिक दर्शनशास्त्रों को अपनाने लगे तो कोई कामयाबी न हासिल कर सके और न अपनी कोई गुत्थी सुलझा सके। बिना किसी क्षमा याचना के अरब देशों का उदाहरण प्रस्तुत करूँ। वह अपनी एकता के टुकड़े टुकड़े कर चुके हैं। वह एक फिलस्तीन की समस्या इतने लम्बे समय में भी न हल कर सके और दुनिया में कोई प्रतिष्ठा भी न प्राप्त कर सके। हर दिन उनके लिए नई मुश्किल और नई समस्या लेकर आता है।

अमीरूल मोमनीन (मुसलमानों के सरदार) हज़रत उमर ने सीरिया में अपने अरब साथियों से सच कहा था:–

"तुम सब से अधिक निकृष्ट लोग थे, फिर अल्लाह ने तुम्हें इस्लाम के ज़रिये इज्ज़त दी, तो जब भी तुम इस्लाम के बिना इज्ज़त चाहोगे तो खुदा तुम्हें ज़लील (निकृष्ट) कर देगा।"

चौथा व्याख्यान

भौतिक कारकों के सम्बन्ध में नबियों और उनके विरोधियों में अन्तर :–

कुरआन जो एक मात्र पुस्तक है जिसने नबियों के इतिहास, उनकी जीवनी और उनके सन्देशों को सुरक्षित रखा है– का पढ़ने वाला अविरल यह देखेगा कि नबियों का अभ्युदय सदैव बड़े अन्धकारमय तथा प्रतिकूल वातावरण में हुआ है। भौतिक दृष्टि से भी वह कमज़ोर है और साधन विहीन थे और देश व दौलत व हिमायतियों (समर्थकों) के दृष्टि से भी। और उनके विरोधियों के पास वह सारे संसाधन थे जिन पर मनुष्य इतराता है। नबियों की पूंजी दृढ़ ईमान है जो अडिग व आशंकान्मुक्त होता है। सच्ची लगन होती है जिसमें लालच व दिखावापन लेशमात्र को नहीं होता। उन्हें अल्लाह पर पूरा भरोसा होता है और उसी को दाता समझते हैं। वे सदाचारी होते हैं और उनमें सच्चे ईमान का संचार होता है। और अल्लाह उनका मददगार होता है :–

अनुवादः "हम अपने पैग़म्बरों और उनकी जो ईमान लाये दुनिया की ज़िन्दगी और उस दिन पर जब गवाह खड़े होंगे, ज़रूर मदद करेंगे।

(सूरः अल–मोमिन–५१)

सुनिश्चित विषय :–

कुरआन मजीद का पाठ करने वाला यह भी पायेगा

कि अल्लाह ने नबियों के जो किस्से बयान किये हैं और उनके संघर्षमय जीवन का जो चित्रण किया है वह वास्तव में सदैव एक निहत्थे महापुरूष तथा समृद्ध व प्रभावशाली कौम अथवा किसी अत्याचारी राजा के बीच संघर्ष है जिस में नबी को अपने संसाधनों की कमी के बावजूद हमेशा विजय प्राप्त हुई है और पूंजीपतियों व जाबिर बादशाह को हमेशा अपने भरपूर संसाधनों के बावजूद मुँह की खानी पड़ी है। यह घटनायें संयोगवश यों ही नहीं घटित हुई बल्कि प्रकृति का यही नियम है। कुरआन मजीद में इस प्रकार की घटनाये बार बार दोहराई गई हैं। वस्तुतः इनके द्वारा ईश्वर के सर्वशक्तिमान होने की वास्तविकता को उजागर किया गया है और यह कि वह महाशक्ति संसाधनों को जन्म दे कर स्वयं न तो कमजोर होती है और न ही उससे वंचित होती है और न ही वह सृष्टि के लिए और सर्वव्यापी होने के लिए इन कारणों की मुहताज है। यह घटनायें सत्य के अमर और अजर रहने के प्रमाण के रूप में हैं और असत्य को कमजोर व निकृष्ट सिद्ध करने वाली हैं।

अनुवादः "बल्कि हम सत्य को असत्य पर दे मारते हैं और वह इसको दबोच लेता है और फिर वह (असत्य) मिट जाता है।"

(सूरः अंबिया–१८)

अनुवादः "झाग यों ही समाप्त हो जाता है और जो लोगों को लाभ पहुंचाता है वह धरती पर बाक़ी रहता है। इस तरह अल्लाह मिसालें देता है।"

(सूरः राद–१७)

अनुभव और ईश्वर की कृपा पर भरोसा :–

इस प्रकार के कुरआनी किस्से अल्लाह और उसकी मदद पर भरोसा करने का आह्वान करते हैं और विषम परिस्थितियों में भी सदाचरण तथा सत्कर्म के प्रति विश्वास की भावना को सुदृढ़ करते हैं। ऐश्वरीय सहायता के चमत्कार का उल्लेख कुरआन में बार बार आता है। और जहां भी यह उल्लेख आता है वहां उस नबी के पक्षधरों को ईश्वर की दया के प्रति आशावान रहने की बात भी कही गई है। हज़रत यूनुस के बारे में कहा गया:–

अनुवादः "तो हमने उसकी (पुकार) सुनली और उनको घुटन से छुटकारा दिया। और हम ईमानवालों कोइसी तरह बचा लिया करते हैं।

(सूरः अंबिया–८८)

अनुवादः मूसा व हारून पर सलामती हो, हम इसी तरह नेकों को बदला देते हैं।"

(सूरः साफ़्फ़ाति–१२०–१२१)

इसलिए कुरआनी किस्से मनोहर कहानियाँ अथवा ऐतिहासिक किस्से नहीं बल्कि वह हितोपदेश व प्रेरणा के स्रोत की हैसियत रखते हैं।

अनुवादः "बेशक बुद्धिमानों के लिए इन लोगों के हालात में नसीहत है। यह (कुरआन) कोई बनाई हुई बात तो नहीं है बल्कि जो (आस्मानी किताबे) इससे पहले (उतर चुकी) हैं उनकी तस्दीक (करती) है। और इसमें उन लोगों के लिए जो ईमान वाले हैं हर चीज़ का ब्यौरेवार बयान

और हिदायत व मेहरबानी है।" (सूरः यूसुफ–१११)

अल्लाह का यही तरीक़ा तमाम नबियों के साथ रहा है। उदाहरण के लिए हज़रत नूह की क़ौम ने जब उनसे कहाः–

अनुवादः "क्या हम तुम पर ईमान लाये यद्यपि निकृष्ट लोग तुम्हारी पैरवी करते हैं।"

(सूरः शोअरा–१११)

इस पर हज़रत नूह ने अल्लाह से विनती की :–

अनुवादः "मैं पराजित हो रहा हूँ मेरी मदद कर !"

(सूरः कमरि–१०)

और हज़रत लूत ने अपनी क़ौम से कहा :–

अनुवादः "काश तुम्हारे मुक़ाबले की मुझे ताक़त होती या किसी मज़बूत चीज़ का सहारा लेता।"

(सूरः हूद– ८०)

और हज़रत शोएब की क़ौम ने उनसे कहा :–

अनुवादः "जो तुम कहते हो उसका अधिकतर अंश हम नहीं समझ पाते और हम तुम्हें अपने बीच कमज़ोर पाते हैं। और अगर तुम्हारा क़बीला न होता तो हम तुम्हें संगसार (पत्थर मार मार के मार डालना)

कर चुके होते और तुम हम पर विजय पाने वाले नहीं।"

(सूरः हूद–६१)

और फ़िरऔन अपने और हज़रत मूसा के बारे में स्पष्ट और बेशर्मी के साथ कहता है :–

अनुवादः "और फ़िरऔन ने अपने लोगों के बीच (पुकार कर) कहा कि ऐ मेरे लोगों ! क्या मुल्क मिस्र मेरा नहीं और यह नहरे मेरे (शाही महल के बाग़ों के) नीचे नहीं बह रही हैं, तो क्या तुम (हमारे इस रुतबे को) नहीं देखते ? भला मैं इस व्यक्ति (मूसा) से बढ़कर नहीं हूं जो कुछ इज्जत नहीं रखता, और साफ बोल भी नहीं पाता ? (और मूसा अगर पैग़म्बर या असाधारण व्यक्ति होता) तो उसके लिए सोने के कंगन (अल्लाह के यहां से) क्यों नहीं आये या फरिश्तों के जत्थे क्यों नहीं उतरे जो साथ रहते।"

(सूरः ज़ुख़रुफ़–५१–५३)

नबी जिन क़ौमों की तरफ भेजे गये वह बड़ी शक्तिशाली और संसाधन युक्त तथा अत्यन्त समृद्धिशाली क़ौमें थीं। हज़रत सालेह ने अपनी उम्मत से कहा :–

अनुवादः "तो अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानों और मैं इस (समझाने) पर तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं मांगता और मेरी मज़दूरी तो संसार के पालनहार के जिम्में है। क्या जो चीज़े (तुम्हें संसार में उपलब्ध) हैं उनमें बेखटके (हमेशा मौज मारने को) छोड़ दिये जाओगे? (यानी) बागों में और चश्मों में। और खेतों में और खजूरों में जिनके गुच्छे (रस

और बहुतायत के बोझ से) झुके पड़ते हैं। और बड़े गर्व से पहाड़ों को काट काट कर इमारतें बनाते हो।" (सूरः शुअरा–१४४–१४६)

शुऐब(अलै०) ने अपनी क़ौम से कहा :–

अनुवादः "मैं तुम्हें खुशहाल देख रहा हूं।"

(सूरः हूद –८४)

किन्तु ईश्वर द्वारा प्रदत्त इस खुशहाली का क्या नतीज़ा हुआ ? कुरआन कहता है :–

अनुवादः "क्या वह देखते नहीं कि हमने इनसे पहले कितनी उम्मतों का नाश कर दिया जिनकी हमने मुल्क में ऐसी जड़ बाँध दी थी कि तुम्हारी जैसी जड़ नहीं बाँधी और हमने उन पर खूब मेह बरसाया और उसके नीचे से नहरें जारी कर दी फिर उनके गुनाहों के कारण उनका नाश कर दिया और उनके बाद और दूसरी उम्मतें निकाल खड़ी कीं।"

(सूरः अनआ़म् –६)

हज़रत इब्राहीम का किस्सा जो कुरआन में बार बार बयान हुआ है वह भौतिक संसाधनों के प्रभाव के विरुद्ध सबसे बड़ी चुनौती है। और भौतिकवाद की खिल्ली उड़ाता है। मानों हज़रत इब्राहीम भौतिकवाद तथा उसके समर्थकों के तिरस्कार के लिए भेजे गये थे। और मानों वह अपने ईमान व तौहीद के लम्बे सफर में हर पग पर भौतिकवाद को अपने कदमों तले रौन्दते रहे और इस तरह मानों वह भौतिकवाद पर अध्यात्म

की और शिर्क पर तौहीद की विजय का सामान जुटा रहे थे।

हज़रत इब्राहीम ने अपने वातावरण की भौतिक शक्ति व संसाधनों, झूठे खुदाओं तथा धमकाने वाली ताकतों का सदैव विरोध किया। कारण यह शक्ति उनके समय के लोग अत्याधिक भौतिकवादी हो गये थे और माया के पुजारी बन बैठे थे। मायाजाल में वह पहले से फंसे हुऐ थे, भौतिकवाद के भूत ने इसे और बढ़ावा दे दिया। हज़रत इब्राहीम इन दोनों के घोर विरोधी थे। वह एक अल्लाह को सृष्टि का मालिक और पालन हार मानते थे। लोगों ने उनकी इस "बग़ावत" के जुर्म में उनके लिए आग का अलाव तैयार किया और प्रस्ताव पास किया किः–

अनुवादः "इसे जला दो और अपने देवताओं की मदद करो, अगर तुम कुछ करना चाहते हो।"

(सूरः अम्बिया–६८)

भौतिकवाद के विरूद्ध सबसे बड़ी चुनौती और भौतिक संसाधनों के विरूद्ध सबसे बड़ी बग़ावत :–

हज़रत इब्रहीम(अलै०) को पूरा विश्वास था कि आग अल्लाह के इरादे के अधीन है और जलाना उसका ऐसा गुण नहीं जो उससे अलग न किया जा सके। अतएव आप इस अलाव में बड़े इत्मीनान के साथ निर्भय हो कर कूद पड़े। उसके बाद का चित्र कुरआन इस प्रकार प्रस्तुत करता हैः–

अनुवादः "हमने हुक्म दिया ऐ आग इब्राहीम के लिए ठंडक और

सलामती बन जा, और वह लोग इसे नुकसान पहुंचाना चाहते थे तो हमने उन्हीं को नाकाम (असफ़ल) कर दिया"।

(सूरः इब्राहीम–३७)

लोग यह भी समझते थे कि जीवन बिना हरियाली, खुशहाली और पानी के सम्भव नहीं, इसलिए वह अपने परिवार और अपने रहने सहने के लिए ऐसी उपजाऊ ज़मीन तलाश करते थे जिसमें पानी की बहुतात और हरियाली हो और जहाँ कारोबार की सुविधायें प्राप्त हों। हज़रत इब्राहीम ने इस चलन के प्रतिकूल क़दम उठाया, और अपने छोटे से परिवार के लिए एक ऐसी घाटी पसन्द की जहां न कोई हरियाली थी और जहाँ न खेती की जा सकती थी और न ही कोई कारोबार। यह घाटी व्यापार की मंडियों से दूर अलग थलग थी। हज़रत इब्राहीम ने अल्लाह से दुआ की :–

अनुवादः "ऐ परवरदिगार ! मैंने तेरे अदब वाले घर के आस–पास जहाँ खेती नहीं अपनी कुछ औलाद बसाई है ताकि यह लोग नमाज़ क़ायम रखें, तो ऐसा कर कि लोगों के दिल इसकी तरफ को लगें और फलों से इनको रोज़ी दे, शायद यह शुक्र करें।"

(सूरः इब्राहीम–३६)

अल्लाह ने आपकी दुआ क़बूल की और उन्हें भोजन, सुख और शान्ति की ज़मानत दी और उनके शहर को हर प्रकार के फल फूल से भर दिया।

अनुवाद: "क्या हमने उनके लिए एक शान्ति का घर नहीं दिया जिसकी तरफ हर प्रकार के फल लाये जाते हैं और जो हमारी तरफ से खाने के लिये थे, किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।"

(सूरः क़सस–५७)

हज़रत इब्राहीम ने उन्हें ऐसी बंजर ज़मीन में उतारा था जहाँ प्यास बुझाने के लिए पानी का नाम व निशान तक न था, किन्तु रेत से पानी का स्रोत फूट पड़ा, और वह उस समय से अब तक इस तरह जारी है कि लोग इसे जी भर के पीते और अपने देशों को ले जाते हैं। हज़रत इब्राहीम ने अपने घर वालों को चटियल मैदान में ला छोड़ा था मगर वह ऐसा केन्द्र बिन्दु बन गया जिसके लिए सारी दुनिया के लोग तीर्थ यात्रा करते हैं। इस प्रकार हज़रत इब्राहीम की ज़िन्दगी अपने समय के भौतिकवाद के लिए एक चुनौती और अल्लाह पर ईमान की ज़िन्दा मिसाल थी। और अल्लाह ने उनके सामने साधनों को झुका दिया।

हज़रत मूसा(अ०)की घटना संकुचित व भौतिकवादी विचारधारा के लिये चैलेंजः– हज़रत इब्राहीम(अ०)के किस्से के बाद हज़रत मूसा (अ०) का क़िस्सा भी भौतिकवाद के लिये एक खुला चैलेंज है। यह क़िस्सा उन लोगों को बड़ी आज़माइश में डाल देता है जिनका सोच विचार भौतिक साधनों से परे नहीं। मेरे ही एक निबन्ध का उद्धरण है :–

"हज़रत मूसा अ० मिस्र के एक अन्धकार युग में पैदा होते हैं, बनी

इस्राईल इसमें पूरे तौर से घिरे हुए हैं और उनके लिए नजात (मोक्ष व छुटकारा) के सारे द्वार बन्द है। उनका वर्तमान निराशाजनक, भविष्य अन्धकार मय, थोड़ी संख्या, सीमित साधन, पद्दलित, शत्रु का बोल बाला, हुकूमत ज़ालिम यह सारी बातें उनके राह का रोड़ा बनी हुई थीं। न कोई उनका पक्षधर था न कोई बचाने वाला। बनी इस्राईल की हैसियत उस क़ौम की सी थी जिसका अन्त निश्चित और दुर्भाग्य जिसकी किस्मत में लिखा हो– ऐसे वातावरण में हज़रत मूसा(अ०)पैदा होते हैं और उनका जन्म भौतिक़वाद के लिए साक्षात चुनौती प्रस्तु त करता है। फ़िरऔन ने चाहा कि वह पैदा न हों मगर वह पैदा होकर रहे, उसने चाहा कि वह जीवित न रहे मगर वह ज़िन्दा भी रहे, और लकड़ी के एक बक्स में नील के गहरे पानी में चमत्कार के रूप में जीवित रहे। आप शत्रु की गोद में बड़े होते हैं और हत्यारे की हिफ़ाज़त में जवान होते हैं। फिर आप भागते और पीछा छुड़ाते एक पेड़ की छाया तले लाचार हो कर जा बैठते हैं और फिर आतिथ्य–सत्कार और पसन्द की शादी के पात्र बनते हैं। बाल–बच्चों के साथ चल पड़ते हैं, रास्ते में अपरिचित व रात के अन्धेरे का सामना करते हैं। ऐसी घड़ी में उनकी पत्नी बच्चा जनती है और उनके लिए आग की तलाश होती है और वह ऐसी रोशनी (ज्योति) पा लेते हैं जिससे बनी इस्राईल के भाग्य जाग उठते हैं। नबी एक ओर की ज़रूरत और मदद का सामान ढूढ़ता है तो वह पूरी मानव जाति के लिए मदद और ज़रूरत का सामान पा लेता है और पैग़म्बरी के पद से सुशोभित होते हैं। वह फ़िरऔन के दरबार में दाख़िल होते हैं यद्यपि वह कल तक एक भगेड़ू मुल्ज़िम की हैसियत से थे जिस पर मुक़दमा दायर हो चुका था और उनकी ज़बान में लुकनत

और इरादों में ठहराव न था लेकिन आज वह फ़िरऔन और उसके दरबारियों को अपने उपदेश, अपने ईमान व बयान से वशीभूत कर लेते हैं। फ़िरऔन जादूगरों की मदद से उनके चमत्कार को दबाना चाहता है किन्तु जादूगर क़ायल हो जाते हैं और कह उठते हैं :–

अनुवादः "हम परवरदिगार, मूसा के रब व हारून पर ईमान लाये"।

(सूरः शोरा– ४७)

हज़रत मूसा अ० को हुक्म होता है कि इस्राइलियों को लेकर रातों रात अत्याचार की धरती को छोड़कर नजात व छुटकारा के देश की ओर कूच कर जायें। फ़िरऔन अपने लश्कर के साथ उनका पीछा करता है। जब सुबह होती है तो हज़रत मूसा अ० समुद्र को अपने सामने ठाठें मारते और पीछे से दुश्मन को पीछा करते देखते हैं। वह समुद्र में घुस पड़ते हैं। समुद्र दो टुकड़े हो जाता है समुद्र के बीच में रास्ता बन जाता है और हज़रत मूसा अपनी क़ौम के साथ समुद्र पार कर लेते हैं, उनकी देखा देखी फ़िरऔन भी अपनी फ़ौज के साथ समुद्र में उतरता है और समुद्र उन्हें निगल जाता है। इस प्रकार फ़िरऔन और उसकी क़ौम का अन्त होता है। और बनी इस्राईल की कमज़ोर व निर्बल क़ौम उनकी जगह लेती है।"

कुरआन कहता है :–

अनुवादः "और जो कमज़ोर थे उनको हमने ज़मीन के पूर्व व पश्चिम का वारिस बना दिया जिसमें हमने बरक़त रखी थी। और बनी

इस्राईल पर तेरे परवरदिगार का नेकी का वादा पूरा हुआ इसलिए कि उन्होंने सब्र किया और जो फ़िरऔन और उसकी कौम के लोगों ने बनाये थे और अंगूर की बेलें जो छतरियों पर चढ़ाते थे, हमने बरबाद कर दिये। (सूरः आराफ़ि–१३६)

हज़रत यूसुफ(अ०)का क़िस्सा :–

हज़रत यूसुफ अ० का क़िस्सा भी बेबसी व लाचारी के घटनाचक्र में कारक व प्रभाव के सांसारिक क़ानून से हटकर एक ऐतिहासिक घटना है। उन्हें भाईयों के ईर्ष्या–द्वेष, अन्धेरे कुंए में पड़ें रहने और क़ाफ़िला वालों की गुलामी से दो चार होना पड़ा जिसमें मौत और अपमान का पूरा ख़तरा था, किन्तु वह इन सब से सही सालिम बच निकलते और ज़िन्दा रहते हैं। उन्हें पाक दामनी व वफ़ादारी व शराफत के सख़्त इम्तेहान से गुज़रना पड़ता है। वह विरोधी पक्ष की साज़िश में फंस कर जेल जाते हैं। और सबसे बढ़कर यह कि यह सब अपने शहर से दूर उस जगह होता है जिस जगह और क़ौम से मिस्री कठोर दुश्मनी रखते थे और इस्राईली होने का अर्थ था कि सम्मान व सत्ता में उसका कोई हिस्सा नहीं। यह सब घटनाये उनकी गुमनामी व बदनामी किसी भी प्रतिष्ठा के पद से उनके वंचित रहने का कारण बन सकते थे, न कि इसके बाद वह मिस्र के बादशाह होते, और लोगों पर उनका हुक्म चलता। परन्तु इस के विपरीत लोगों ने हज़रत युसूफ अ० को मिस्र के सिंहासन पर बैठते देखा। कुरआन कहता है :–

अनुवादः "और यूँ हमने युसूफ को इस देश में अधिकार दिया कि उसमें जहाँ चाहे रहे। हम जिसपर चाहते हैं अपनी मेहरबानी भेजते हैं

और अच्छे काम करने वालों के प्रतिफल हम बेकार नहीं होने देते।"

(सूरः यूसुफ–५६)

अन्तिम नबी हज़रत मोहम्मद स० और उन पर ईमान लाने वाले कुरैश के लोग, वह भी ऐसे ही प्रतिकूल वातावरण से दो चार थे और उन्हें भी तादाद की कमी, संसाधनों के अभाव, कौम के विरोध घेराव, दबाव, और निरन्तर ख़ौफ व खतरा का सामना था। कुरआन का इरशाद है :–

अनुवादः "वह समय याद करो जब तुम बहुत थोड़े और ज़मीन में कमज़ोर थे और तुम्हें यह डर लगता रहता था कि लोग तुम्हें कहीं उचक न लें।"

(सूरः अनफ़ाल–२६)

अल्लाह के रसूल(सल्ल०)को ग़ैबी मदद और उज्जवल भविष्य की खुशख़बरी :–

इस निराशाजनक स्थिति में अल्लाह ने अपने रसूल स० से हज़रत यूसुफ़ का क़िस्सा बयान किया अल्लाह के रसूल स० की सीरत (आचरण) हज़रत यूसुफ़ अ० के क़िस्से से बहुत कुछ मिलती जुलती है क़बीला कुरैश का जो बर्ताव अल्लाह के रसूल स० के साथ था ऐसा ही बर्ताव हज़रत यूसुफ़ अ० के भाईयों ने उनके साथ

किया था। दोनों जगह शुरू में ईर्ष्या व द्वेष और अन्त में श्रद्धा व सम्मान का मामला दिखाई पड़ता है। हज़रत यूसुफ़(अलै०का कुएं के अन्धेरे में रहना और अल्लाह के रसूल स० का 'ग़ारे सौर' का मरहला एक दूसरे के अनुरूप है। दोनों के दुश्मनों की तरफ से यह एलान एक सा है :–

अनुवादः "खुदा की क़सम, अल्लाह ने आपको हम पर फ़ज़ीलत (उत्कृष्ट) दी और हम ही खतावार थे।"

(सूरः यूसुफ–९१)

और दोनों सरदारों ने अपनी क़ौम को एक सा उत्तर दिया :–

अनुवादः "आज तुम पर कोई मलामत नहीं। अल्लाह तुम्हें माफ़ करे। और वह रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम वाला है।

कुरआन ने इस महान किस्से को इस प्रकार प्रारम्भ किया है:–

अनुवादः "हम आपसे एक बेहतरीन किस्सा कहने जा रहे हैं, इसीलिए कि हमने आप पर कुरआन उतारा है, और यद्यपि आप इससे पहले ग़ाफ़िलों में थे।"

(सूरः यूसुफ़–३)

और किस्से को ख़त्म इस तरह किया गया है :–

अनुवादः "बेशक समझदारों के लिए इन लोगों के हालात में नसीहत है। यह कोई गढ़ी हुई बात नहीं है, बल्कि जो आसमानी किताबें

इससे पहले उतर चुकी हैं, उनकी तस्दीक़ करती है। और इसमें उन लोगों के लिए जो ईमान वाले हैं, हर चीज़ का ब्यौरेवार बयान, हिदायत और मेहरबानी है।"

(सूरः यूसुफ़–१११)

नबियों की कामयाबी मानवजाति की कामयाबीः–

फिर अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद (स०) से हज़रत मूसा और फ़िरऔन अ० और उसके साथियों का क़िस्सा बयान किया है। जो किस्सा सूरः क़सस में आया उसमें हज़रत मूसा (अ०) की कामियाबी और फ़िरऔन की चालों से आगाही, हज़रत मूसा की सलामती, दुश्मन की पराजय और बनी इस्राईल की विजय का बयान हुआ है। इस किस्से की भूमिका इस प्रकार बयान की गई है :–

अनुवादः "यह खुली किताब की आयतें हैं, हम आपको मूसा और फ़िरऔन का ठीक ठीक किस्सा मोमिन क़ौम की ख़ातिर बता रहे हैं। फ़िरऔन ने ज़मीन (मिस्र) में बड़ा बनने की कोशिश की और उसके वासियों को बांट दिया और एक वर्ग को उसने कमज़ोर करना शुरू कर दिया। वह उनके लड़कों को क़त्ल कर देता और लड़कियों को छोड़ देता था। वह फसादियों में से था। हम ख़ास तौर पर उन लोगों पर एहसान करना चाहते हैं जो ज़मीन में कमज़ोर बना दिये गये हैं। और उन्हें इमाम और वारिस बना देना और जमीन पर उनके क़दम जमा देना चाहते हैं। और फिरऔन व हामान और उनके लश्कर को जिस बुरे नतीजे से वह डरते थे, उसे दिखा देना चाहते हैं।"

(सूरः क़सस–१–६)

यह सारयुक्त व प्रभावी किस्से अल्लाह के रसूल स० की तसल्ली के लिए होते थे। कुरआन कहता है :–

अनुवादः "और दूसरे पैग़म्बरों के जितने क़िस्से हम तुमसे बयान करते हैं उनके द्वारा हम तुम्हारे दिल को मज़बूत करते हैं और इनसे सच्चाई तुम्हारे पास पहुँची, और ईमान वालों के लिए नसीहत और समझ।"

(सूरः हूद–१२०)

यह सच्चे क़िस्से अच्छाई और नेकी की ओर बुलाने वालों, दुख–दर्द में धैर्य रखने वालों और अल्लाह के रास्ते में जागने वालों के लिए सदैव ढारस और आशा व विश्वास के स्रोत रहे हैं।

यह अल्लाह की वह सुन्नत है जिसमें कभी अपवाद नहीं होता। यह एक ऐसा वृक्ष है जो सदा बहार है और जो हमेशा फल देता है। और जिस क़ौम में नबियों की यह विशेषतायें रच बस जायें वह अल्पसंख्यक होते हुए भी बहुसंख्यक हैं। कुरआन का एलान है :–

अनुवादः "कितनी ही छोटी जमाअतें, बड़ी जमाअतों पर अल्लाह के हुक्म से हावी हो गई और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।"

(सूरः बक़्रः २४६)

अनुवादः "न हिम्मत हारो न दुखी हो, तुम्हीं कामयाब होगे अगर तुम मोमिन हो।" (सूरः आले इमरान–१३६)

नबियों की दावत पर ईमान या तबाही व विनाश :–

नबियों के किस्से जो कुरआन में कभी विस्तार और कभी संक्षेप में बयान किये गये हैं और बार बार इनका उल्लेख आया है, इनमें यह बात बिना अपवाद के पायी जाती है कि नबी तमाम रुकावटों के बावजूद कामयाब होते हैं। उनकी विजयश्री की दो सूरतें होती हैं– या तो उनके विरोधी ईमान ले आते हैं और उनके सच्चे अनुयायी बन जाते हैं या फिर तबाह व बरबाद कर दिये जाते हैं।

जिस बात के प्रचार व प्रसार पर मानवजाति की नजात (उद्धार) निर्भर हैं उसके लिए प्रकृति के नियम भी तोड़ दिये जाते हैं और उसके लिए वह कुछ किया जाता है जिसका गुमान भी नहीं होता। ऐसे व्यक्तिगत अथवा सामूहिक प्रयास की अल्लाह के यहाँ कोई क़ीमत नहीं जो स्वार्थ की भावना से प्रेरित व निरर्थक होते हैं जो न अच्छाई को बढ़ावा देते हैं और न बुराई को दबाते हैं।

एक भ्रमात्मक विचारधारा : आज इस्लामी दुनिया में यह विचार लोकप्रिय होता जा रहा है कि सद्आचरण और नैतिक मूल्यों के मुक़ाबले में भौतिक संसाधन ही निर्णायक मापदण्ड है। बहुत से अच्छे अच्छे दीनदारों और धर्म के प्रचारकों का भी यह नारा हो गया है कि "भौतिक शक्ति सबसे पहले"। यही वह विचारधारा है जिसकी काट और रद्द नबियों के किस्सों में हमें बार बार देखने को मिलती है। मैं अपने ही एक निबन्ध का उद्धरण यहाँ प्रस्तुत करता हूँ :–

"एक लम्बी अवधि से हम अपने आप, अपनी क़ीमत व हैसियत को

भौतिक "शक्ति", "क्षमता", "संसाधन", "कच्चे माल", "देश की पैदावार", "संख्यात्मक शक्ति", "जंगी पोज़ीशन" से तौलने और नापने के आदी हो गये हैं, और हम कहीं अपना पलड़ा भारी और कहीं हल्का पाते हैं। और इससे प्रसन्न या अप्रसन्न होते हैं।

बहुत दिनों से पश्चिम के नेतृत्व पर हमारा ईमान सा हो गया है और मानो हमने मान लिया है कि यह भाग्यरेखा और अटल क़ानून है जिसमें कोई परिवर्तन सम्भव नहीं। और इस प्रकार वह पुरानी मसल फिर ज़िन्दा हो गई है कि "अगर तुमसे कहा जाये कि तातारियों ने कहीं हार खाई तो कभी इस पर विश्वास न करना"। हम अब पश्चिम की सत्ता और उसकी लीडरशिप को चैलेन्ज करने के बारे में कभी सोचते भी नहीं। और अगर कभी "ज्ञान व खोज" से आँख बचाकर और विवेक की अनदेखी कर के सोचते भी हैं तो हम अपने संसाधन व सम्भावनाओं, सैन्य शक्ति, हथियार–उत्पादन, और ऐटमी ताक़त की पोज़ीशन का जायज़ा लेते हैं, तो हमको निराशा घेर लेती है और हमें यक़ीन हो जाता है कि हम गुलामी, जीवन के धारे से दूर रहने, पश्चिम का मुहताज बने रहने और दो बड़ी ताकतों में से किसी एक से जुड़े रहने के लिए ही पैदा हुए हैं।"

मोमिन का हथियार – ईमान व अनुसरणः–

अल्लाह ने कुरआन में नबियों का आचरण और उनके दुश्मनों का जो अंजाम बताया है उससे भौतिकवाद की विचारधारा टकराती है और हमें इस प्रकार यह बात स्पष्ट रूप से बताई गई है कि नबियों की कामयाबी का भेद "ईमान" व "अनुसरण" और "अल्लाह की ओर बुलावे" में

निहित है। कुरआन कहता है :—

अनुवादः "और हमने उनमें से इमाम (अगुवा) बनाये जो हमारे आदेशानुसार निर्देश देते थे, यह उनके धैर्य और हमारी बातों पर विश्वास के कारण हुआ।"

(सूरः सज्दः २४)

अनुवादः "ऐ वह जो ईमान लाये हो अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा, और तुम्हारे क़दम जमा देगा।"

(सूरः मोहम्मद—७)

मुसलमानों का भविष्य नबियों के जीवन से जुड़ा है :—

इन सच्चे जतनपूर्ण क़िस्सों का यही सन्देश और सबक़ है जो हमें नबियों के जीवन और उन के आचरण से मिलता है। यही वह सीधा और सही रास्ता है जिस पर बिना अपवाद सभी नबी चलते रहे। और कुरआन ने जिनकी छाप सुरक्षित रखी है। कमज़ोर क़ौमों के लिए अगर कोई आशा का रास्ता हो सकता है तो यही हो सकता है।

पाँचवा व्याख्यान

हज़रत मोहम्मद सल्ल० के पैग़म्बरी की महानता :–

अज्ञानता के इस युग का दुखद् पहलू यह न था कि पाप, अन्याय व अनाचार, मानवाधिकारों का हनन हो रहा था और न ही यह था कि ईश्वर के परम भक्तों की कमी हो गई थी और न यह कि जालिम बादशाहों का बोलबाला था– यह सब मानव जाति के इतिहास में बार बार हो चुका और इसके सुधार के लिये समाज सुधारक अपने अपने समय में काम भी करते रहे हैं।

वास्तव में अज्ञानता के इस युग का दुर्भाग्य यह था कि सही ज्ञान, नेकी और हक़ के लिये सीना तान कर खड़े हो जाने वाले न रह गये थे। ऐसे लोगों की नितान्त कमी हो गई थी जो बुराई को मिटा कर नेकी की बुनियादों पर एक नये युग का निर्माण कर सकें।

सही ज्ञान की कमी :– अज्ञानता के इस युग में सही ज्ञान का लोप हो गया था, वह ज्ञान समापृप्राय था जिसके द्वारा मनुष्य अपने पालनहार को अच्छी तरह पहचानता और उस तक पहुंचता है। ऐसे युग में यदि किसी में सही ज्ञान प्राप्ति की पिपासा पाई भी जाये तो उसके लिए दूषित वातावरण रुकावटें पैदा करता है। ऐसे युग का ज्ञान अज्ञानता और विरोध की मिलावट लिए हुए होता है। इसमें सही कम, ग़लत ज्यादा और नफा थोड़ा व नुकसान ज़्यादा होता है। ऐसा ही अज्ञानता का वह युग था जिसके कुप्रभावों से मानव जाति को छुटकारा दिलाने के लिये हज़रत मुहम्मद स० का जन्म हुआ और उन्हें पैग़म्बरी मिली।

संकल्प की कमी :— और यदि कहीं कहीं यह सही ज्ञान पाया भी जाता है तो उसमें संकल्प और सत्यनिष्ठा की कमी होती है। अज्ञानता के जिस युग में हज़रत मुहम्मद स० का जन्म हुआ उसमें सत्य की खोज की भावना समाप्त हो चुकी थी। सारी क्षमतायें क्षीण पड़ गई थीं और मनुष्य की सारी क्षमतायें पेट भरने, इच्छाओं की पूर्ति, बादशाहों का अन्धा अनुसरण और उनके लिये जान दे देने में ख़र्च हो रही थीं। प्रेम की चिन्गारी बुझ चुकी थी और उन पर मायाजाल की बर्फ जम गई थी। बुतपरस्ती और ओछे किस्म के रीति रिवाज धर्म के लक्षण के रूप में बाक़ी रह गये थे।

सच्चाई के पक्षधरों की कमी :— यदि कहीं ऐसे वातावरण में सही ज्ञान व दृढ़ संकल्प वाले मिलते भी थे तो कोई वर्ग उनका हामी व मददगार न था, और यह लोग जो गिरजाघरों, मन्दिरों या ग़ारों में एकान्त में पड़े थे ऐसे दीपक के समान थे जिसकी बाती जल चुकी हो और तेल समाप्त हो चुका हो, उनकी मिसाल ऐसे जुगनुओं की थी जो जाड़े की रातों में इधर उधर उड़ते और चमकते हैं लेकिन उनसे न कोई भूला भटका राही रास्ता पा सकता है और न कोई सर्दी से काँपता हुआ व्यक्ति गर्मी पा सकता है।

एक नव प्रभात की ज़रूरत :—

वह ज्ञान जो लोगों को इस सृष्टि के रचयिता की सही पहचान कराये, जो ईमान व विश्वास की अलख जगाये, दिलों को प्रेम की ज्योति से प्रकाशित करें, जो लोगों को अन्धेरे से उजाले तक ले जाये वह ज्ञान हज़रत मुहम्मद स० के द्वारा और उनके माध्यम से लोगों

को मिला, वही सही ज्ञान बुतपरस्ती और अन्धविश्वास का ख़ात्मा कर सकता था। कुरआन कहता है :—

अनुवादः "जो लोग किताब वालों में से काफिर थे और जो शिर्क करने वाले थे वे बाज़ आने वाले न थे जब तक कि उनके पास खुली दलील अर्थात् अल्लाह की तरफ से रसूल न आ जाता जो पवित्र पन्नों का पाठ करता जिनमें क़ीमती किताबें हैं।"

(सूरः अल बय्यिनतिः १—३)

इन्सान को गुमराह करने की साज़िश :—

अच्छा काम करने का संकल्प सदैव सही ज्ञान व दृढ़ विश्वास के अधीन होता है किन्तु अज्ञानता के युग में अडिग विश्वास मिट गया और इन्सान को ईश्वर के अस्तित्व और पारलौकिक जीवन की चिन्ता न रही वह उस से वंचित हो गया। दर्शनशास्त्र व शिर्क ने इस स्थिति को बढ़ावा दिया। दर्शनशास्त्र ने ईश्वर के गुणों को नकारने में अतिश्योक्ति से काम लिया और शिर्क ने इन गुणों में प्राणियों को सम्मिलित कर दिया इस प्रकार दोनों ने बन्दा और मालिक के सम्बन्धों को नुकसान पहुंचाया। अतएव जिस व्यक्ति का सम्बन्ध दर्शनशास्त्र से हुआ उसे ऐश्वरीय गुणों से कोरे खुदा की ओर झुकने और उससे डरने अथवा की कुदरत (परम शक्ति) से कोई उम्मीद रखने की कोई ज़रूरत ही नहीं महसूस हुई और जो शिर्क से ग्रसित हुआ वह प्राणी जगत से ही मांगने और निवेदन करने में व्यस्त रहा और उसे अनदेखे खुदा से याचना की न ज़रूरत महसूस होती थी और न इसकी फुरसत मिलती थी।

इस प्रकार दुनिया दो कैम्पों में बंट गई थी – एक कैम्प का पारलौकिकजीवन (आख़िरत) से कोई सरोकार न था और दूसरे को दुनिया के पालनहार से सवाल की फुरसत ही नहीं थी। इन दो बातों ने भक्त व ईश्वर का नाता तोड़ के रख दिया। मनुष्य मन–मानी तौर से बादशाहों की गुलामी और मनचाही करने लगा। वह अपने ही हाथ के गढ़े हुए ख़ुदाओं को पूजने लगा। और प्रेम व परमात्मा से लगाव की ज्वाला बुझ कर रह गई।

अज्ञानता के वातावरण में परिवर्तन नबी की शिक्षा से ही संभव है :–

ऐसे वातावरण में कोई परिवर्तन लाना आसान न था। लोगों को बादशाहों की ख़ुशामद से हटा कर अनदेखे ख़ुदा से लौ लगाने पर आमादा व तैयार करना एक अत्यन्त कठिन कार्य था। यह भी सम्भव न था कि उसके संकल्प को आसानी से मोड़ा जा सके। यह काम बल्कि यह कारनामा कोई ईश–दूत (रसूल) ही अंजाम दे सकता था। क्योंकि इसके लिये अटल व अडिग विश्वास वाले ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत होती है जिसे पहाड़ भी न हिला सके। हज़रत मुहम्मद स० के इस वाक्य में ऐसे ही दृढ़ संकल्प की झलक मिलती है आपने कहा :

अनुवाद: "अगर कुरैश मेरे दायें हाथ में सूरज और बायें में चांद भी रख दें तो मैं तबलीग़ (धर्म प्रचार) के इस काम को तर्क नहीं कर सकता। यहां तक कि अल्लाह इसे ग़ालिब कर दे या मैं इसकी तलब में मर जाऊँ।"

(अल्बदाया व अलनेहाया –३/४३- इब्ने कसीर)

इस काम के लिए ऐसे मज़बूत ईमान की ज़रूरत है जिसे दुनिया की कोई ताक़त बदल न सके और न डगमगा सके। उस अडिग विश्वास को देखकर दुनिया ठगी सी रह जाती है। हज़रत मोहम्मद स० अपने साथी के साथ गार में हैं। जान के भूखे उनके दुश्मन गुफा के दहाने पर खड़े हैं। दुनिया की निगाहों में बचने की कोई सूरत नहीं है। मगर अल्लाह के नबी अपने साथी को तसल्ली देते हुए कहते हैं :–

"ग़म न करो, अल्लाह हमारे साथ है।"

नबी की निगाहें बहुत पहले एक बदवी फ़क़ीर सुराक़ा के हाथों में ईरान के सम्राट किस्रा के कंगन और भूख व प्यास के बावजूद ख़न्दक़ के एक पत्थर की चिंगारी में रोम के सम्राट का सफेद महल देख लेती हैं। हिज्रत के समय सुराक़ा जब आपका पीछा करता हुआ पहुंचा और उसके घोड़े के पांव जमीन में धंस गये, उसने आपसे क्षमायाचना की तो आपने कहा, "सुराक़ा वह कैसा समय होगा जब ईरान के सम्राट किस्रा के कंगन तुम्हारे हाथ में होंगे।" मदायन पर विजय के समय जब किस्रा के सोने के कंगन लूट के माल में आये तो हज़रत उमर ने सुराक़ा को पहनाया और नबी स० की भविष्यवाणी अक्षरशः पूरी हुई। इसी प्रकार ख़न्दक़ की लड़ाई में जब आपने एक पत्थर पर कुदाल मारी उससे एक चिन्गारी निकली तो आपने कहा कि इस रौशनी में मैंने क़ैसर का महल देखा। आपकी यह पेशीनगोई भी सही साबित हुई और मुसलमान क़ैसर के महल पर क़ाबिज़ हुए।

विश्वव्यापी अज्ञानता ऐसे ही ताक़तवर और दृढ़ ईमान के द्वारा

समाप्त होती है और उसका स्थान विश्वास व संकल्प लेते हैं। कुरआन कहता है:–

अनुवाद: "वही है जिसने अनपढ़ों में उन्हीं में के एक (मुहम्मद स०) को पैग़म्बर बना कर भेजा कि वह उनको उस (अल्लाह) की आयतें पढ़–पढ़कर सुनाता है और उनको पाक करता है और उनको (अल्लाह की) किताब (के ज़रिये ज्ञान) और हिकमत (विज्ञान) सिखाता है और इससे पहले तो यह (अ़रब) खुली गुमराही में थे।"

(सूरः अल–जुमा–२)

अनुवाद: "वही है जिसने अपना पैग़म्बर, हिदायत और सच्चा दीन दे कर भेजा ताकि उसको तमाम धर्मों पर श्रेष्ठता दे और शिर्क करने वाले चाहे कितना ही नापसन्द करें।" (सूरः अस्सफ़ि–६)

स्थायी सुधार की आवश्यकता :–

अज्ञानता का यह बिगाड़ कुछ समाज सुधारकों अथवा किसी शक्तिशाली समुदाय या किसी बड़ी संस्था के बस से बाहर था क्योंकि यह बिगाड़ अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया था। इसके लिऐ एक पूरी उम्मत की ज़रूरत थी जो इसके लिए निरन्तर प्रयास करती रहे और इस धरती पर फैल कर असत्य जहाँ भी हो उसका मुक़ाबला करे और वसुन्धरा को न्याय से भर दे। इस प्रकार दुनिया को एक दृढ़ संकल्प वाले पैग़म्बर की ज़रूरत थी जिसकी उम्मत एक महान उम्मत हो और जो इस काम को करे। अतएव ऐसा ही हुआ:–

अनुवादः "तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए बरपा की गई है। तुम नेकी का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो।"

(सूरः आले इमरान--११०)

मित्रों ! हज़रत मुहम्मद स० को पैग़म्बरी ठीक उस समय मिली जब मानवता इसके लिए उसी प्रकार आतुर थी जैसे गर्मी से झुलसी हुई ज़मीन मौसम की पहली बारिश के लिए होती है। कुरआन में इस स्थिति को इस प्रकार बयान किया गया है :–

अनुवादः "और तुम ज़मीन को मुरझाई हुई देखते हो और जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो लहलहा उठती है, उभरने और हर प्रकार के सुन्दर फल–फूल उगाने लगती है। यह सबूत है कि अल्लाह ही वास्तव में पूज्य है और वही मुर्दे को जिलाता है और वह हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है।" (सूरः अल हज–५–६)

हज़रत मुहम्मद(स०)के अभ्युदय के क्रान्तिकारी प्रभावः–

एकाएक मानवजाति के इस मुर्दा शरीर में जीवन लहरी दौड़ने लगती है और अचानक यह मुर्दा जो सड़ने गलने के क़रीब था अंगड़ाई लेने लगता है। इस स्थिति का उल्लेख करते हुए इतिहासकारों ने लिखा है कि किस्रा के महल काँप उठे और फ़ारस की आग बुझ गई। आपने देखा होगा कि पक्की और मज़बूत इमारतें और ऊँची ऊँची अट्टालिकायें भूचाल के एक झटके से पतझड़ में गिरने वाले पत्तों की तरह ज़मीन पर आ रहते हैं तो क़ैसर व किस्रा की शान व शौकत और फिरऔन के कारनामें हज़रत मुहम्मद स० के अभ्युदय से

क्यों पतनोन्मुख नहीं हो सकते ?

एक नये युग का अभ्युदय :–

हज़रत मुहम्मद (स०) का अभ्युदय केवल एक नबी या एक उम्मत अथवा एक युग का अभ्युदय नही बल्कि एक नई दुनिया का अभ्युदय था। और यह दुनिया क़यामत तक बाक़ी रहेगी। आपके अभ्युदय की छाप इस दुनिया के चप्पे चप्पे पर और कण कण में रच बस गई है और इसका उसके चिन्तन, सभ्यता व संस्कृति, आचार–व्यवहार, ज्ञान और कल्चर से अलग होना सम्भव नहीं। और अगर यह उससे अलग कर दिये जायें तो यह दुनिया बेजान हो कर रह जायेगी। आपके आगमन से पूर्व दुनिया का यह हाल था कि वह समाप्त प्राय थी और उसकी बुनियाद हिल चुकी थी। समाज में बिगाड़ ही बिगाड़ था। कुरआन में इसका उल्लेख यों आया है :–

अनुवादः "लोगों के करतूतों के कारण जल और थल में फ़साद फैल गया ताकि वह उन्हें उन के किये का कुछ मज़ा चखाये, शायद वह अपने किये से बाज़ आयें।"

(सूरः रूम–४१)

अज्ञानता के युग की तस्वीर :– सर्व विद्यमान ईश्वर ने ज़मीन पर क्या देखा ? उसने या तो किसी को बुत के आगे माथा टेकते देखा या किसी को पेट का पुजारी या किसी को सुल्तान और शैतान का बन्दा पाया। जहाँ तक सच्चे धर्म, सच्ची तड़प, सद्ज्ञान और सद्कर्म और पारलौकिक जीवन के लिए प्रयास का प्रश्न था तो इनका सर्वथा अभाव

था। शाह वली उल्ला देहल्वी ने अपनी महान कृत 'हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा' में इस युग का जो चित्रण प्रस्तुत किया है वह इस प्रकार हैः–

अनुवादः "शताब्दियों से स्वच्छन्द हुकूमत करते करते, मायाजाल में लीन रहने, आख़िरत को एकदम भूल जाने और शैतान के पूरे चंगुल में आ जाने के कारण ईरानियों और रोम वालों ने जीवन की सुख सुविधाओं और भोग–विलास में बड़ी बारीकी पैदा कर ली थी। और इसमें हर प्रकार की तरक्क़ी और सौन्दर्य में एक दूसरे से आगे जाने का प्रयास करते थे। दुनिया के कोने कोने से उनके यहां बड़े बड़े कला कौशल के पंडित जमा हो गये थे जो भोग विलास की इन वस्तुओं में तराश–ख़राश निकालते थे। और इस में निरन्तर बढ़ोत्तरी होती थी। जीवन स्तर इतना ऊँचा हो गया था कि रईसों में से किसी का एक लाख दिरहम से कम का पटका बान्धना और ताज पहनना बुरा समझा जाता था। अगर किसी के पास आलीशान महल, फौव्वारा, स्नानघर, बाग़, तैयार जानवर, खूबसूरत जवान और गुलाम न होते, खाने–पीने में विलासता और पहनावे में तड़क भड़क न होती तो उसकी कोई इज़्ज़त न होती। इसका विवरण बहुत विस्तृत है। अपने देश के बादशाहों का जो हाल देखते और जानते हो उससे अनुमान लगा सकते हो। यह तमाम विलासतायें उनके जीवन का अंग बन गई थीं। और उनके दिलों में इस प्रकार रच बस गये थे कि किसी तरह निकल नहीं सकते थे। इसके कारण एक ऐसी असाध्य बीमारी पैदा हो गई थी जो उनकी पूरी सामाजिक व्यवस्था में घर कर गई थी। यह एक महामारी थी जिससे साधारण और विंशिष्ट, अमीर व ग़रीब कोई सुरक्षित नहीं रहा था। प्रत्येक नागरिक पर इसका

ऐसा भूत सवार था जिसने उनके जीवन को अजीरन बना दिया था, और हर समय वह चिन्ता से पीड़ित रहता था। बात यह थी कि विलासता की यह चीजें बिना पर्याप्त धन खर्च किये प्राप्त नहीं हो सकती थीं और यह धनराशि और अपार दौलत किसानों, व्यापारियों और दूसरे व्यावसायियों पर टैक्स बढ़ाये बिना प्राप्त नहीं हो सकती थी। अगर वह इनके अदा करने से इन्कार करते तो उनसे लड़ाई की जाती और उन्हें दण्डित किया जाता और यदि वे इसकी पूर्ति करते तो उनको गधों और बैलों की तरह बना लेते जिनसे सिंचाई और खेती का काम लिया जाता, और केवल सेवा कार्य के लिए उनको पाला जाता है और मेहनत से उनको किसी समय छुट्टी नहीं मिलती, फलतः उन्हें सर उठाने और आख़िरत के बारे में सोचने की उन्हें मोहलत ही न मिलती थी। प्रायः पूरे पूरे देश में एक भी व्यक्ति ऐसा न मिलता जिसको अपने धर्म की चिन्ता होती"।

नवचेतना :–

हज़रत मुहम्मद(सल्ल0)के अभ्युदयस ने अज्ञानता के इस वातावरण को एकदम बदल दिया, आमूल–चूल परिवर्तन कर दिया। और सभ्य संसार में ईमान व ईश्वर – भक्ति, आख़िरत के लिये कोशिश, मानवता को उसके दुश्मनों से बचाने, कौमों को पतन के बाद उत्थान, और लोगों को लोगों की बन्दगी (भक्ति) से निकाल कर ख़ुदा की बन्दगी में लाने, अनाचार व अत्याचार का ख़त्मा कर के इस्लाम के न्याय की ओर लाने वाली शक्तियां उठ खड़ी हुई और इस महान कार्य में सूरमाओं के साहस, विद्वानों की क्षमतायें, बुद्धिजीवियों की बुद्धि, साहित्यकारों व कवियों का चिन्तन, जियालों की तलवारें, ज्ञानियों के

कलम और विशिष्ट व्यक्तियों की अपार क्षमतायें लग गई। और इस दुनिया में जो अब तक मनमानी करने की आदी, काम और लोभ की दासी थीं, अब हर ज़माने में और हर जगह ईश्वर के सच्चे भक्त, सद्ज्ञानी, न्यायप्रिय शासक त्यागी बादशाह, लौहपुरुष इतने अधिक पाये जाने लगे कि गिनती से बाहर। इन पर ईश्वर को गर्व था और इतिहास इनका आदर करने पर मजबूर और दुश्मन भी इनके आगे नत मस्तक थे। और अन्ततः सही और लाभ दायक ज्ञान, और सत्कर्म, नेकी और अच्छाई को पसन्द करने की दृढ़ भावना का समाज में संचार हो गया। लोग नेकी का हुक्म देते और बुराई से रोकते, अल्लाह पर ईमान लाते और उसके रास्ते में जेहाद (संघर्ष) करते और किसी मलामत और निन्दा की परवाह न करते।

हज़रत मोहम्मद(सल्ल०) का महान चमत्कार :–

इमाम इब्ने तयमिया ने अपनी पुस्तक, 'अल–जवाब–अल–सही' में हज़रत मोहम्मद(सल्ल)के अभ्युदय से जो क्रान्ति आई और उसके जो क्रान्तिकारी प्रभाव दुनिया पर पड़े, उसका चित्रण इस प्रकार किया है:–

अनुवादः "अल्लाह के रसूल सल्ल अल्लाह के हुक्म पर पूरी तरह क़ायम रहे और इसमें पूरी निष्ठा, व वफादारी बरतते रहे। कभी कोई झूठ, किसी पर अत्याचार, किसी से बेवफाई साबित नहीं, बल्कि आप लोगों में सबसे ज्यादा सच्चे, मध्यममार्गी, और बचन के पक्के थे, यद्यपि आप जंग व सुलह, शान्ति व भय, भुखमरी के हालात से बराबर गुज़रते रहे, लेकिन इन तमाम हालात में अच्छे और प्रिय रास्ते से आप कभी नहीं

हटे, यहां तक कि इस्लाम अरब प्रायद्वीप में फैल गया, वह अरब प्रायद्वीप जहां इससे पहले मूर्तिपूजा, सितारों की पूजा, शिर्क, मारकाट से भरा था और जो आख़िरत को जानता तक न था। अब वहां के वासी भूतल पर सर्वाधिक ज्ञानी, धर्मात्मा, न्यायप्रिय और शिष्ट बन गये। यहां तक कि शाम (सीरिया) के बसेरा भी उनको देख कर कहने लगे कि, "मसीह के साथी और हवारी इनसे बेहतर न थे। और भूतल पर आज भी मुसलमानों और गैर मुस्लिमों के ज्ञान व कर्म के आसार (लक्षण) फैले हुए हैं और समझदार लोग दोनों का अन्तर स्पष्ट रूप से अनुभव करते हैं।" इसी प्रकार आपकी उम्मत उन तमाम उम्मतों से हर मामले में उत्कृष्ट व बेहतर है। अगर उनके ज्ञान का मुक़ाबला दूसरी क़ौमों के ज्ञान से, और उनके धर्म व उपासना का दूसरों के धर्म व उपासना से किया जाये तो मालूम होगा कि वह ज्ञान व उपासना में दूसरों से बहुत आगे हैं। और अगर उनकी बहादुरी और अल्लाह के रास्ते में जेहाद (संघर्ष) और अल्लाह के लिये दुख–दर्द झेलने का जायज़ा लिया जाय तो ज्ञात होगा कि वह इस क्षेत्र में भी सबसे बढ़कर है। और अगर उनकी उदारता और परोपकार की भावना, त्याग व तपस्या और सदाचरण पर दृष्टिपात करें तो मालूम होगा कि वे दूसरों के मुक़ाबले में अधिक उदार और शरीफ़ है। और यह तमाम गुण इस उम्मत को हज़रत मुहम्मद स० ही से प्राप्त हुये थे और आप ही ने इन बातों की शिक्षा–दीक्षा दी थी।

आपकी उम्मत के लोग किसी किताब के ताबे नहीं थे जिसकी पूर्ति के लिए आप आये हों जैसा कि मसीह तौरात की शरीअत की पूर्ति के लिए आये थे और मसीही लोगों के सदाचरण और उनके ज्ञान व विज्ञान

का कुछ अंश तौरात से, कुछ ज़बूर से, कुछ दूसरे नबियों की शिक्षा से, कुछ हजरत मसीह से और कुछ आपके बाद के लोगों जैसे हवारियों और उनके हवारियों से उद्धरित हैं। इसके अलावा उन्होंने दर्शनशास्त्र आदि से भी मदद ली। और मसीही धर्म में सशोधन के समय उसमें ऐसी बातें समो ली जो मसीही धर्म के प्रतिकूल थे।

लेकिन हज़रत मुहम्मद स० की उम्मत आपके आने से पहले किसी किताब से वाक़िफ़ न थी, बल्कि उनकी बड़ी संख्या मूसा, ईसा, दाऊद अ० और तौरात व इंजलि व ज़बूर पर ईमान भी आप ही के कहने से लाई। आप ही ने उन्हें हुक्म दिया कि वह तमाम नबियों पर ईमान लायें और अल्लाह की तरफ़ से उतारी हुई हर किताब का इक़रार करें और किसी रसूल (ईश—दूत) के विरुद्ध भेद—भाव न बरतें।

छठा व्याख्यान

हज़रत मोहम्मद(सल्ल०)की पैग़म्बरी का कारनामा :–

'मानव की गरिमा', सृष्टि की रचना मानव के लिये की गई है। इसका उत्थान–पतन, इसका बनाव बिगाड़ मानव जाति से ही सम्बद्ध रहा है और रहेगा। अतएव यदि वास्तविक मानव का अस्तित्व रहे और दुनिया की शेष सभी वस्तुएं, माल व दौलत, बनाव सिंगार समाप्त हो जाये तब भी दुनिया किसी बड़े घाटे में नहीं रहेगी वास्तविक मानव का अस्तित्व हर खोई हुई वस्तु का बदल, हर घाटे की पूर्ति और हर बेबसी का इलाज है। मानव अपने मनोबल, पौरुष, परिश्रम और उत्साह से दुनिया को उसकी खोई हुई तमाम चीज़े उपलब्ध करा सकता है। और केवल यही नहीं बल्कि पहले से बेहतर बना सकता है। यदि दुनिया अथवा दुनिया के किसी ज़िम्मेंदार को यह अधिकार दिया जाये कि वह इन्सान बिना दुनिया और दुनिया बिना इन्सान में से किसी एक को चुन ले, तो वह निःसंकोच निश्चित ही इन्सान को ही चुनेगा। क्योंकि दुनिया इन्सान ही के लिए बनाई गई है और उसकी रौनक़ इन्सान ही से है।

इस दुनिया का दुर्भाग्य यह नहीं कि मशीनें व संसाधन और साज़ व सामान की कमी हो जाये, बल्कि दुर्भाग्य यह है कि इन संसाधनों व मशीनों का ग़लत प्रयोग होने लगे। घटनाओं से भरीहुई इस दुनिया के लम्बे इतिहास में जो कुछ मुसीबत आई उसका कारण मानव का सद्मार्ग से हट जाना है। संसाधन तो मनुष्य के लिए खामोश और निर्दोष

उपकरण है जिनका वह मालिक है और जिसका हुक्म वह मानते हैं। इन उपकरणों का यदि कोई दोष हो सकता है तो केवल इतना कि वह इस मुसीबत में तेज़ी ला देते हैं।

मानव स्वभाव विचित्र है : भेद व चमत्कार से युक्त यह सृष्टि और उसका सौन्दर्य मानव बुद्धि को चकित कर देता है। किन्तु मानव प्रवृत्ति के भेद व चमत्कार, उसकी निहित शक्ति व क्षमता, उसके मन की गहराई और उसकी चंचलता, मानव चिन्तन की उठान, उसके दिल की तड़प उसकी आकांक्षायें, उसका हौसिला, उसकी हिम्मत, उसकी असीम व अपार क्षमताओं की यदि दुनिया के चमत्कार से तुलना करें तो यह विशाल सृष्टि उसके सामने ऐसी लगेगी जैसे समुद्र के आगे एक बून्द अथवा मरुस्थल के आगे एक कण और अपनी विशालता के साथ मानव मन की गहराई में इस प्रकार लुप्त हो जायेगी जैसे एक छोटी सी कंकरी एक महासागर में गुम हो जाती है। उसके अडिग व अटल ईमान के आगे पहाड़ हेच हो जायें। उसके प्रेम की ज्वाला आग को ठंडी कर दें। और खुदा के डरने अथवा किसी निर्बल पर तरस खाने या पापों के प्रायश्चित पर निकले हुये आंसू के एक बूँद को देख कर समुद्र पानी पानी हो जाये। मानव आचरण का सौन्दर्य, उसके किरदार की सुन्दरता और उसकी भावनाओं का मज़ा यदि मिल जाये तो इस दुनिया की तमाम रंगीनियों पर पानी फिर जाये। मानव का अस्तित्व इस सृष्टि में एक सुडौल मोती की हैसियत रखता है जिसे सृष्टा ने सर्वोत्कृष्ट प्राणी बनाया है।

सर्वोत्कृष्ट प्राणीः— दुनिया के तमाम ख़ज़ाने, दौलत व हुकूमत

मिल कर मानव के विश्वास का बादल नहीं बन सकते वह विश्वास जो अडिग और अटल होता है। उसके निःस्वार्थ प्रेम व अनुराग, उसकी असीम व अपार भावना उसकी सत्यनिष्ठा, उसके सदाचरण और निःस्वार्थ सेवा भाव की जगह यह नहीं ले सकते।

मानव अगर अपने आपको पहचान ले और अपनी क़ीमत मांगे तो यह दुनिया उसका दाम नहीं लगा सकती मानव प्रवृत्ति की गहराई को न नापा जा सकता है न उसकी तह तक पहुंचा जा सकता है वह अगम व अगाध्य है। उसकी चकाचौंध कर देने वाली क्षमतायें उसके ज्ञान, उसकी सज्जनता, उसके अनुराग, उसके त्याग व तपस्या, उसके स्वाभिमान, उसकी विनम्रता, उसकी ईश–भक्ति, उसकी सेवा भावना, कला कौशल में उसकी लगन को देखकर अच्छे अच्छों का दिमाग़ चकरा जाता है।

हज़रत मुहम्मद(स०) की पैग़म्बरी :–

मानव का अस्तित्व तमाम अच्छाईयों की जड़ और हर समस्या का समाधान है। और जब उसमें बिगाड़ आ जाता है और सच्चा इन्सान नदारद हो जाता है और जब अच्छे इन्सान बनाने का रिवाज़ उठ जाता है तो यही स्थिति तमाम पैग़म्बरों का विषय बनी है। और हर नबी अपने समय में इसी अभियान को ले कर उठा है। और हालात के सामने वह और उसके साथी सीसा पिलाई दीवार बन कर खड़े हो गये हैं।

हज़रत मुहम्मद स० ने अच्छे इन्सान बनाने का काम वहां से प्रारम्भ

किया जहां से किसी नबी अथवा सुधारक को नहीं करना पड़ा था। आम तौर पर दूसरे नबियों की उम्मतों का सामाजिक स्तर अज्ञानता के युग से बहुत ऊपर था, फिर भी हज़रत मुहम्मद स० ने अपने इस महान कार्य को उस स्तर तक पहुंचा दिया जहां तक किसी नबी का काम नहीं पहुंचा था। आपने उस स्तर से कार्य प्रारम्भ किया जहां दानवता की चरम सीमा और मानवता की शुरुआत होती थी। और उसे मानवता की चरम सीमा तक पहुंचा दिया।

घटना जो कल्पना से अधिक रोचक है :-

हज़रत मुहम्मद स० की उम्मत का प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में एक चमत्कार और मानव के सर्वोत्कृष्ट प्राणी होने की एक खुली हुई दलील (तर्क) है। इतिहास के पन्नों में सुरक्षित उस समय के वास्तविक घटना चक्र से बेहतर तस्वीर किसी चित्रकार ने नहीं बनाई होगी। किसी कवि व साहित्यकार की कल्पना से परे है आपके साथियों की वास्तविक जीवनचर्या उनके सद्गुण उनकी पवित्रता व पाकीज़गी। दुनिया के तमाम साहित्यकार मिलकर यदि प्रयास करें तो ऐसा चित्र नहीं प्रस्तुत कर सकते जैसा उनका वास्तविक जीवन था वे हज़रत मुहम्मद स० की छत्रछाया में पले और बढ़े थे। उनका अडिग ईमान, उनका गहरा ज्ञान, उनके सद्विचार, हर दिखावे से पाक उनका जीवन, तानाशाही से उनकी दूरी, अल्लाह से उनका डरना, उनकी पवित्रता और लज्जा, मानव के प्रति उनका अनुराग, उनकी भावनाओं की कोमलता, उनका शौर्य, उनकी भक्ति भावना, धर्म पर मर मिटने की उनकी आतुरता, उनकी दिन की शहसवारी और रातों की इबादतगुज़ारी, मायाजाल से उनकी विरक्ता, उनकी न्याय प्रियता, उनकी रिआया परवरी

और रातों की ख़बरगीरी, और अपने आराम व आसानी पर प्रजा के आराम व आसानी को प्राथमिकता ऐसी चीज़े हैं कि अगली उम्मतों और इतिहास में उनकी कोई नज़ीर नहीं मिलती।

अच्छे लोग जीवन के हर क्षेत्र में :–

हज़रत मुहम्मद (स०) ने अपनी शिक्षा–दीक्षा से ऐसे नेक इन्सान बनाये जो अल्लाह पर ईमान रखने वाले, अल्लाह की पकड़ से डरने वाले, दीनदार व अमानतदार, दुनिया पर आख़िरत को प्राथमिकता देने वाले, भौतिक साधनों को हेय दृष्टि से देखने वाले और उन पर अपने ईमान व आध्यात्मिक शक्ति से विजय पाने वाले थे। और जिनका ईमान था कि दुनिया उसके लिये पैदा की गई है और वह आख़िरत के लिए बनाया गया है। अतएव जब यह व्यक्ति व्यापार के मैदान में आता तो सच्चा और ईमानदार व्यापारी होता, और अगर उसे फ़ाक़ा करना पड़ता तो वह एक शरीफ़ और मेहनती इन्सान नज़र आता, वह जब किसी इलाक़े का हाकिम होता तो एक परिश्रमी और भला करने वाला कर्मठ अधिकारी होता, वह जब मालदार होता तो ग़मख्वार (सहनशील) और उदार होता, जब वह अदालत की कुर्सी पर बैठता तो न्यायप्रिय क़ाज़ी साबित होता और जब वह जनता के धन–माल का अमानतदार बनता तो उसकी रक्षा करता।

इस्लामी समाज की बुनियादें :–

इन्हीं ईटों से इस्लामी समाज की इमारत बनी थी और इस्लामी हुकूमत इन्हीं बुनियादों पर क़ायम हुई थी। इन व्यक्तियों के आचरण व प्रवृत्ति की स्पष्ट छाप इस्लामी सामाजिक व प्रशासनिक

व्यवस्था पर थी, और इन व्यक्तियों की तरह इन से बना हुआ समाज भी नेक, अमानतदार, और सांसारिक जीवन पर पारलौकिक जीवन को प्राथमिकता देने वाला और भौतिक साधनों का स्वामी न कि उसका सेवक था। व्यापारी की सच्चाई व अमानत, दीन दुखियों की शालीनता व श्रमशीलता, एक कर्मयोगी का परिश्रम और सद्भावना, एक धनवान की सहृदयता व उदारता, एक न्यायमूर्ति का न्याय व सूझ–बूझ, एक शासक की निष्ठा व अमानतदारी, एक रईस व सरदार का शिष्टाचार, एक सत्यनिष्ठ सेवक की श्रम–शक्ति, और एक वफ़ादार अंगरक्षक की चौकसी इस्लामी समाज के अंग और अंश थे। और यह हुकूमत सद्भाव और सद्मार्ग की हुकूमत थी जो धार्मिक विश्वास को भौतिक लाभ पर और सद्मार्ग को मालगुजारी की वसूली पर प्राथमिकता देती थी। ऐसी सत्ता के अधीन जन मानस में हर तरफ ईमानदारी, सच्चाई व निष्ठा, श्रम व संघर्ष, लेन देन में सफाई और इन्साफ़ का वातावरण बन गया।

परीक्षा की घड़ी में सज्जनों की सफलता :–

इस समाज का प्रत्येक सुशील व्यक्ति हर उस कसौटी पर खरा उतरा जो व्यक्ति के कमज़ोर पक्ष को उजागर कर देती और उसकी क्षमताओं को परखती है। सारी चुनौतियों का सामना करता हुआ यह व्यक्ति चुनौती की भट्टी से खरे और ख़ालिस सोने की तरह निकला जिसमें कोई खोट और मिलावट न थी। उसने हर परीक्षा की घड़ी में ईमानदारी, अदम्य साहस व शौर्य, मनोबल, पवित्र अन्तरात्मा, ज़िम्मेंदारी का एहसास, अमानतदारी और त्याग व बलिदान के वह उच्च आदर्श प्रस्तुत किये जिसकी विख्यात व मर्मज्ञ मनोवैज्ञानिक, आचार्य व

इतिहासकार आशा भी नहीं कर सकते।

इन परीक्षा की घड़ियों में सबसे कठिन परीक्षा उस हाकिम की है जो किसी के आगे जवाब देह नहीं न उसे कोई टोह लेने वाली आंख देखती है न उसे किसी कमेटी और अदालत का सामना करना है – ऐसा हाकिम अपने लिए जायज़ चीज़ों और अपने ज़ाती माल की ओर से अरुचि दिखाता और उस तुच्छ लाभ का भी रवादार नहीं होता जिसकी शरीअ़त (धर्म आचार्य संहिता) इजाज़त देती और जिसका आमचलन है।

शासकों की परहेज़गारी और सादगी :–

इसकी बेहतरीन मिसाल यह है कि एक बार ख़लीफ़ा अबू बक्र सिद्दीक रज़ी० की पत्नी को कोई मीठी चीज़ खाने की इच्छा हुई और इसके लिए उन्होंने अपने दैनिक खर्च से कुछ बचत कर लिया। जब ख़लीफ़ा अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ी० को इसकी जानकारी हुई तो उन्होंने वह रक़म ख़जाने को वापस कर दी और अपने दैनिक आय से उतनी धनराशि की कटौती करा दी। उन्होंने कहा कि अनुभव से सिद्ध हो गया कि इतनी धनराशि अधिक थी और इससे कम में अबू बक्र के परिवार का गुज़ारा हो सकता है। मुसलमानों का ख़ज़ाना इस लिए नहीं कि इससे हाकिम का ख़ानदान भोग विलास का जीवन व्यतीत करे। और खाने पीने में अधिक ख़र्च से काम ले।

यहां एक दूसरी सच्ची तस्वीर ख़िलाफ़त के जुलूस की है और अपने समय के सबसे बड़े साम्राज्य के ताक़तवर हाकिम के उस

सरकारी दौरे के विवरण पर आधारित है जो सरकारी काम ही के लिए हुआ था। यह एक ऐसे शक्तिशाली हाकिम का दौरा था जिसका नाम मात्र सुनकर लोगों के दिल दहल जाते थे और वह थर्रा उठते थे। प्रसिद्ध इतिहासकार इब्ने कसीर इस दौरे का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि :—

"हज़रत उमर रज़ी० बैतुलमुक़द्दस जाते हुए एक मटमैले रंग की ऊँटनी पर सवार थे। धूप में आपके सर पर न कोई टोपी थी न पगड़ी। काठी के दोनों ओर आप पैर लटकाये हुए थे। उसमें रिकाब भी न थी। ऊँटनी पर एक मोटा ऊनी कपड़ा था जिसे आप उतर कर बिछाते थे। आप की गठरी जो चमड़े या ऊन की थी जिसमें पत्ते भरे हुए था। सवारी की हालत में उसी पर टेक लगाते और उतरने के बाद उसी का तकिया बनाते थे। आपकी क़मीज एक पुराने गाढ़े कपड़े की थी जो बग़ल की तरफ फटी हुई थी।

आपने वहाँ के सरदार को बुलवाया। जब लोग उसे बुलाने गये तो हजरत उमर ने कहा कि मेरा कुर्ता धो दो और इस के फटे हुए हिस्से में पेबन्द लगा दों, और तब तक के लिए मेरे लिए कोई कपड़ा या कुर्ता ले आओ। अत एव एक रेशमी कुर्ता लाया गया। आपने उसे देखकर आश्चर्यचकित हो कर पूछा यह क्या है ? लोगों ने कहा रेशम है। आपने कहा,. 'रेशम क्या होता है ? लोगों के बताने पर आपने अपना कुर्ता उतार कर स्नान किया। आप का पेबन्द लगा कुर्ता लाया गया तो आपने उनका रेशमी कुर्ता उतार कर अपना वही कुर्ता पहन लिया।

सरदार ने उन्हें सलाह दी कि आप अरब के बादशाह हैं, और यहां के लोगों में ऊँट कोई बहुत बड़ी चीज़ नहीं। इस लिए अगर आप कोई अच्छा कपड़ा पहन लें और घोड़े पर सवार हों तो इससे रोमवासी प्रभावित होंगे। उत्तर में आपने कहा, "हम वह कौम हैं जिसे अल्लाह ने इस्लाम के ज़रिये इज्ज़त दी तो अब अल्लाह के बदले हम किसी और चीज़ को नहीं अपनायेंगे।" एक घोड़ा लाया गया जिस पर आपने अपनी चादर डाल दी, उस पर न लगाम प्रयोग की और न रिकाब बान्धी, बल्कि यों ही सवार हो गये। लेकिन थोड़ी ही देर बाद कहा "रोको, रोको। मैंने इससे पहले लोगों को शैतान पर सवार होते नहीं देखा था।" अतएव आप का ऊँट लाया गया और आप उस पर सवार हुए।"१

इसी प्रकार इतिहासकार तिब्री ने आपके एक सफ़र का हाल लिखा है :–

"एक बार हज़रत उमर रज़ी० हज़रत अली रज़ी० को मदीना में अपना जानशीन बना कर सफर पर निकले। आपके साथ कुछ सहाबा भी थे। आप (लाल सागर के तट पर) 'अबला' जा रहे थे। जब उसके निकट पहुंचे तो रास्ते के किनारे हो गये, और अपने गुलाम (सेवक) को पीछे कर लिया। आपने वहाँ पहुँच कर इस्तिंजा किया, और लौट कर अपने गुलाम की सवारी पर सवार हो गये, और अपनी सवारी गुलाम को दे दी। अतएव जब लोगों का पहला गिरोह आपसे मिला तो उसने आपसे पूछा कि बादशाह कहाँ हैं ? आपने कहा कि तुम्हारे सामने हैं। इस पर वह आपको छोड़ कर आगे बढ़ गये, जब 'अबला' पहुँचे तो इन

१. अल्बिदाया व अल–निहायः ७ पृष्ठ ५६–६०

मिलने वालों ने जब बताया कि बादशाह 'अबला' पहुँच गये, तो लोगों ने आप को पहचाना और आप की तरफ लपके" ।१

इंसानियत का मिसाली नमूना :–

संयम व शिष्टाचार, त्याग व तपस्या, न्याय व शौर्य, सूझ बूझ व सच्चाई के यह बेहतरीन नमूने चारों ख़लीफा और सहाबा की जीवनी में इतने अधिक मिलते हैं कि यदि उन्हें कोई विद्वान एकत्र करे तो मानव चरित्र चित्रण का एक अति उत्तम संकलन तैयार हो जाय। किन्तु खेद है कि हम इस विशिष्ट वर्ग की भरपूर तस्वीर किताबों में नहीं पाते। फिर भी कुछ एक व्यक्तियों की कुछ झलक अलंकरित भाषा में किताबों में सुरक्षित है। क्योंकि अरब प्राचीन समय से अपनी अभिव्यक्ति, जादूबयानी और सजीव चित्रण के लिए विख्यात रह चुके हैं। इनमें से एक चित्रण हज़रत अली (रज़ी०) का है। यह इतना सजीव और प्रभावशाली है कि विश्व साहित्य के बेहतरीन नमूनों में शामिल करने योग्य है।

एक समय अमीर माविया ने हज़रत अली के पुराने मित्र ज़र्रार से हज़रत अली का गुणगान करने को कहा तो उन्होंने कहा:–

"बेशक वह बड़े साहसी और ठोस शारीरिक गठन के मालिक थे। आपकी बात निर्णायक और आप का फैसला न्यायसंगत होता। आप के रोम रोम से ज्ञान का सोता उबलता था, आपको दुनिया और उसके बनाव सिंगार से अरुचि रहती थी। रात की तनहाई और अन्धेरा आपको बहुत प्रिय था। खुदा की क़सम आप बहुत रोने वाले और चिन्तनशील

१. तब्री– ४ – पृष्ठ २०३–२०४)

थे। आप अपनी हथेली को पलट कर अपने आपको सम्बोधित करते और आत्ममनन करते। आपको मोटा झोटा कपड़ा और रूखा सूखा खाना पसन्द था। वह हम में हमारी ही तरह रहते थे। जब हम कोई बात पूछते तो सहर्ष उत्तर देते। और जब हम उनके पास आते तो कुशल पूछने में पहल करते। आप हमारे निमंत्रण को स्वीकार करते। हमारे यहाँ आते। लेकिन उनके रोब के मारे हम बातचीत न करते। मुस्कराते तो उनके दाँत मोतियों की लड़ी मालूम होते। वह दीनदारों का आदर करते और गरीबों से मुहब्बत रखते थे। कोई प्रभावशाली व्यक्ति उनसे किसी ग़लत काम की उम्मीद भी नहीं कर सकता था और न कमज़ोर आदमी उनके न्याय से वंचित रह सकता था।

मैं खुदा को गवाह बना कर कहता हूँ कि मैंने उन्हें कभी कभी इस हाल में भी देखा है कि रात ढल चुकी है, और तारे डूबने लगे हैं और आप अपनी ड्योढ़ी में माथा पकड़े, साँप काटे हुए व्यक्ति की तरह बेचैन हैं, और किसी दुखिया की तरह रो रहे हैं। और कह रहे हैं, "ऐ ! दुनिया, क्या तू मुझे निशाना बनाना चाहती है और मेरे लिए बन संवर कर आयी है ? दूर हो, दूर हो, और किसी को धोखा दे, मैं तेरे भुलावे में नहीं आने को। तेरी उम्र छोटी, तेरी माया तुच्छ, तेरा ख़तरा बहुत भारी। आह ! सफ़र का सामान कम, सफ़र लम्बा और रास्ता डरावना है।" १

पहला इस्लामी समाज :–

हज़रत मुहम्मदसल्ल०के प्रयासों से उनकी शिक्षा दीक्षा के फलस्वरूप बना यह मानव समाज जिसे आपकी दीक्षा ने

---

१. सुफ़्फ़तुल सफ़वा – इब्न जौज़ी

कुन्दन बना दिया था, मानवता के इतिहास में उत्कृष्ट मानव समाज था जो हर प्रकार से परिपूर्ण था। इस सोसाइटी का परिचय अब्दुल्ला बिन मसूद ने संक्षिप्त किन्तु व्यापक अलंकरित भाषा में इस प्रकार कराया है, "वह लोग तमाम लोगों में पवित्रतम हृदय, गूढ़तम ज्ञान और अत्यन्त सरल स्वभाव वाले थे जिन्हें अल्लाह ने अपने नबी की संगत और धर्म की विजय के लिए चुना था"।

जब इस समाज की तुलना किसी अन्य समाज से की जायेगी तो समग्र रूप से इसका पल्ला भारी होगा और इसके अवगुण इसके गुणों की अपेक्षा अत्यन्त तुच्छ दिखायी देंगे। और इसका नैतिक पक्ष दुर्लभ नज़र आयेगा। विख्यात विद्वान इब्ने तैमिया ने लिखा है :–

"इस उम्मत के बेहतरीन लोग सहाबा हैं, क्योंकि उम्मत में इनसे बढ़कर सच्चाई पर डटा रहने वाला और मतभेद से दूर रहने वाला इनसे बढ़कर कोई और नहीं। इनकी जो थोड़ी सी कमियाँ बताई जाती हैं, यदि उनकी उम्मत के अन्य लोगों से तुलना की जाय तो वह बहुत ही कम दिखाई देंगी। इसी प्रकार जब उम्मत की कोताहियाँ दूसरी क़ौमों की कोताहियों के मुक़ाबले में रखें तो इनका पल्ला भी हल्का नज़र आयेगा। और जो यह ग़लत बयानी करता है, मानो एक सफेद कपड़े के एक काले धब्बे को बड़ा करके दिखाता है। वह दूसरी क़ौमों के काले कपड़े को नहीं देखता ज़िसमें सफेदी नाम मात्र को है। इस प्रकार फैसला कर देना बड़ी अज्ञानता की बात है।" १

---

१. मिनहाजुलसुन्ना–३ पृष्ठ –३२४

हज़रत मोहम्मद (सल्ल०) की रिसालत (पैग़म्बरी) का प्रभाव बाद की पीढ़ियों पर :-

हज़रत मुहम्मद की शिक्षा-दीक्षा का प्रभाव उसी युग तक सीमित न था जिसमें आपका अभ्युदय हुआ, और न उस समाज तक सीमित था जो आपके प्रभाव क्षेत्र में था। यह प्रभाव तो उस चमकते सूरज की तरह था जिसकी रौशनी और गर्मी में खेतियां और फल हर ज़माने और हर जगह में पकते हैं। और जो ऊँचाई से अपनी जीवनदायनी किरनें धरती पर भेजता रहता है, और जिससे हर दूर व नज़दीक की चीज़ लाभान्वित होती है।

अल्लाह और आख़िरत पर ईमान के लिए आपकी दावत (आह्वान), अल्लाह की निगरानी का डर, उसके प्रकोप का भय, उसे रिझाने की लालच, जहन्नम का डर और जन्नत का शौक़, आपकी दुनिया से अनइच्छा और आख़िरत की तलब, जीवन की सादगी, अपने और अपनी सन्तान पर लोगों की प्राथमिकता, अपरिचितों के साथ सद्व्यवहार, संघर्ष और परीक्षा की घड़ी में अपने निकट सम्बन्धियों को आगे बढ़ाना, सदाचरण और शिष्टाचार को बढ़ावा देना, यह सारी बातें एक अजर और अमर विश्वव्यापी पाठशाला के समान थीं जिससे पीढ़ी दर पीढ़ी लोग लाभान्वित होते रहें।

नबी की शिक्षा-दीक्षा से लाभान्वित होने वालों में समय और धरती के बहुत से फ़ासिले हैं। किन्तु इस दूरी के बावजूद उन सब पर छाप आप ही की दीक्षा की दिखाई पड़ती है। यदि उन्हें आपकी दावत, दीक्षा और नमूना प्राप्त न होता और उन पर इस्लाम का एहसान न होता तो

वह बुतों के पुजारी और आचरण में चौपायों की तरह होते हैं। न एक ईश्वर की परिकल्पना होती, न उसका भय, न त्याग व तपस्या होती न उदार चरित्र, न भावनाओं की कसक होती न अच्छे आचरण।

विश्वव्यापी और अमर मोहम्मदी पाठशाला के दो शिष्यों के नमूने :–

इस पाठशाला के शिष्यों में एक सुल्तान सलाहुद्दीन कुर्दी हैं जिन्हें इतिहास में सलाहुद्दीन अय्यूबी के नाम से जाना जाता है, यह अ़रब प्रायद्वीप से दूर और छठी सदी हिज्री में पले बढ़े। यह अ़रब न थे। किन्तु शिक्षा–दीक्षा हज़रत मुहम्मदी वाली थी। सलाहुद्दीन अय्यूबी के बारे में उनके सेक्रेट्री इब शद्दाद कहते हैं :–

"उनकी हुकूमत में क्या कुछ नहीं आया लेकिन मरते समय उनके पास चांदी के कुल ४७ नासिरी दिरहम और एक सोने का सिक्का निकला जिसका वज़न मुझे नहीं मालूम हो सका। मैंने उन्हें एक बार बैतुल मुक़द्दस में शिष्ट मंडल के बीच देखा। वह दमिश्क जाने की तैयारी में थे। लेकिन उनके ख़ज़ाने में इन शिष्ट मंडलों को देने के लिए कुछ न था। मैं इस सम्बन्ध में बात करता रहा। अन्ततः उन्होंने सरकारी ख़ज़ाने की कुछ चीज़ें बेच कर शिष्ट मंडल के लोगों को दे दिया और एक दिरहम भी बाक़ी नहीं बचा।

वह गरीबी में भी उसी प्रकार उदार रहते जैसे खुशहाली में। इसीलिए उनके ख़ज़ानेदार उनसे कुछ चीज़ें छिपाकर आड़े समय के लिए रख लेते थे। क्योंकि उन्हें जब भी किसी वस्तु का ज्ञान हो जाता तो उसे बाहर मंगा लेते। एक बातचीत के दौरान मैंने उन्हें यह कहिते सुना कि लोगों में कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं जो माल को मिट्टी

समझते हैं। मानों यह उनका अपनी ही ओर संकेत था। वह माँगने वाले की आशा से अधिक ही देते थे।"१

इस महान सम्राट की मौत के समय उसके ख़ज़ाने में उसके कफ़न–दफन तक का पैसा न था। इब्ने शद्दाद का बयान है कि:–

"फिर उनके (राजा की) नहलाने और कफ़न की तैयारी होने लगी तो हमें इसकी व्यवस्था इस प्रकार करनी पड़ी कि मामूली चीज़ें भी कर्ज़ से लेना पड़ीं, यहाँ तक कि घास के पोले जो क़ब्र में रखे जाते हैं, क़र्ज़ ही से लिए गये। ज़ुहर की नमाज़ के बाद एक मामूली कपड़े से ढके हुए ताबूत में उनका जनाज़ा लाया गया। कफ़न के तमाम कपड़े क़ाजी ने उपलब्ध कराये थे।"

यूरोपीय लेखक 'स्टैन्ले लैनपूल' अपनी विख्यात पुस्तक 'सलाहुद्दीन' में लिखता है:–

"अगर दुनिया को सलाहुद्दीन की शराफत व सहृदयता और हौसिलामन्दी के उस मामले के अलावा और कुछ न मालूम हो जो उसने बैतुल मुक़द्दस की विजय के समय अपने ईसाई दुश्मनों के साथ किया था, तब भी यह सिद्ध करने के लिए बहुत काफ़ी है कि उसके समय में उत्साह, शौर्य व पुरुषार्थ में कोई आदमी उससे बढ़ा हुआ नहीं था, बल्कि इस मामले में तो वह हर ज़माने के लोगों में भी महान था।"

शक्ति और सामर्थ्य से भरपूर अपनी विशालता व व्यापकता के साथ यह मुहम्मदी प्रभाव इतिहास के प्रत्येक युग में काम करता रहा और बाद के मुसलमानों में भी इसके विचित्र प्रभाव देखने को मिलते हैं। और प्रायः ऐसा हुआ है कि ऐसे लोग किसी धर्मात्मा के हाथ पर मुसलमान हुए और फिर उनकी सन्तान में बादशाह या बादशाह के रूप में परम् भक्त व

१–२ : अल्–नवादिर अल्–सुल्तानिया व अल–मुहासिन, अल–यूसुफिया, लेखक : इब्ने शद्दाद पृष्ठ १३–१४

ऋषि – मुनि पैदा हुए जिनमें अल्लाह के भय, न्याय व सहानुभूति, दया व रहम, सत्यनिष्ठा, और सच्चाई के वह नमूने पाये गये जो अन्यत्र नहीं मिलते।

मैं यहां भारतीय इतिहास से ऐसा एक नमूना प्रस्तुत करता हूँ और इसी पर बस करता हूँ।

गुजरात के बादशाह मुज़फ़्फ़र हलीम (मृत्यु सन् ६३२ हिज्री) और उसके समकालीन, माँडव के राजा महमूद ख़िलजी के बीच पुरानी दुश्मनी थी। महमूद ख़िलजी निरन्तर अतिक्रमण की प्रवृत्ति से गुजरात पर आक्रमण करता था। जवाब में मुज़फ़्फ़र हलीम को अपने देश की रक्षा के लिए जवाबी हमला करना होता था। दुर्भाग्य से महमूद का पतन हुआ। और अपनी शान व शौकत पर गर्व करने वाले इस राजा को एक शरणार्थी की हैसियत से अपने सहृदय पुराने दुश्मन से क्षमा याचना करनी पड़ी क्योंकि उसके राज्य पर उसके मन्त्री मण्डली राय ने क़ब्जा कर लिया था। महमूद को सुल्तान मुज़फ़्फ़र की छत्र–छाया के अतिरिक्त कहीं शरण लेने की जगह नज़र नहीं आई। सुल्तान मुज़फ़्फर ने इस अवसर से लाभ उठाने का कोई प्रयास नहीं किया, और न अपने लाचार व निःहत्थे दुश्मन को कोई ताना दिया। वह अपनी विशाल सेना के साथ माँडव की ओर बढ़ा और उसकी रक्षा के लिए अपनी अखण्डता को दांव पर लगा दिया। उधर से भी फ़ौजें आ गईं और घमासान युद्ध छिड़ गया। लाशों के ढेर लग गये और गली कूचों में खून की नदियां बह गयीं। अन्ततः सुल्तान मुज़फ़्फ़र विजयी हुआ।

सुल्तान मुज़फ़्फ़र के कुछ सलाहकारों ने उसे राय दी कि वह उस उपजाऊ क्षेत्र पर क़ब्ज़ा कर ले। सुल्तान को जब इसका ज्ञान हुआ तो मांडव के राजा महमूद को हुक्म दिया कि उसके फौजियों में से किसी को शहर में न जाने दे। महमूद ने सुल्तान मुज़फ़्फ़र से किले में कुछ देर ठहरने को कहा किन्तु सुल्तान ने इसे सधन्यवाद अस्वीकार कर दिया। और अपनी फौज़ों को अपने ठिकानों पर वापसी का हुक्म दे दिया। सुल्तान ने महमूद से कहा मैं तो इस मुल्क में सिर्फ अल्लाह की रज़ा और उसके आदेशों का पालन करने आया था। अब मेरा यह उद्देश्य पूरा हो गया। और अल्लाह ने मुझे, आप को और इस्लाम को सुर्ख़रू किया। मैंने अपने साथियों से ऐसी बातें सुनीं जिन पर मैं क्रियाशील होता तो मेरा सब किया धरा बेकार जाता इसके लिये मैं आपके प्रति आभारी हूँ कि आपने मुझे यह सुअवसर प्रदान कियाऔर आप इस सत्कर्म के कारण बने। अब मैं अपने देश वापस जा रहा हूँ। क्योंकि यहां ठहर कर मैं अपने कर्म को नष्ट नहीं करना चाहता, और न नेकी के साथ बदी को मिलाना चाहता हूँ। बादशाह के यह कहते ही उसकी सेना वापस लौट पड़ी।

मुज़फ़्फ़र के मान्डव विजय करने के बाद जब वह शहर में दाख़िल हुआ तो महमूद अपने मित्र मुज़फ़्फ़र को अपना शहर दिखाने के लिए सैर सपाटे पर निकला। मांडव शहर सुन्दरता और सजावट सुन्दरियों और बान्दियों का एक 'मीना बाज़ार' बना हुआ था।

सुल्तान मुज़फ़्फ़र सर झुकाये नज़रें नीची किये हुए था। महमूद ने अपने इस शर्मीले दोस्त से बान्दियों के मध्य से गुजरते हुए कहा, "श्रीमान जी, क्या बात है ? आप न सर उठाते हैं न इस दृश्य को देखते हैं ?" सुल्तान ने कहा, "महमूद ! मेरे लिए यह जायज़ नहीं। अल्लाह का फरमान है :–

अनुवाद : "मोमिनों से कहिये कि अपनी निगाहें नीची रखें"।

(सूरः नूर–३०)

महमूद ने कहा कि वह मेरी बांदियाँ हैं, और मैं आपका गुलाम हूँ जिस पर आप का बड़ा एहसान है, इसलिए वह दोहरे तरीके से आपकी बांदियाँ है। मुज़फ़्फ़र को यह तर्क सन्तुष्ट न कर सका। उसे विश्वास था कि अल्लाह ने जिसे हराम किया है उसे कोई हलाल नहीं कर सकता (अर्थात् वर्जित को ग्राहय नहीं बना सकता)।

इस प्रकार योगी बादशाह मुज़फ़्फ़र ने अपनी शालीनता व शराफ़त और उच्च इस्लामी आचरण का नमूना प्रस्तुत किया। इन उच्च नैतिक मूल्यों पर वह आजीवन अग्रसर रहा। मुज़फ़्फ़र के पूर्वज दो तीन पीढ़ी पहले भारत के गैर मुस्लिम नायक बिरादरी के थे। मुज़फ़्फ़र ने यह शालीनता और संयम् मुहम्मदी पाठशाला ही से सीखा था।

इस अमर पाठशाला की हर युग और हर क़ौम में कारगुज़ारी :–

इस पाठशाला के कितने सपूत चारों ओर और हर युग में फैले हुये हैं और उनकी महान कृतियां मानव जीवन के हर क्षेत्र में बिखरी हुई हैं। इस पाठशाला की दीक्षा की दमक कभी तारिक के शौर्य, मोहम्मद बिन क़ासिम के उत्साह और मूसा बिन नुसैर के हौसिले के पर्दे में चमका, कभी इमाम अबू हनीफ़ा व इमाम शाफ़ई की प्रखर बुद्धि के रूप में प्रकट हुआ, कभी इमाम मालिक व इमाम हँबल के धैर्य व साहस के रूप में ज़ाहिर हुआ। कभी नूरूद्दीन जंगी की सहृदयता के रूप में कभी सलाहुद्दीन के दृढ़ संकल्प और निरन्तर प्रयास के रूप में सामने आया। कभी इमाम ग़ज़ाली की उत्कृष्टता बनकर कभी अब्दुल क़ादिर जीलानी की साधना बन कर दिलों का मरहम बना। कभी इब्नेजौज़ी की तासीर बना, कभी मुहम्मद फातेह की तलवार कभी महमूद ग़ज़नवी का अभियान, कभी निज़ामुद्दीन औलिया का प्रेम बना, कभी फ़िरोज़ शाह ख़िलजी के उच्च विचार, कभी इब्ने तैमिया के विशाल ज्ञान के रूप में प्रकट हुआ। कभी शेर शाह सूरी की सूझ बूझ बन कर और कभी औरंगज़ेब का पक्का इरादा बन कर सामने आया। कभी शरफुद्दीन यहिया मुनेरी के परमज्ञान और कभी मुजद्दिद अल्फि सानी की लेखिनी कनकर, कभी शेख़ मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब की दावत बन कर उभरा और कभी शाह वली उल्ला की हिकमत बन कर और कभी उनके बाद के आने वाले समाज सुधारक व धर्मात्माओं की सेवा बन कर।

यह तमाम उत्कृष्टतायें हज़रत मोहम्मद स० के अभ्युदय से प्रारम्भ होती हैं और आगे चल कर अपनी चरम सीमा को पहुंचती है। इस युग में मानवता की उत्कृष्ट सम्भावनाओं को उभरने का अवसर मिला, इनसे लाभ उठाने और काम लेने वाले लोग मिलने लगे। यह मदरसा अद्वितीय व्यक्तियों को जन्म देता रहा, और प्रभु की इच्छा से अपने प्रतिफल से मानवता की झोली भरता रहा है। दुनिया के लिए हमेशा हमेश को हज़रत मुहम्मद स० की यह सबसे बड़ी देन है और मानवता पर आपका सबसे बड़ा एहसान है।